मनोज दास

रसौली पुरुष

रसौली पुरुष

मनोज दास

रसौली-पुरुष

मूल लेखक

मनोज दास

अनुवादक

कुमार हसन

पल्लव प्रकाशन, दिल्ली

RASOLI PURUSH
BY
MANOJ DAS

मूल्य : 30.00 रुपया/संस्करण : प्रथम/प्रकाशन वर्ष : 1988
मुद्रक : हरिकृष्ण प्रिंटर्स, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली-32
पुस्तक बंध : गौतम बुक बाईण्डर्स, विश्वासनगर, दिल्ली-32
प्रकाशक : पल्लव प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली-110006

रसौली पुरुष

मनोज दास

मनोज दास की उन पात्रों के नाम, जो कहीं
कभी भी नहीं रहे, मगर जो हर समय हर
जगह मौजूद रहे हैं……

कुमार हसन

कहानी क्रम :

रसौली पुरुष

एक

—पर्दा थोड़ा-सा हट गया था। मिस मेरिलीन दिखलाई पड़ने लगीं। उसकी गदराई गुलाबी काया में किसी भी समय मुस्कान का सूरज चमक सकता है, ऐसा मालूम पड़ रहा था।

शर्माजी के चेहरे पर मगर उसका कोई नामोनिशान तक न था। वे वैसे ही बैठे थे गुमसुम, चिंतित। उनके चेहरे से गहरी उदासी टपक रही थी।

—क्या मैं अन्दर आ सकती हूं? कहती हुई मिस मेरिलीन हंसती-संकुचाती हुई अन्दर आ गईं। शर्माजी के सामने आकर बैठ गईं। शर्माजी को जिस बात का अंदेसा था आखिर वही हुआ। बैठते ही मिस मेरिलीन के हाथ आगे बढ़े। वह उनके सिर के ठीक ऊपर उबल पड़ी रसौली को सहलाने लगीं।

शर्माजी ने ठंडी आह भरी। फिर अपने हुलसते दिल को संबोधित कर अपने आपसे कहने लगे—इससे तू क्यों हुलसने लगा? इसमें खुशी मनाने जैसी बात आखिर क्या है। मूर्ख! तू इस खूबसूरत मार्कीन लड़की का प्यार पाने से तो रहा। इसका प्यार तेरे लिए नहीं; तेरे सिर के ऊपर गुम्मड़-सी उबल पड़ी इस अबुआ के लिए ही है। शर्मा जी ने बड़े निर्दयता के साथ अपने दिल को झंझोड़ते हुए अपने आप से कहा।

—मिस्टर शर्मा। आपके लिए एक खुशखबरी लेकर आई हूं। सुनते ही बस मचलने लग जाओगे। बताऊं? पर नहीं, मैं नहीं बताती जाओ। डॉक्टर साहब खुद ही बताएंगे तो अच्छा रहेगा। यह गौरव उनको ही मिलना चाहिए। क्यों डॉक्टर साहब, ठीक है न? ओह, मैं कितनी उत्ते-

जित हुई जा रही हूं ! मैंने क्लिनिक में पूरे पांच साल काम किया है । अब भी वहीं करती हूं । मगर इन पांच सालों में कभी भी आप जैसे किसी खास महत्वपूर्ण मरीज से मिलने का सौभाग्य नहीं हुआ । आप सचमुच बहुत ही दिलचस्प आदमी हैं मिस्टर शर्मा । कहती हुई मिस मेरिलीन उठ बैठीं । फिर तितली की तरह उनके चारों ओर मंडराने लगीं ।

—खास महत्वपूर्ण, दिलचस्प ! लड़की मजाक करती है, करने दो । क्या फर्क पड़ता है ? इस तरह के मज़ाक तो उन्होंने जीवन भर झेले हैं । पहले-पहल उन्हें क्रोध आता था । रसौली, अबुआ एक कुदरती चीज होती है । भगवान की देन । किसीका हाथ का खेल नहीं । उन्होंने अपनी इच्छा से उसे सिर पर नहीं उगाया । न ही वह उनका चरित्र का दारोमदार है—वह समझाना चाहते थे । मगर बाद में तंग आकर उस प्रयास को भी छोड़ दिया था । छोड़ो । क्या धरा है इन फिज़ूल की बातों में ? जो उनके बस का रोग नही, उसके बारे में माथापच्ची करने से क्या फायदा ? फिर मिस्टर शर्मा अपने कार्य में पूरी तरह डूब गए थे—रूपलाल टैक्सटाइल कम्पनी के एक अकाउंटेंट होने के नाते उनका कार्यभार भी बहुत था, जो उन्हें हर समय उलझाए रखने के लिए काफी था ।

उनकी रसौली सिर पर जितनी बढ़ने लगी थी, वह उतने ही कर्तव्य-निष्ठ होते चले गए थे । रसौली के साथ-साथ उन्होंने और भी बहुत-सा कार्यभार ढोया है । रसौली ज्यों-ज्यों बढ़ती गई थी, उनका कार्यभार भी उतना बढ़ता गया था । सौ रुपये में नौकरी का श्रीगणेश हुआ था—अब बढ़ते-बढ़ते वह नौ सौ तक पहुंच चुका है । और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि कम्पनी की तरफ से अमरीका की एक बहुत ही बड़ी और विख्यात क्लिनिक में उनका रसौली का अस्त्रोपचार होना भी तै पाया है । कम्पनी की तरफ से तमाम तैयारियां हो चुकी हैं । हालांकि यहां अमरीका आने के बाद कम्पनी की बहुत-सी निर्यात समस्याओं को भी उन्हें सुलझाना पड़ा है । तो उससे भी क्या फर्क पड़ता है आखिर ?

—क्यों मिस्टर शर्मा, इस रसौली से छुटकारा पा जाने के बाद आप हमें भुला तो नहीं देंगे न ? मिस मेरिलिन एक दिलकश नज़र फेंकती हुई इठलाकर हंसने लगी थीं उनकी ओर देखकर ।

—भूल जाऊं ? शर्माजी मन-ही-मन कह उठे—लड़की फिर से मज़ाक पर उतर आई लगती है ? ऐसी लड़कियों को भला कोई कभी भूल सकता है ?

—हां, हां, भूल जाएंगे। मुझे। डॉक्टर साहब को, हमारा इस क्लिनिक को। मगर हम कभी आपको भुला नहीं पाएंगे। इस संस्थान के इतिहास के पृष्ठों पर आपका नाम सदा सुनहरे अक्षरों में लिखा रहेगा मिस्टर शर्मा।

मेरिलीन स्वभाव से ही कुछ अधिक बातूनी किस्म की लड़की है। बहुत ही मधुर। मगर आज जैसे अलजब्रा की रटी रटाई फार्मूले की तरह रहस्यमय भाषा में इससे पूर्व उसने कभी गप्पें नहीं हांका थीं। शर्माजी सीधा होकर बैठ गए।

—गुड मार्निंग मिस्टर शर्मा। कहिए, कैसे हैं ? डॉक्टर हार्डस्टोन ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

—मार्निंग डॉक्टर ! कुछ घबराए से उतावलेपन के साथ शर्माजी ने डॉक्टर का स्वागत किया—आइए, आइए…तशरीफ रखिए।

डॉक्टर हार्डस्टोन ने अंदर प्रवेश किया। फिर शर्मा के सिर के निकट खड़ा हो कुछ सोचने लगे। वह काफी सकुचाए से लगते थे। शर्माजी कंसाईबाड़े की ओर ले जाते हुए मेमने की तरह घबराहट में डॉक्टर की ओर तकने लगे। कल सुबह होते ही यह स्पेशलिस्ट डॉक्टर उनके बचपन से प्यार से पाली यह रसौली जड़ से काट फेंकेगा।

—अगर आपको कोई एतराज न हो तो…

डॉक्टर हार्डस्टोन ने अपने संगमरमर जैसे चिकने-चुपड़े गंजे सिर के काल्पनिक बालों के बीच अंगुलियां फिराते हुए जानबूझकर ही वाक्य को अधूरा छोड़ दिया था।

—एतराज करने-न-करने से अब क्या होने-हवाने वाला है डॉक्टर। ऑपरेशन के बाद शायद बच न पाऊं, यही न ? शर्माजी ने अपने भर्राये हुए स्वर को यथासंभव संतुलित करने की कोशिश करते हुए कहा—जो होने वाला है होगा, होनी को कौन टाल सकता है भला ? ठीक है, कोई बात नहीं, लाइए मैं कागज पर यथानियम दस्तखत किए देता हूं। ताकि

बाद में आप पर किसी किस्म की जिम्मेदारी न रहे। आप परेशानी में न पड़ें।

यह सुनते ही मेरिलीन खिलखिलाकर हंस पड़ीं। डॉक्टर हार्डस्टोन भी हंसने लगे। मगर उनका हंसना बहुत ही संतुलित था। ठीक सोने की वजन करने जैसी। फिर वह कहने लगे—अरे नहीं, यह बात नहीं है मिस्टर शर्मा ऐसी बात बिल्कुल ही नहीं है। आप हम पर पूरी तरह भरोसा रख सकते हैं। हम निर्विघ्न ही रसौली को निकाल देंगे। आपकी अमूल्य जिंदगी का थोड़ा-सा भी भाग को इससे कोई नुकशान नहीं पहुंचेगा। मैं दरअसल आपसे यह पूछना चाहता था कि क्या आप दो-तीन दिन और रुक नहीं सकते ? कोई अधिक दिनों तक भी आपको इंतजार करना नहीं पड़ेगा। बस दो या चार दिन। बस। आपकी कम्पनी हालांकि ढेर सारी फॉरन एक्सचेंज आय कर लेती है। मगर यहां अमरीका में रहते हुए आप भी अगर कुछ दिनों के लिए निजी तौर पर कुछ बना लें तो इससे बढ़कर खुशी की बात क्या हो सकती है ?

—मैं समझा नहीं डॉक्टर···आप कहना क्या चाहते हैं ?

—ओह ! तो मिस मेरिलीन ने आपसे कुछ नहीं बताया। अच्छा, अच्छा तो दरअसल मिस्टर शर्मा, बात यह है कि आप बहुत ही भाग्यशाली हैं। यह बात तो बस कल ही पता चला है कि आपकी रसौली दुनिया की बृहत्तम रसौलियों में से एक है। उन्नीसवीं सदी में आबिसिनिया के एक रईस की रसौली ने अब तक दुनियां में स्थापित तमाम रिकार्डों को तोड़ा था। वह रसौली विश्व का एक अचंभा था। मगर मिस्टर शर्मा, आपकी रसौली उससे भी कहीं एक वर्ग इंच बड़ी है। आपने उनके स्थापित रिकार्ड को तोड़ा है। आपके इस रिकार्ड को भविष्य में भी कभी कोई तोड़ पाएगा, यह विश्वास ही नहीं होता।

शर्माजी आंख फाड़कर डॉक्टर हार्डस्टोन को देखते हुए और कुछ तनकर बैठ गए।

—आपको एक मरीज के रूप में हमारे यहां पाकर हम सब वाकई बहुत ही गर्वित हैं। यह तो हमारा सौभाग्य है जो आप यहां पधारे। डॉक्टर ने फिर से अपने सोने की तोल जैसे नपे तुले चौकन्ना मुस्कान

बिखराते हुए कहा—इस तरह से हंसने के लिए डॉक्टर काफी माहिर लगते हैं।

—आइए, अब असल बात पर आते हैं। तो मिस्टर शर्मा आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि एक विशिष्ट टेलिविजन कम्पनी ने आपके लिए एक प्रस्ताव रखा है। आप अगर अनुमति दें तो वे आपको देशभर के टेलिविजन पर "लाइव टैलिकास्ट" फीचर के रूप में प्रस्तुत करने के लिए तैयार हैं। इसके पारिश्रमिक के रूप में वे आपको एक काफी मोटी रकम देंगे। वैसे मेरे ख्याल से, प्रस्ताव कोई बुरा नहीं लगता, उसे स्वीकार कर लेना ही लाभप्रद तथा बुद्धिमानी होगी। वे आपको पहले पहल तीन हजार डॉलर देने की पेशकश कर रहे थे, मगर मैंने साफ कह दिया कि, देखिए साहब, यह भी भला कोई रकम हुई, इतने में तो आपको एक सामान्य से सामान्य आदमी मिल जाएगा ? आप टेलिविजन वाले बार-बार हिंदुस्तान की बाढ़, अकाल आदि दिखाते-दिखाते यह भूल गए हो कि हमारे मिस्टर शर्मा साहब निजामों के देश में से रहे हैं। वह खुद भी लख-पति हैं। कोई ऐरेगैरे नत्थू खैरे नहीं। उनको क्या पड़ी है कि तीन हजार डॉलर के लिए तुम्हारे लाखों दर्शकों के सामने अपने रसौली का नुमाइश करता फिरें, भई, यह कोई बात हुई ? फिर उन्होंने सात हजार तक देने को राज़ी हुए। देखिए मिस्टर शर्मा, अन्यथा न लें, वगैरह इसके काम भी नहीं चलता। अपने आपको प्रतिष्ठित करने के लिए बहुत से तरीके अप-नाने पड़ते हैं। हमारे यहां के हिसाब से भी सात हजार डॉलर कोई मामूली रकम नहीं होती। आपकी रसौली का आविष्कर्ता के रूप में मुझे भी उतनी ही रकम मिलेगी।

पूरी बात समझने के लिए मिस्टर शर्मा को कुछ समय लगा। "सात-हजार डॉलर" यह बात पहले उनके गले और फिर वहां से अटकता-अटकता दिल में पहुंची। और वहां पहुंचते ही वह एक तेज धड़कन में बदल गई। शर्माजी का दिल जोर-जोर से बल्लियों उछलने लगा—'सात हजार डॉलर।'

दुनिया की वृहत्तम रसौली !

सात हजार डॉलर !!

अमरीकी व्यवसाय संस्थानों की अपार धनराशि तथा उनकी दिलेरी के बारे में शर्माजी अपरिचित नहीं थे। इसलिए इतनी बड़ी रकम के बारे में सुनकर भी उन्हें कोई विशेष अचरज नहीं हुआ। मगर अपनी उस करामाती रसौली का अचानक आविष्कार हो जाने भर से ही वह चमत्कृत थे। बिल्कुल ही अभिभूत।

—डॉक्टर, आप तो जानते ही हैं, जब कि मैं अपनी रसौली को आपके सुदक्ष हाथों सौंप चुका हूं तो इस बारे में मुझसे पूछना क्या ? आप जो उचित समझें वही होगा। न जाने कितने वर्षों से इस रसौली को ढोता फिर रहा हूं - आज अगर वह बड़ा होकर दो-चार पैसे आमदनी करने लायक हो गया है तो इसमें मुझे आपत्ति भी क्या हो सकती है ?

दो

दो दिन बाद, मिस मेरिलीन की देखरेख में सज-संवरकर डॉक्टर हार्डस्टोन के साथ मिस्टर शर्मा भी यथासमय टेलिविजन स्टुडियो में जा उपस्थित हुए।

प्रोड्यूसर तथा उनके सहायक उन्हें आदर के साथ अन्दर लिवा ले गए।

—आइए, आइए मिस्टर शर्मा, ग्रीनरूम में चलते हैं। प्रोड्यूसर उन्हें राह बताते हुए आगे-आगे चलने लगे। वे अत्याधुनिक कोरीडर से होते हुए आगे गुजरने लगे। कॉरीडर की दोनों ओर टेलिविजन के अन्य कर्मचारी उन्हें ससम्मान देखते हुए आदर के साथ खड़े थे। उनके बीच से गुजरते हुए मिस्टर शर्मा ने पाया कि रसौली को लेकर उनमें जो कड़ुवाहट तथा हीन भावना भर गई थी, वह जीवन में आज पहली बार धुल गई है। इस बोझ के अचानक उतर जाने से शर्माजी ने अपने आपको काफी हल्का महसूस करने लगे। वह प्रसन्नता के साथ आगे बढ़ने लगे।

ग्रीनरूम के अंदर उन्हें एक आरामदेह कुर्सी पर आदर पूर्वक बिठाया गया। दो हंसमुख लड़कियां बहुत ही करीने से उनकी रसौली पर पाउडर पफ् करने लगीं—"वर्ना तेज रोशनी में आपकी अद्वितीय रसौली किसी बन्दरगाह की लाइट-टावर की तरह नजर आने लगेगी।" उन्होंने मुस्कराते हुए प्यार के साथ मिस्टर शर्मा को समझाया।

मिस्टर शर्मा अचानक कुछ घबराने लगे। लोगों से उन्हें सदा ही भय लगता है। अकेले में जो आदमी सभ्य, शालीन तथा हमदर्द लगता है, वही भीड़ की चपेट में आते ही अचानक बेहद ढीठ, बेहूदा, विवेक विहीन और कामचोर साबित होता है। हिंदुस्तान में पिक्चर, थियेटर जाना वह लगभग छोड़ चुके थे। मध्यांतर होते ही चनाचूर चबाते हुए उनकी रसौली का मखौल उड़ाया जाता। तरह-तरह के छींटे कसे जाते। इससे उन्हें काफी घबराहट, दु:ख और क्षोभ होती। मगर शर्माजी विवश थे। कर भी क्या सकते थे आखिर ?

फीचर प्रोडयुसर शायद उनका भावांतर ताड़ गए और कहने लगे—मिस्टर शर्मा, आपने पहले शायद कभी किसी टी० वी० या फिल्म में काम नहीं किया ? पांच-दस लोगों के बीच भी अगर खड़ा होकर कुछ कहना पड़े, तो भी उसकी प्रतिक्रिया के बारे में सचेत रहना पड़ता है। मगर इससे आपको कोई दिक्कत या किसी तरह की घबराहट नहीं होनी चाहिए। आपको अनगिनत लोग देखेंगे, वह तो ठीक है, मगर आप उनकी पहुंच के बहुत दूर ही होंगे।

लाखों की तादाद में स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, आज उन्हें देखने को उतावले हो रहे हैं, यह खयाल आते ही मिस्टर शर्मा ठठाकर हंस पड़े।

—आपको थोड़ा-सा मुस्कराते हुए बैठे रहना है। जो कुछ कहना है वह मुझे ही बोलना है। आप बस बैठे-बैठे मुस्कराते रहिएगा। डॉक्टर हार्डस्टोन ने उन्हें स्टुडियो की ओर ले जाते हुए कहा था।

—मिस्टर शर्मा, आप महान हैं। आपके ऊपर अभी अमरीका की लाखों बेकरार विस्मित नजरें टिकी हुई हैं। आपको गर्वित होना चाहिए। करीब दर्जन भर फ्लड्लाईट्स के नीचे उनसे हाथ मिलाकर कुर्सी पर बैठने को इशारा करते हुए एक सजीले नौजवान ने कहा। शर्मा जी दिल

खोलकर हंसना चाहते ही थे कि अचानक उनकी नजर सामने की स्क्रीन पर पड़ गई। स्क्रीन पर उनका डॉक्टर हार्डस्टोन तथा उस सजीले युवक की छायाएं थिरक रही थीं, टेलीविजन पर कार्यक्रम आरंभ हो चुका था।

बाद के सात मिनट तक उन्हें सिर्फ अपनी रसौली को डॉक्टर हार्डस्टोन के अधीन छोड़ निश्चित हो बैठे रहने तथा सामने के पर्दे पर अपना झिलमिलाते चित्र देखते रहने के सिवा और कोई काम नहीं था। डॉक्टर हार्डस्टोन तथा उस सजीले युवक चईनफिट के बीच प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम सिलसिलेवार चलता रहा था। रसौली का इतिहास, आकार प्रकार-भेद तथा युगों से इन रसौलियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण के बारे में डॉक्टर हार्डस्टोन विस्तारपूर्वक बताने लगे। पारंपरिक मान्यता तथा सामाजिक दृष्टिकोणों असंबद्धता तथा फर्क भी उनके वक्तव्य का एक खास मुद्दा रहा था।

"किसी अज्ञात रहस्यमय कारणवश : नई टिस्सुओं का गुड़मुड़ाकर सिर पर प्राकृतिक तौर पर गुमड़ बनने को ही रसौली कहा जाता है। डॉक्टर हार्डस्टोन अपनी कीमती पेन से रसौली को टुकटुकाते हुए कहे जा रहे थे।

—अज्ञात ! रहस्यमय !

शर्माजी को झुरझुरी हो आयी।

—शरीर तथा जीवन प्रक्रिया में रसौली की आवश्यकता, प्रभाव, उपयोग और भूमिका क्या है। आज तक इसका पता नहीं चल पाया। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारे शारीरिक संगठन या विकास के लिए प्रकृति जिन कायदे-कानूनों का उपयोग करती है, वह शायद हर समय हमारे व्यवहारिक धारणाओं तथा खयालों के बीच सीमित नहीं है। या फिर प्रकृति के कुछ ऐसे भी कायदे-कानून रहे हैं, जिसके कार्य के बारे में आज तक हम अंधकार में रहे हैं। तमाम विज्ञान जगत को इस असमाधित प्रश्नों के उद्देश्य के बारे में मिस्टर शर्मा की युगांतकारी रसौली आज फिर से एक बार सचेत कर रही है।

शर्माजी ठहाका लगाकर हंसने लगे थे। उनकी रसौली युगांतकारी है। समूचे विज्ञान जगत को किसी रहस्यमय परंतु मूल्यवान तथ्य के बारे

में सचेत कर रही है।

शर्माजी अप्रत्याशित ठहाकों से डॉक्टर हार्डस्टोन कुछ पल के लिए चकित हो उठे थे। मगर वह चईनफिट, छोकरा बड़ा चालाक निकला। कार्यक्रम का सूत्र टूटने के पहले ही उसने बहुत ही चालाकी के साथ उसे बचा ले गया—डॉक्टर हार्डस्टोन तथा प्रिय ऑडियेंस, मिस्टर शर्मा का यह हंसना बिल्कुल ही समयानुकूल तथा तात्पर्यपूर्ण है। क्यों है न ? मुझे तो ऐसा लगता है कि यह गंभीर चिंताप्रसूत हास्य वस्तुतः विज्ञान जगत की अपरिणित वयः के ऊपर उनकी रसौली का ही विद्रूपात्मक व्यंग्य है। क्या आप इस विषय पर कुछ कहना चाहेंगे डॉक्टर।

—आपका विश्लेषण काफी हद तक यथार्थ तथा महत्वपूर्ण है मिस्टर चईनफिट, मेरी अपनी भी राय यही रही है। मगर रसौली के कारण के विषय में रसौली-विशेषज्ञ एकदम अंधकार में हैं, ऐसा कहना गलत होगा। इस बारे में वैज्ञानिकों ने काफी हद तक खोज किया है। सफलता भी मिली है। पर पूर्ण सफलता नहीं मिली, उस क्षेत्र में अभी भी खोज जारी है। यह सच है, रसौली दो प्रकार की होती हैं। एक है झूठी रसौली या ननिओप्लास्टिक और दूसरी है प्राकृतिक रसौली या निओप्लाजम। ननिओप्लास्टिक रसौली के कारणों के बारे ने हम बहुत कुछ जान चुके हैं। मगर यह निओप्लाजम् आज तक भी एक अजीब गोरख धंधा रहा है। यह स्वीकार करने में हमें कोई हिचक नहीं, मिस्टर शर्मा निओप्लाजम् के ही अधिकारी हैं। इस तरह की रसौलियों का विकास बहुतायत तथा हर जगह पाया जाता है। याने इसका विकास अपरिसीमित तथा सार्वभौम होता है, आई मीन ऑनरिष्ट्रेंड एण्ड ऑटोनामस।

शर्माजी ने रसौली के ऊपर हाथ फेरा। पेन से टुकटुकाकर डॉक्टर उसे अपना निजी दौलत समझ सकता है, मगर यह तो उनका बिल्कुल अपना है। अमरीका के अनगिनत सज्जन और महिलायें इस विषय पर सचेत न हों, यह सोचकर उन्होंने और एक बार रसौली के ऊपर हाथ फेरा।

कार्यक्रम के शेष भाग में डॉक्टर और चईनफिट दोनों ने वृहत्तम रसौली के निर्माता के रूप में शर्माजी का अभिनंदन किया। फिर उनसे

हाथ मिलाते हुए कहा—आप सचमुच अपने देश के गौरव हैं मिस्टर शर्मा, देश को आप पर नाज होनी चाहिए।

देशवासी का गर्व ? गौरव ? मगर किसी ने पहचाना उन्हें ? अज्ञात, रहस्यमय, युगांतकारी, सार्वभौम—इन सब शब्दों को छोड़ भी दें तो कम-से-कम हिंदुस्तान के छप्पन करोड़ सिरों में से उनके ही अकेले सिर को चुनकर कुदरत ने जो एक विशेष परीक्षण चलाया है, इतना ही सोच सके, ऐसा था कोई अपने देश में ?

लौटते समय स्टुडियो के दरवाजे पर पहुंचते ही कुछ लोगों की भीड़ ने उन्हें आ घेरा। जल्लाद जैसा दिखाई देने वाले कुछ सस्त्र लोगों ने उनका रास्ता रोक लिया। कुछ अपेक्षतया तेज आलोक रेखा से वह बिंधने लगे। रोशनी के इस तरह अचानक हमले ने उनकी आंखों को चकाचौंध कर दिया। शर्माजी ने घबरा कर आंखें मूंद लिया।

—यह भला कौन-सा तरीका है सज्जनों से भेंट करने का ? आंखें खोलते ही शर्माजी ने घबराहट के साथ पूछा।

—कोई बात नहीं मिस्टर शर्मा। ये सब पत्रकार हैं। इनके पास यह कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं बल्कि फोटो खीचने का कैमरा हैं। पत्रकार लोग ऐसी खास घटनाओं की फोटो लेते ही हैं। डॉक्टर हार्डस्टोन ने उन्हें समझाते हुए कहा।

शर्माजी कुछ पल तो सकपका गए फिर सकुचाते हुए पूछा—तो क्या ये लोग भी इसके लिए पैसे देंगे ?

यह पूछते ही अपनी चतुराई को भांप कर मिस्टर शर्मा चमत्कृत होने लगे।

—नहीं मिस्टर शर्मा, ये लोग कोई पैसे नहीं देंगे। इनके रुपए देने का कोई सवाल ही नहीं उठता। फिलहाल आप समाचार पत्रों के लिए एक खास खबर बन चुके हैं। आम लोगों के शिक्षा तथा मनोविनोद के लिए आपका फोटो लेना तथा समाचार पत्रों में उसे छापना उनका अधिकार होता है। तो मिस्टर शर्मा, मैं आपको बताना भूल ही गया था कि 'खिलाड़ी' नामक एक पापुलर मैगजीन आपका एक विशेष साक्षात्कार लेना चाहता है। इसके एवज वह आपको एक मोटी रकम देने को भी तैयार है।

तीन

—ओह, मैं कितनी उत्तेजित हो रही हूं।

मिस मेरिलीन दौड़ती हुई आकर शर्माजी के गले में बांहें डालकर झूल गई।

—आपको पता है? टेलीविजन पर आपका फीचर देखती हुई मैं जैसे सांस लेना ही भूल गई थी। सच मिस्टर शर्मा, आप कितने ग्लेमरस नजर आ रहे थे स्क्रीन पर? जैसे सिर पर ताज पहने ग्रेंड मोघल ही रहे हों! आपका वैसे ही पोज में बैठना और फिर बीच-बीच में वैसे ही मंद-मंद मुस्कराने के लिए आपको जिस किसी ने भी डायरेक्सन दिया हो, उसका भी मैं अपनी ओर से अभिनंदन करती हूं।

—अरे, मुझे डायरेक्ट कौन करेगा भला? मैं तो खुद बखुद वैसे बैठा था। मुस्करा रहा था।

—सच, आप एक जीनियस हैं मिस्टर शर्मा, बहुत बड़े जीनियस। वैसे मुस्कराने के लिए आपको पहले कभी कोई पूर्वाभ्यास करना भी पड़ा होगा?

—क्या कह रही हो मिस, मुस्कान के लिए क्या कोई पूर्वाभ्यास की आवश्यकता होती है? अरे कतई नहीं, मैं वैसे ही मुस्करा दिया था यक-ब-यक शर्माजी ने अपनत्व भरे लहजे में कहा।

—मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है मिस्टर शर्मा। इतना सजीव और सटीक मुस्कान की बस्स···वह भी बगैर किसी पूर्वाभास के···मिस मेरिलीन की आंखें आश्चर्य से फैल गई।

उस दिन। रात को शर्मा जी ने अपनी डायरी में लिखा :

—आज मेरे लिए एक अविस्मरणीय दिन है। टेलीविजन के पर्दे पर उतर कर बगैर किसी के निर्देशन के मैं मन खोलकर हंसा था। अब लगता है कि मुझे उस तरह से हंसने के लिए जैसे किसी अज्ञात शक्ति ने प्रेरित किया था। जैसे कि कवि, शायर लोग आम तौर पर कविताई करने की प्रेरणा पाते हैं। बुद्धिमती है कन्या मिस मेरिलीन जो इस बात का सही सही अनुमान लगा लिए हैं। अनुमान ही नहीं

वह इस बात को सही ढंग से पकड़ भी लिया हैं। उसका कहना है कि मेरे इस तरह से हंसने के पीछे मेरी प्रखर प्रतिभा का भी हाथ है। या कि वह मेरी प्रतिभा ही थी, जिसने मुझे इतने नायाब ढंग से हंसने के लायक बनाया। वर्ना मैं इस तरह हंस भी कैसे पाया होता ?

अगले दिन निर्धारित समय पर एक खूबसूरत लड़की ने आकर मिस्टर शर्मा के साथ हाथ मिलाया।

—मैं मिसेज यंगहजबेंड हूं। 'खिलाड़ी' की स्टॉफ रिपोर्टर और आप हैं मिस ची ची। उसने और एक युवती की ओर हाथ से इशारा करती हुई कहा।

—मिस ची ची क्या कोई टाईटल···

—बस, वह उतना ही हैं। मिस ची ची !

—सिर्फ मिस ची ची। अच्छा आ···समझदारी भरी लहजे से मिस्टर शर्मा ने कहा।

—अच्छा तो, आप लोग अब अपना काम आरंभ कर सकती हैं। शर्माजी ने दोनों महिलाओं को सोफा दिखाते हुए खुद बैठ गए।

मिसेज यंगहजबेंड ने टेपरिकार्डर ऑन किया।

—मिस्टर शर्मा, आपके इस वृहत्तम रसौली के वैज्ञानिक महत्व की ओर हमारा कोई खास दिलचस्पी नहीं है। उस विषय पर डॉक्टर हार्डस्टोन ने टी० वी० पर जितना बताया है, उतना काफी है। आपके रसौली के मानवीय तथा साईकोलॉजिकल पक्ष की ओर ही हमारी दिलचस्पी है। अच्छा मिस्टर शर्मा, आप एक दिन इस तरह विश्व विख्यात हो जाएंगे, इस बारे में आपने पहले कभी सोचा था ? यानी कि आपकी कोई पूर्ण धारणा इस विषय पर रही हो तो उस बारे में आप कुछ बताने का कष्ट···?

विश्व विख्यात ! शर्माजी के अंदर से एक टीस सी उठने लगी। जहां तक हो सके वह दुनिया के अंतराल में ही रहना ज्यादा पसंद करते थे। यहां तक की एक दो बार उन्होंने आत्महत्या करने की भी कोशिश की थी। हालांकि हर बार उस तरह की मानसिक उथल-पुथल के शेष में

उन्होंने अनुभव किया है कि जीवन के लिए उनकी समत्वबोध, अटैचमेंट कितनी गहरी है। फिर उनका सिर अपने सामने ही शर्म से बार-बार झुक गया है।

—मिस्टर शर्मा ! हिंदुस्तानी मनीषियां बातचीत के प्रारंभ में ही आमतौर पर कुछ-कुछ शर्मीला नजर आते हैं, मगर हमारा यह अनुभव रहा है कि उनकी जुबान अगर एक बार खुल जाए तो वे वाक्‌दौड़ में ओलंपिक का रिकार्ड भी तोड़ सकते हैं। मिस्टर शर्मा, इसमें शर्माने की क्या बात है ? आप भी कोशिश करिए, जरूर सफल होंगे। प्लीज···

शर्मा जी सीधा तनकर बैठ गए। उनकी होंठों में एक मुस्कान की नई लहर तैर गई—खास तौर से बदला लेने का मौका मिलने पर जिस तरह की हंसी चेहरे पर खिल उठती है···वैसी ही एक मुस्कान।

—मिसेज यंगहजबैंड, हमारे देश में एक कहावत प्रसिद्ध है—'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'। मेरी यह रसौली भी कुछ-कुछ वैसी ही है···ओह, बिरवा क्या होता है आप जानती हैं ? तुलसी ? बहुत ही पवित्र चीज ? तुलसी माता। नहीं जानतीं न ? बस यही तो दिक्कत है। आप लोग सहज ही इसे समझ नहीं पाएंगे। मैं एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनूंगा, यह बात मेरे जन्म के कुछ दिन के अंदर ही हमारे गांव के बूढ़े-बच्चे सभी को पता चल गया था। मैं बचपन में सोया करता था, तो मेरे सिर के ऊपर एक नागराज फन फैलाये डोलता रहता था। गांववाले नागराज को फन फहराते अकसर देखा करते थे। नागराज क्या होता है जानती हैं ? बस यही तो रोना है, आप लोग कुछ समझते ही नहीं। नाग-राज याने बहुत-बहुत बड़ा सर्प। जहरीला। इतना बड़ा फन···

मिसेज यंगहजबैंड की आंखें आश्चर्य से फैलती जा रही थीं। शर्माजी ठठाकर हंस पड़े—ह···ह···ह···ह···हमारे देश में लोगों का विश्वास है की नागराज जिस किसी के भी सिर के ऊपर फन फैलाएगा, एक न एक दिन वह जरूर राजा बनेगा। यह राजयोग का लक्षण है। मैं भी होता, जरूर राजा बना होता। मगर यह दुर्भाग्य की बात है कि हिंदुस्तान आजाद होते ही रजवाड़े उन्मूल कर दिए गए। तो मेरा वह राज भाग इस रसौली में रूपांतरित हो गया। यही है मेरा रसौली का मूल रहस्य···

—मिस्टर शर्मा। आपने तो हमारी जुबान वंद ही कर दी। आपकी यह रसौली कोई मामूली रसौली नही है। मिसेज यंगहजबेंड शर्माजी की ओर सिगरेट केस बढ़ाते हुए बोली।

—सॉरी, मैं धुम्रपान नहीं करता। इस रसौली को बचाए रखने के लिए बहुत से परहेज, सयम रखना पड़ता है। शर्माजी ने तनिक झल्लाए हुए लहजे में कहा।

—हमारे पाठक वर्ग तो वाकई चमत्कृत हो जाएंगे मिस्टर शर्मा आपकी यह नायाब कहानी पढ़कर, आपकी यह रसौली, ऐसा लगता है कि जैसे एक आधिभौतिक व्यापार हो।

—हां हां, क्यों नही; अवश्य ही है।

—धन्यवाद मिस्टर शर्मा। आपके इस सहयोग के लिए हम आपके आभारी हैं, अब हम आपकी रसौली की एक फोटो लेना चाहते हैं।

—अरे हां, हां, क्यों नहीं, शौक से लीजिए।

मगर यह क्या ? देखते ही देखते शर्माजी की आंखें फटी की फटी रह गईं। अभी तक सिर्फ सिगरेट फूंकती, चुपचाप बैठी मिस चीची उठकर यह क्या हरकत करने लग गई ? अपने शरीर की ऊपरी भाग से एक एक कर कपड़े क्यों उतारने लगी है ? ओफफो…

शर्माजी ने घबराहट तथा झल्लाहट से आंखें मूंद लीं। लड़की का दिमाग तो कहीं चल नहीं गया ? मगर उन्होने अनुभव किया कि मिस चीची उनके पीछे पहुंचकर उनके ऊपर अपने को पसार झूककर खड़ी हो गई हैं।

रसौली के आधिभौतिकता के बारे में इतनी सारी बातें सुनने के बाव-जूद भी ये लोग उनके साथ इस तरह के अनाचार, अशिष्टता करने की हिम्मत कहां से पायीं ? विचित्र है।

शर्माजी ने अचानक उठ बैठने का सोचा। मगर इससे मिस ची ची को आघात लगेगा, यह सोचकर वह बौखलाए हुए बैठे बैठे ही अपनी नाराज़ी जाहिर करने लगे।

—नहीं नहीं, मिसेज यंगहजबेंड, यह आप क्या करा रही हैं ? यह सब नहीं चलेगा। फोटो लेने हैं तो लीजिए, मगर ऐसी अशिष्टता के साथ

ही क्यों ?

—प्लीज मिस्टर शर्मा। आप आंखें खोलकर देखिए तो सही। मिस चीची के शरीर पर अशिष्टता नामक कोई चीज है ही नहीं। आप तो ख्वामखां परेशान हुए जा रहे हैं। मिस ची ची सूक्ष्म कला की एक जीती-जागती मिसाल हैं। बल्कि एक सजीव सूक्ष्मकला। दरअसल बात यह है कि हमारे एडिटर साहब ने आपके फोटो-फीचर के लिए एक सुन्दर सा हैडींग सोच रखा है। आपके टॉप के साथ मिस ची ची की टॉपलैस पोजिसन का समन्वय बहुत ही जंचेगा। उस हैडींग की जर्नालिस्टिक एट्रेक्सन बहुत ही व्यापक है ··

—हि···हि···हि···फिर और एक फैक्ट के बारे में भी मुझे मजबूर होकर बतानी पड़ रही है। मिस्टर शर्मा, मिस ची ची के साथ इस पोज में अगर आपका फोटो छपेगा तो आपके फीचर के ऊपर सेंट परसेंट लोग शर्तीया तौर पर आकर्षित होंगे। खास तौर से यह चित्र ही उनका आकर्षण का मुख्य बिन्दु होगा। मगर इसके विपरीत यदि केवल आपका ही फोटो छपेगा तो आपकी इस रसौली का महत्व निर्विवाद होते हुए भी फीचर सिर्फ साठ परसेंट लोगों को ही आकर्षित कर पाएगा। हमारे निर्मूल सर्वेक्षण के आधार पर ही यह आंकड़े तैयार किए गए हैं। सोचिए मिस्टर शर्मा, इसमें आपकी निजी प्रतिष्ठा तथा आपके देश के गौरव का प्रश्न भी शामिल है। रसौली के क्षेत्र में आपने जो विश्व रिकार्ड तोड़ा है, उसके बारे में यथार्थ तौर पर अधिक से अधिक प्रचार हो, क्या आप यह नहीं चाहेंगे मिस्टर शर्मा ?

मिस्टर शर्मा ने आंखें झपकाते हुए कहा—अगर मेरे प्रिय देश, मेरी मातृभूमि का गौरव का प्रश्न इसके साथ जुड़ा है तो फिर मुझे कोई एतराज नहीं है। यकीनन मैं कोई दखल अंदाजी भी करना पसद नहीं करूंगा। मगर मिसेज यंगहजबेंड, एक बात है, आप कृपया मुझे आंखें खोलने के लिए मत कहें। प्लीज···

मिसेज यंगहजबेंड ने अबकी बार काफी हमदर्दी के साथ कहा—मिस्टर शर्मा, आप यदि आंखें बन्द किए बैठेंगे तो उस हालत में हमें आपकी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कैप्सन के नीचे फिर एक लाइन

जोड़नी पड़ेगी। उससे कैप्शन का मौलिक चटपटापन नष्ट होगा। देखिये मिस्टर शर्मा, आप एक विवेकी पुरुष हैं। मिस चीची जैसी एक जीवंत वास्तविकता को ठुकराना आपको शोभा नहीं देता। हकीकत को आपको स्वीकार कर लेनी चाहिए। बल्कि उल्टे आपको खुश होना चाहिए। साक्षात्कार के लिए हम आपको जो रकम दे रहे हैं, फोटो के लिए आपको उससे भी अधिक रकम दी जाएगी। हालांकि हमारे निर्देशन के मुताबिक फोटो खींची जाए, वर्ना नहीं, आयम् सॉरी मिस्टर शर्मा।

शर्माजी आंखें खोल खुश नजर आने की भरसक कोशिश करने लगे। फोटो लिए गए।

फिर मिस ची ची चुपचाप अपने कपड़े उठाकर पहनने लगीं। उसकी गदराये होठों पर बच्चों जैसी एक भोली, मासूम मुस्कान थिरक रही थी। शर्माजी ने शर्माते-सकुचाते हुए उन्हें विदा किया।

चार

अगले दिन "खिलाड़ी" के मुख पृष्ठ पर फोटो फीचर छपा था। शर्माजी की नजर सुबह—सुबह ही उसकी ओर चली गई। एक अपूर्ण बैकग्राउंड में रसौली की अवस्थिति देखकर अब उन्हें समझ में आया कि रसौली सिर्फ महत्वपूर्ण ही नहीं सलोनी और सुकुमारी भी है। उन्हें प्रसन्नता हुई।

—गुड मार्निंग मिस्टर शर्मा। कहती हुई मिस मेरिलीन अन्दर चली आईं।

—मार्निंग मार्निंग मिस···आज का 'खिलाड़ी' देखा आपने ? चहकते हुए शर्मा ने पूछा।

मेरिलीन कोई उत्तर दिए बिना खिड़की के पर्दे हटाने में ही लगी रहीं।

—मेरिलीन !

—मेरिलीन नहीं। मिस मेरिलीन।

शर्माजी घबरा गए। फिर परिस्थिति को सहज करने के हेतु "खिलाड़ी" का वह अंक उसकी ओर बढ़ा दिया—यह रहा···

—देख चुकी हूं। गंभीर होकर मिस मेरिलीन ने उत्तर दिया।

शर्माजी का चेहरा फक पड़ गया। वह घबराकर रसौली के ऊपर हाथ फेरने लगे। मिस मेरिलीन अचानक घूमकर उनके सम्मुख आकर खड़ी हो गईं—सुनिये मिस्टर शर्मा। यह सब अखबार निहायत भौंडे और फालतू होते हैं। इनका कोई—दायित्वबोध नहीं होता। दूसरों को उछालना ही इनके काम हैं। आपको एक निहायत ही बेबस हालत में डालकर मनमानी की गई। फोटो ली गई। सिर्फ इतना ही नहीं। रिपोर्ट में लिखा है—आपकी रसौली आधिभौतिक शक्ति से भरपूर है। आपने इसे पाने के लिए गहरी साधना की। काफी संयम रखा। तभी आपको सिद्धी मिली। रसौली का विकास हुआ। इसका परिणाम क्या हुआ जानते हैं? पिछले एक घंटे के अन्दर चार चार फोन आ चुके हैं—क्या मिस्टर शर्मा ज्योतिष भी हैं? हाथ देखते हैं? उनकी रसौली से कोई आधिभौतिक ज्योति फूटती है?" रसौली और अध्यात्मवाद" पर 'बियर्स ऑनली क्लब' में पेंतिस मिनट के एक भाषण के लिए क्या वे तैयार होंगे इत्यादि···

—भाषण? मैं भाषण दूंगा? हे···हे···हे···हे···अरे भई, मैं तो किसी से कुछ भी कहता-वहता नहीं। मगर जब दसवीं कक्षा में पढ़ता था तब "नर बनाम नारी" शीर्षक एक डिबेट कंपटिशन में भाग लेकर हाई-स्कूल भर में प्रथम आया था। उस समय यह रसौली बहुत ही छोटी थी।

शर्माजी उछाह के साथ कहे जा रहे थे। मगर मेरिलीन के गंभीर चेहरे पर नजर पड़ते ही वह अचानक रुक गये।

—मैं वह बात कह नहीं रही हूं। मिस मेरिलीन बोलीं।

—मैं बस यूं ही बातों बातों में बहक गया था, अन्यथा यह प्रथम आने की बात मैं विशेष तौर से कभी कहा नहीं करता। शर्माजी ने झिझकते हुए कहा।

—मेरा आशय कतई यह नहीं है मिस्टर शर्मा। मेरा कहना है कि

आप अभी, बल्कि इसी समय फैसला कर लें की आप अपनी इस रसौली को किस तरह इस्तेमाल करना चाहते हैं, इसका उपयोग किसी भले काम के लिए हो या बुरे काम के लिए। फिर आपको यह भी तै कर लेना चाहिए कि इसका उपयोग किस तरह से हो। आई मीन ऑनेस्ट या डिज-ऑनेस्ट वे से हो। साफ लफ्जों मे मिस मेरिलीन ने कहा।

—मतलब ?

—मतलब यह कि आपके सामने तीन रास्ते खुलते हैं। पहला, आप अगर चाहें तो आपकी रसौली के साथ संयम साधना, योग इत्यादि बहुत से आधिभौतिक चीजों को जोड़ इस देश के लोगों को अध्यात्म-दर्शन का हवाला दे सकते हैं, फिर उन्हें शिष्य बनाकर चंद दिनों में ही लखपति बन सकते हैं। दूसरा, विश्व के वृहत्तम रसौली का अधिकारी बनाकर भाग्य ने आपको खुद व खुद जितनी प्रसिद्धि दिलायी है उसे ही अपनाकर जितना हो सकता है उतना लाभवान बन सकते हैं, अन्यथा तीसरा और शेष रास्ता यह बचता है कि पूर्व निर्धारित योजनानुसार आप रसोली का ऑपरेशन करवाकर स्वदेश लौट जाएँ ··इनमें से आपको कोई भी एक राह चुननी है। मिस मेरिलीन ने कहा।

—मुझे रसौली का ऑपरेशन भी करवाना है, मैं तो कुछ दिन हुए यह बात बिल्कुल भूल ही गया था मिस मेरिलीन।

—मैं जानती हूं। इसके लिए मैं आपको दोष नहीं देती। आपके जगह पर होने से मेरी भी यही हालत होती। मगर मिस्टर शर्मा, अगर साफ-साफ कहूं तो आपकी तरह मेरी इतनी आत्मविस्मृति नहीं होती। मैं अपनी रसौली की न्यायोचित मूल्य जरूर वसूलती मगर किसी सनसनी पसन्द अखबार के ग्लेमर के झांसे मे आकर किसी नंगी वेश्य. के साथ कभी भी फोटो नहीं लेती।

—वेश्या ? क्या कह रही हो मेरिलीन ? मिस चीची एक वेश्या है ?

—तो फिर क्या आपने उसे सती समझ रखा था !

···मेरा खयाल था ··याने की मैं सोचता था···सूक्ष्मकला जैसी कोई···नहीं-नहीं···मैं···दरअसल···मेरा खयाल···मैंने कुछ भी नहीं सोचा था।

—आपने सोचा था कि आपकी रसौली की महानता पर आकर्षित हो जीवन में पहली बार के लिए वह आप पर अचानक उतावली होकर मर मिटी थी, यही न ?

शर्माजी ने सूखे होठों पर जुबान फिराते हुए कुछ कहने की कोशिश करने लगे। मगर उन्होंने फिर चुप्पी साध लिया। वह कोई भी स्पष्टि-करण देने में असफल हो चुप हो गए थे।

—मिस्टर शर्मा, डॉक्टर हार्डस्टोन कह रहे थे, आपकी रसौली आपके सर के ऊपर सिर्फ एक अनचाहा बोझ बनकर रहने के अलावा आपका और कोई भी नुकसान कर नहीं सकता। इसलिये आप उसकी ऑपरेशन की योजना को कुछ दिन के लिए मुल्तवी रखकर कुछ रकम भी बना सकते हैं। मगर वह भी किसी सत्मार्ग से···

मिस्टर शर्मा रुमाल से आंखें पोंछने लगे।

—तुमने मेरी आंखें खोल दी हैं। तुम्हारे निकट मैं आजीवन आभारी रहूंगा मिस मेरिलीन।

—मिस मेरिलीन नहीं !

—जी। तो···

—सिर्फ मेरिलीन कहिये, मेरिलीन···कहती हुई मेरिलीन करीब खिसक आई थी। फिर हतवाक् मिस्टर शर्मा के चेहरे को दोनों हाथों में भर कर, ऊपर उठाकर बहुत ही प्यार से बोलीं—बेचारा मासूम, भोला काला आदमी।

पांच

महानगर की एक अपेक्षतया जनविरल इलाके में मेरिलीन की सहा-यता से एक छोटा-सा कॉटेज किराये पर लेकर मिस्टर शर्मा वहां रहने लगे थे।

संयुक्त राज्य अमरीका की मेडिकल एसोसिएशन ने एक एकल प्रदर्शनी के लिए शर्माजी की रसौली को बुक कर लिया था। एसोसिएशन बिल्डीं की एक प्रशस्त कक्ष में प्रत्यत करीब चार घंटे उन्हें बैठना पड़ता था।

—तो आपही हार्डस्टोन्स रसौली के सत्वाधिकारी हैं? एक रसौली-विशेषज्ञ ने पहले ही दिन शर्माजी से हाथ मिलाते हुए कहा।

—आपका खयाल गलत है मिस्टर। मेरी रसौली सिर्फ मेरी ही है। हार्डस्टोन का नहीं। यह मेरी निजी, वैयक्तिक चीज है। समझे? शर्माजी ने कुछ झुंझलाते हुए कहा था।

—सॉरी, विशेषज्ञ के होठों पर एक मुस्कान तैर गयी थी—ओह, आप शायद नहीं जानते की विज्ञान जगत में आपकी रसौली "डॉक्टर-हार्डस्टोन्स रसौली" का नाम से प्रसिद्धि पा चुकी है। जैसे की वैज्ञानिक हॉली की आविष्कृत कॉमेट का नाम "हॉलीस कॉमेट' रखा गया है। वैसे ही डॉ० हार्डस्टोन की आविष्कृत रसौली का नाम "डॉ० हॉलिस रसौली" रखा गया है।

प्रतिदिन रसौली विशेषज्ञ डॉक्टर लोग आ आकर अपने ज्ञानवृद्धि के लिए उनकी रसौली का तरह तरह से परीक्षण करते। विभिन्न प्रोफेसरों के नेतृत्व में अघ्येताओं की टीम आकर रसौली का पर्यवेक्षण किया करते।

शर्माजी एक आरामदेह इजी चेयर में बैठे तरह-तरह की पत्र-पत्रिकाओं में अपने को डूबाए रहते। कभी कभी छात्र-छात्राओं के विचित्र वेष भूषा देखकर, उनमें से जो बाद में काम आ सकता हैं, उसे मन ही मन याद रखने की कोशिश करते। कभी-कभार कोई छात्र या छात्रा उनका ऑटोग्राफ भी लेते।

रसौली विशेषज्ञ डॉक्टर ने इस बीच उन्हें एक डीनर में भी आमंत्रित किया था। "इनसाईक्लोपायडिया ऑफ वांडर्स" के प्रकाशक तथा डिसनेलैंड" के अधिकारियों ने भी शर्माजी को आमंत्रित किया था। फिर अनुबंध पत्रों पर भी हस्ताक्षर हो गए थे।

हर दिन शाम को मिस मेरिलीन के साथ कुछेक घंटों के लिए इधर-उधर टहलने की भी उनकी इच्छा होती। मगर मेरिलीन का कहना था

कि जहां तक हो सके वह कम ही बाहर निकला करें। इससे उनका महत्व तथा उन्हें देखने को लोगों की ललक भी बने रहेगी। इसी से वह अपनी इच्छा को भी दमन कर जाते। मेरिलीन कहती—

—चित्र तारिकाएं जिस कारण से आम लोगों के बीच अधिक आवाज ही नहीं रखते, क्योंकि इससे उनके चेहरे का व्यवसायिक मूल्य घट जाएगा, लोगों में उनका आकर्षण कम हो जाएगा, इसी से आप भी बाहर अधिक निकला न करें। यह आपके बिजनेस के लिए ठीक रहेगा। आपका बाहर निकलने का मतलब है आपकी रसौली भी हवाखोरी करेगी। तो फिर लोगों में आपका यह नायाब रसौली का महत्व क्या रह जाएगा मिस्टर शर्मा ?

शर्मा जी ने उस रात अपनी डायरी में लिखा :

> —महाकाल क्या कर नहीं सकता ? उसके निकट कौन-सा कार्य असाध्य है ? क्या कुछ ऐसा भी है जो उसका बस का रोग नहीं ? वह सब कर सकता है। मुझे आज चित्रतारकाओं के पर्याय में गिना जा रहा है—यही सनेही, ज्ञानवती मेरिलीन का कहना है।

ठीक उसी समय कॉलबेल बज उठा। शर्माजी ने उठकर दरवाजा खोला। एक ऊंचे, छरहरे बदन के सज्जन ने उन्हें अभिवादन करते हुए पूछा—क्या मैं रसौलीवाले शर्माजी से मिल सकता हूं ?

—बुद्धू कहीं का ! तो फिर अपने आंखों के सामने देख किसे रहा है ? मिस्टर शर्मा ने अपनी मातृभाषा में बड़बड़ाते हुए कहा—हां, हां, क्यों नहीं, आइए, आइए, अन्दर तशरीफ रखिए ? फिर आगन्तुक सज्जन को सोफे पर बैठने की इशारा कर अपनी रसौली की ओर हाथ लेकर संकेत से बताया। आने वाला सज्जन ने फिर से एक बार सर झुकाकर उन्हें विश करता हुआ बैठ गया।

—आप से मिलकर निहायत ही खुशी हुई। मैं अबाबील टोपी बनाने वाली कंपनी का प्रचार सचिव जॉन डबलडिक हूं। आपके निकट एक प्रस्ताव लेकर आया हूं। तो प्रस्ताव के बारे में बातचीत करने के पहले मैं आपको बता दूं कि कृपया आप मेरी स्पष्टवादिता को अन्यथा न लें। मैं

जरा साफ-साफ कहने का आदी हूं। इसी से पहले ही क्षमा प्रार्थी हूं। मिस्टर शर्मा, आपको लेकर इन दिनों टी० वी०, अखबार, मैडीकों ने यह जो होड़ सा लगा है, यह चंद दिन के लिए ही हैं। कुछ दिनों बाद यह सब चूक जाएगा। तब आप क्या करेंगे। इसके विपरीत हम आपके लिए एक ऐसी ठोस व्यवस्था करना चाहते हैं, जो निश्चय ही दीर्घ स्थायी है, जो कभा भी घटेगा नहीं। बल्कि समय के साथ साथ उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाएगा। आशा है, आप भी इसे जरूर पसंद करेंगे

—आप कहना क्या चाहते हैं ?

—जी हा, जी हां यहा पर हमारा एक भव्य तथा विशाल मुख्य शो रूम है। आपको बस उस शो रूम के बाहर सिर्फ खड़ा रहना है। आपके सर के नाप के मुताबिक हम आपके लिए एक स्पेशल टोपी तैयार करेंगे। जिसका आकार बड़ा होगा। जिससे आपका रसौली भी छुप जाएगा। आपको उसे पहन कर बस शोरूम के बाहर खड़ा रहेना है। जो भी खरीदार आएगा, उसे देखते ही टोपी खोल कर उसे विश करना है। आपके सीने पर सुन्दर अक्षरों में एक वोर्ड होगा—"विश्व की वृहत्तम रसौली को ढंकने वाली टोपियां भी हम बनाते हैं।" मिस्टर शर्मा, आप जितनी बार भी सर झुकाकर खरीदारों को विश करेंगे—हमारा एक कप्यूटर उसका हिसाब करता रहेगा। उसी हिसाब के मुताबिक आपको पैंसे मिलेंगे। यह आपका एलाउस है। सेलेरी अलग होगी।

प्रचार सचिव ने जिस हिसाब का हवाला दिया। शर्माजी ने हिसाब लगाकर देखा की अगर वह दिन में हजार बार भी टोपी उतारें और पहने तो भी हिन्दुस्तान में उनकी सदाशय टैक्सटाईल कम्पनी महीने में जितनी सैंलेरीं देती है, उससे कहीं अधिक रकम वह आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

—मिस्टर शर्मा, मैं आशा करता हू कि हमारा यह प्रस्ताव आपको पसन्द आएगा ?

—ठीक है। मुझे सोच-विचार करने के लिए कुछ घटों के समय चाहिए। मैं आपकी प्रस्ताव पर अच्छी तरह से सोच लेना चाहता हूँ। ताकि आगे चलकर किसी किस्म की दिक्कत न हो। क्या आप मुझे कुछ

घंटों का समय नहीं देंगे ? शर्माजी ने अनुभव किया कि जैसे वे काफी बुद्धि-मान हो गए हैं इस बीच वैसे, मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि मुझे इस बीच और भी ढेर सारे प्रस्ताव मिले हैं। दो-एक संस्थान ने काफी बड़ी रकम की पेशकश की है। मुझे उनके बारे में भी कुछ न कुछ सोचना चाहिए।

—क्या सच ? अबाबील कम्पनी के सचिव ने चौंकते हुए कहा—अगर आपको कोई एतराज न हो तो क्या आप उन संस्थानों का नाम बताना पसन्द करेंगे ?

शर्माजी ठठाकर हंस पड़े—क्या उनका नाम बता देना युक्तियुक्त होगा ? नहीं, नहीं मिस्टर डॉबलडिक, ऐसा करना अनुचित होगा। शिष्टाचार तथा नैतिकता के विरुद्ध। यह असभ्यता मैं कर नहीं पाऊंगा। कृपया अन्यथा न लें। वैसे ही कुछ ट्रेड सीक्रेट्स भी होते हैं।

—ओह, अबाबील के सचिव तनिक ढीले पड़ गए। फिर भी उन्होंने अपनी पैरवी करना जारी रखा—खैर, जो भी हो मिस्टर शर्मा, हमारे तरफ से जो पारिश्रमिक सुझाए गए हैं, उस पर अगर आपको कोई ऐत-राज हो तो आप इस प्रस्ताव को ठुकराने से पहले कृपया फिर से एक बार हमसे पूछने का कष्ट करें।

—ठीक है।

—क्या एक घंटे के अंदर आप हमें इस बारे में बताने की कृपा करेंगे ? दरअसल यह बात है कि मिस्टर शर्मा हमारे मैनेजिंग डायरेक्टर आज रात को अंतर्राष्ट्रीय टोपी कांग्रेस की अध्यक्षता करने के लिए टोक्यो रवाना हो रहे हैं। हमारा उद्देश्य यह रहा है कि कांग्रेस अधिवेशन आरंभ होने के पूर्व ही हम अचानक तौर पर अपना अंतर्राष्ट्रीय प्रचार अभियान शुरु कर दें। और साथ ही यह भी प्रचारित हो जाए कि आप जैसे एक महान व्यक्तित्व भी हमारी अबाबील कंपनी से संबद्ध हो गए हैं। इससे हमारे बिजनेस में काफी असर पड़ेगा। अच्छा, आपके निर्णय का हमें इंतजार होगा, बॉय…

शर्मा जी ने टेलीफोन पर मिस मेरिलीन को सब कुछ बता दिया। मेरिलीन ने कहा—हां, यह एक तरह से ठीक ही समझिए। इसमें मर्यादा भीहै। मगर शर्मा जी एक दिक्कत है—सीने पर यह विज्ञापन लटकाने की

बात कुछ नहीं जंचती। यह हास्यास्पद है। हमें सीने पर विज्ञापन लटकाये नहीं घूमना है। आप उन्हें यह बात अच्छी तरह से समझा दें। दिल, हृदय इनके काम कुछ और ही होते हैं। वे कोई एडवरटाईजिंग बोर्ड नही हुआ करते।

शर्मा जी ने उसी समय जॉन डॉबलडीक से फोन मिलाया—देखिए मिस्टर डॉबलडीक, दूसरे पार्टियां जो रायल्टी बताए हैं, उनसे आपकी बताई हुई रकम काफी हद तक कम ही मालूम पड़ती है।

—आप बेफिक्र रहें मिस्टर शर्मा। इसमें कुछ बढ़ाई भी जा सकती है।

—और आप सीने पर जो साइन बोर्ड लटकाने की बात हमसे कह रहे थे। वह भी हो नहीं पायेगा। दिल, हृदय, सीना, इनके काम कुछ और ही होते हैं।

—कुछ और, याने···

यानी क्या। कुछ स्वतंत्र ही समझिए। दिल, हृदय, सीना इनके काम, महत्व कुछ और ही तरह के हुआ करते हैं। यानी बिल्कुल ही कुछ दूसरे किस्म के। महापुरुषों का कहना है कि यह विज्ञापन बोर्ड लटकाने का खूंटा नही है। इसमें आप बछिया की तरह विज्ञापन को रस्सा बंद नही कर सकते।

—मिस्टर शर्मा, आपको अच्छी तरह पता होगा, और मेरा विश्वास है कि कितने महान सूरमाओं ने अपनी आदर्श की रक्षा के लिए हंसते-मुस्कराते हुए अपने फौलादी सीनों पर बंदूक, तोप, गोला-बारुद झेला है। क्या आप एक साधारण सा विज्ञापन भी झेल नहीं सकते? मिस्टर शर्मा, हिंदुस्तान मरने-मिटने वालों का देश रहा है। हिंदुस्तान के सपूतों ने हंस-हंसकर जिस तरह फांसी के फंदों को गले से लगाया है। उसकी महान परंपरा विश्व में अद्वितीय है। आप एक महान् देश के एक महान् वीर सपूत हैं। आप जैसे शूरवीरों को ऐसी कायरता शोभा नही देती। सुनिए मिस्टर शर्मा, हमारे मैनेजिंग डायरेक्टर अभी-अभी ही फ्लाइट पकड़ने के लिए रवाना होने वाले हैं। टोपी कांग्रेस में अध्यक्षता करने के फौरन बाद उन्हें विश्व के कुछ बड़े-बड़े देशों में, शहरों में तथा विश्वविद्यालयों में

उनका भाषण का कार्यक्रम भी रहा है। आपको यह जान कर खुशी होगी कि आपके देश, हिंदुस्तान की राजधानी नई दिल्ली के विज्ञान-भवन में आयोजित एक सेमिनार में "टोपी और अहिंसावाद" टॉपिक पर भी बोलेंगे। वह यात्रा पर निकल जायें इससे पहले ही मैं आपके बारे में फाइनल कर लेना चाहता हूं।

—वैसे हालत में सहमत होने के अलावा और किया क्या जा सकता है।

—थैंक यू मिस्टर शर्मा। बेरी बेरी थैंक यू। आप से हमें यही अपेक्षा थी। हालांकि फिलहाल हम आपसे द्विवार्षिक कांट्रेक्ट कर रहे हैं। मगर बाद में आपके कार्यकाल में शर्तिया तौर पर वृद्धि की जाएगी। मेडिकल एसोसिएसन के साथ आपका समझौता अवधि शेष होते ही आप हमारे ऑफिस में रिपोर्ट करने का ... करें। बॉय...

शर्मा टेलीफोन क्रेडिल पर रखते न रखते कि फिर से रिंग होने लगी, शर्मा जी ने रिसीवर उठाया—

—आपने उनसे क्या कहा ?

—बस, कहना क्या था। राजी हो गया। सीने पर अगर विज्ञापन लटकानी भी पड़े तो इससे क्या फर्क पड़ता है? अपना देश, मर्यादा, आदर्श की रक्षा के लिए कितने शूरवीरों को अपने सीने पर बंदूक, तोप, गोला-बारूद झेलने पड़े हैं। उसकी तुलना में यह सब तुच्छ हैं। मैं अगर अबाबील टोपी के लिए अपने सीने पर एक साइन बोर्ड झेलूं तो इसमें नुकसान क्या है ?

—मिस्टर शर्मा, गोला-बारूद और विज्ञापन के बीच दिल की और कोई भी भूमिका नहीं होती है क्या ? क्या वह इतना महत्वहीन है ?

—कहां ? होगी तो रहती होगी। जरूर रहती होगी। अरे हां, लो, मैं तो तुम्हें बताना ही भूल गया था—वे कुछ अधिक रकम भी दे रहे हैं।

—मिस्टर शर्मा, एक बात कहूं ?

—हां, हां, क्यों नहीं, शौक से फरमाइए।

—मिस्टर शर्मा आप हृदयहीन हैं।

—सुनो मेरिलीन।

मगर उधर मेरिलीन ने टेलीफोन पटक दिया था। शर्मा ने फिर से मेरिलीन के साथ बात करने की सोची पर हिम्मत ही नहीं हुई उनकी।

छह

"अंतर्राष्ट्रीय टोपी कांग्रेस की शिष्ट मंडली को विश्व की वृहत्तम टोपीधारी का अभिनंदन"—बड़े-बड़े रंगीन तथा सुंदर अक्षरों में लिखे इस विज्ञापन के साथ शर्मा जी का फोटो देश-विदेश के विशिष्ट अखबारों में छपा। फोटो के नीचे अपेक्षतया छोटी हरफों में लिखा था—"विश्व-मानवता की सेवा में अबाबील टोपियां, अबाबील टोपी की सेवा में विश्व की वृहत्तम रसौली।"

बहुरंगा स्पेशल सूट, वा टाई, उसके साथ ही विशालाकार टोपा लगाए अबाबील कंपनी की मुख्य शो रूम में रोजाना पांच-छः घंटे खड़ा हो, हर संभावित खरीददारों को बार बार सिर से टोपी उठा उठा कर सलामी बजाने लगे थे मिस्टर शर्मा। पहले-पहल कुछ दिनों तक उनके सम्मुख आकर उनके साथ हाथ मिलाने के लिए लोगो में होड़ मच गई। क्यू लगने लगा था। खरीदे हुए टोपियों में कुछ मनचले अमिट स्याही में उनके हस्ताक्षर भी लेने लगे थे। शर्मा जी ने जितना सोचा था, उससे कहीं दुगुनी अधिक रकम आमदनी होने लगी थी।

गले में विज्ञापन लटकाए जाने के विरुद्ध मिस मेरिलीन ने कुछ दिन विद्रोह किया। फिर उसे भी वह सहन कर गईं।

मिस मेरिलीन शाम को अपनी क्लिनिक से लौटते समय रास्ते से शर्मा जी को भी अपनी कार में ले आतीं। शर्मा जी खुद ने अपने लिए एक कार लेने के लिए एक दो बार न सोचा हो, ऐसा नही है। मगर मेरिलीन कहती की यह फिजूलखर्चा है। कुछ बचाकर रखना ही बेहतर है। बगैर

कार के भी तो काम चल ही रहा है। फिर इस अनावश्यक खर्च से फायदा क्या ? कुछ जमापूंजी रखो। फिर मेरी कार तो है ही। आपको तो कोई दिक्कत नहीं हो रही न ? फिर कार के लिए इतने उतावले क्यों हुए जा रहे हो ? तुम्हारी जन्मभूमि एक गरीब देश है। यह क्यों भूल रहे हो मिस्टर ? आपकी जमा की हुई पूंजी आगे चलकर काम आएगी।

शर्मा जी का बैंक बैलेंस दिनोंदिन बढ़ता जा रहा था। दिन आनंद से व्यतीत हो रहे थे। बैंक बैलेंस के साथ उनकी खुशहाली भी बढ़ रही थी।

पहले पहल शर्मा जी कभी कभार अपनी माता जी की बातें याद करके गमगीन हो जाते थे। उनका मन गम्भीर अवसाद से भर जाता था। वह बहुत ही दूर हिंदुस्तान में रह रही थीं। मिस्टर शर्मा अखबारों से अपने फोटो काट-काटकर माताजी को भेजा करते थे। मगर मिस चीची के साथ खींचे गए उस सनसनीखेज़ फोटो, जो "खिलाड़ी" में छपा था, उसे भेजने की हिम्मत वह जुटा नहीं पाए थे। फिर भी वह बहुधा सोचा करते कि उनके रसौली मुग्ध युवक-युवतियों को अपने हस्ताक्षर देने का दृश्य देखकर मांजी यहां होतीं तो कितनी प्रसन्न होतीं, तो क्या मां जी को यहां बुला लेना चाहिए ? मां जी आना पसन्द करेंगी यहां ?

मगर ज्यों ज्यों समय बीतता गया, माताजी की यादें धुंधली होती गईं। कभी कभार वह भूले-बिसरे ही उन्हें याद कर लेते। वह भी क्षण भर के लिए। अब उनका मन घर लौटने को न करता। मेरिलीन की साहचर्य का ही यह परिणाम था।

मेरिलीन लौटते समय जब अबाबील कंपनी से उन्हें कार से लेकर आती तो वे सीधा घर नहीं लौटते। दोनों पार्क की एक निर्जन कोने में बहुत देर तक बैठे गप्पें लड़ाते। हिंदुस्तान में शर्मा जी का कोई दोस्त ही न था। बांधवी का तो सवाल ही नहीं उठता। इसी से वह चाहने लगते कि कैसे मेरिलीन के साथ में बैठे वह घंटों व्यतीत कर देते हैं यह बात तमाम दुनियां को मालूम हो जाए तो कितना बेहतर हो। मगर मेरिलीन इसके लिए राजी न होतीं। शर्मा जी की रसौली को वह एक अनमोल जवाहरात के नज़रिए से देखतीं। जहां तक हो सके, उसे वह आम लोगों

की नजर से बचाकर ही रखना चाहती।

शर्माजी की नजरों में मेरिलीन की खूबसूरती दिनोंदिन चढ़ती जा रही थी, वह अधिक सुन्दर लगने लगी थी, इसमें कोई संदेह नही था। मगर वह कैसे और क्यों कर संभव हुआ था, मिस्टर शर्मा सोच ही नही पाते। ऐसा नही कि इस बारे में उन्होंने कभी सोचा ही नही। परन्तु इस बारे में वह ज्यों-ज्यों सोचते जाते, उनकी उलझन बढ़ती ही जाती।

अबाबील कंपनी में करीब एक माह काम करने के बाद, एक दिन जब मिस्टर शर्मा अपने कॉटेज में लौटे तो पाया की एक कीमती ओवरकोट पहने कोई सज्जन उनके कॉटेज के सामने चहलकदमी कर रहे हैं। उनकी टोपी आंखों तक झुकी हुई थी। सिर्फ सुलगता चुरूट और नाक के सिवा उनका शरीर का कोई भी भाग दिखलाई नही पड़ रहा था।

मेरिलीन के कार लेकर फर्राटे से चले जाते ही उस सज्जन ने टोपी को तनिक ऊपर ऊंचा किया। अब उनकी आंखें साफ नजर आ रही थीं। चमकती हुई दो उजली आंखें। उन्होंने आंखों आंखों में ही हंसते हुए शर्माजी से गुडईवनिंग कहा—आप से कुछ जरूरी बातें करनी थी मिस्टर। क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?

—आइए, आइए, इसमें पूछने की क्या बात है। कहते हुए शर्माजी ने आगे बढ़कर गेट खोल दिया। फिर कमरे में आ गए।

ओवरकोट और टोपी खोलते हुए आगंतुक ने फिर से चुरूट-सुलगा कर बैठ गए।

—और सुनाइए ? आपका रसौली का क्या हाल है ? सज्जन ने कश खीचते हुए पूछा।

आगंतुक ने उनकी रसौली से कोई मजाक किया हो, ऐसा तो मालूम नहीं पड़ता। शर्माजी ने मन ही मन कहा।

—मार्कीन संयुक्त राज्य की गुणवान नागरिकों की दिलेरी से मेरी रसौली अच्छी तरह दिन काट रही है जनाब।

फिर कुछ दिन हुए एक नई तरह से विकसित हुई अपने व्यापारिक दृष्टिकोण का सफल प्रयोग करते हुए कहा—

—यों कहिए कि अमरीकावासियो की सेवा करने के उद्देश्य से ही हमने

इसे माथे के ऊपर धारण कर रखा है। वरना इसे धारण करना कोई आसान बात नहीं है।

—अच्छा, अच्छा! आगंतुक ने कुछ विस्मय तथा हमदर्दी जतलाते हुए उत्तर दिया।

—इसके अलावा, आए दिन रोजाना हिंदुस्तान से सैकड़ों तार आने लगे हैं। तारों का बाढ़ ही समझिए। मुझे बार बार याद दिलाई जा रही है कि मातृभूमि के लिए भी मेरे कुछ फर्ज, कुछ कर्त्तव्य होते हैं।

—सच ?

—अरे भाई तो क्या यूं ही कह रहा हूं ? शर्माजी ने उछाह से भरकर कहा—आप शायद नहीं जानते, फिलहाल हिंदुस्तान घोर संकट काल से गुजर रहा है। युवा-आक्रोश, विशृंखला, राजनैतिक उहापोह-पैंतरेबाजी अनाजों की मिलावट···आप ही कहिए मिस्टर, ऐसे संकट बेला में भारत-वासी मेरी मौजुदगी चाहने के सिवा और कर ही क्या सकते हैं। इसमें अस्वाभाविकता ही क्या है ?

—यह सब तो बिलकुल ही वाजिब है मिस्टर शर्मा। इसमें कुछ भी अस्वाभाविकता नहीं है। मगर एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि उन समस्याओं के साथ रसौली का सम्बन्ध क्या है ? हिन्दुस्तान को उन परि-स्थितियों से आपकी रसौली कैसे उबार पाएगी···

शर्माजी इस अनपेक्षित उत्तर से सकपका गए। उनकी आंखों के आगे अंधकार ही अंधकार नज़र आने लगा। मगर उन्होंने अपने आपको संभाल लिया। कुछ दिन पहले अगर शर्माजी से अगर कोई यह सवाल किया होता तो संभव था कि वह मात खा जाते। मगर अब शर्माजी को मात देना कोई आसान बात नहीं रही। वह छूटते ही बोले—

—अरे मिस्टर अजीव आदमी हैं आप भी कुछ समझते ही नहीं। वैसे आपके सवालात अपने जगह ठीक ही है याने बिलकुल ही समयानुकूल। काफी गहरे में पैठे मालूम पड़ रहे हैं। मगर मेरी यह अदना सी रसौली, यद्यपि विश्व में अद्वितीय, अतुलनीय है, मगर हिन्दुस्तान की छप्पन करोड़ लोगों के सामने ऐसा एक सच्चा, पुख्ता रसौली, यह क्या कर सकता है ? ठीक है, ठीक है, वाजिवी तार पर आपका यह पूछना बिलकुल जायज है।

बहुधा बहुत से लोग सवाल कैसे किये जाते हैं, यह न जानते हुए भी ढेरों सवाल पूछ बैठने की अहमक हरकत करने से बाज नहीं आते। आप तो इसका एक खासूलखास व्यतिक्रम नजर आते हैं। वाह···वाह···क्या सवाल पूछा है आपने, बेहतरीन, काबिले तारीफ।

—धन्यवाद मिस्टर शर्मा। आपकी अंतर्दृष्टी का कायल हूं। मेरे सवालों को काफी गहराई से लिया है आपने। आपका परखने का अंदाज निराला है। सो आपका बहुत बहुत धन्यवाद। मैं आपका आभारी हूं, कि मुझे आपने सही तौर पर समझने की कोशिश की। हः···हः···हः···हः··· मैंने थोड़े दिनों के लिए एक पत्र का संपादन भी किया था। मेरी बहनों का कहना है कि अगर मैं वहां पर कुछ दिन और बना रहता तो कब से अमरीका का एक श्रेष्ठ पत्रकार-संपादक बन चुका होता। हेः··· हेः··· हेः···हेः···

आगंतुक को अब शर्माजी का प्रश्नों के उत्तर से कोई मतलब नहीं रहा था। यह बात शर्माजी को भी पता चल चुका था। तब तक वह जवाब देने के मूड में एक रस हो चुके थे। सो उनके लिए अब अधिक समय तक रुकना कतई आसान नहीं रह गया था।

—जब भारत संकट काल से गुजर रहा हो। उस समय मेरे कर्त्तव्य क्या हो सकते हैं, आप इस बारे में जानना चाहते हैं न? तो, सुनिए मिस्टर, भारतवासियों को इस समय मेरी बहुत ही आवश्यकता है। उन्हें मेरा योगदान चाहिए। वैसे, ऐसा सोचना कोई गलत भी नहीं है। वे कोई गलती पर नहीं हैं। उन्हें ऐसा सोचना ही चाहिए। वैसे क्या नहीं हो सकता है? आप ही कहिए, क्या नहीं हो सकता?

—जी हां, जी हां, आपने ठीक कहा है। बिलकुल बजा फरमाया है।

—क्या नहीं हो सकता? सब कुछ हो सकता है। हिंदुस्तान की हतोद्यम निराश, निष्क्रिय युवा समाज को क्या मेरी यह रसौली डंके की चोट पर यह संदेश नही देती की विशाल रोम नगरी एक ही दिन में नहीं बनी थी, कि विश्व का यह जो वृहत्तम रसौली है, यह भी रातोंरात नही उगा। हर काम की सफलता के लिए धीरज की आवश्यता होती है। धीरज।

—बिलकुल ठीक कहा आपने।

—डांवाडोल राजनैतिक परिस्थिति में मेरी रसौली क्या स्थिरता और अटलता के लिए एक उदात्त चुनौती नही हो सकती ?

—चमत्कार‥‥चमत्कार मिस्टर शर्मा, क्यों नही हो सकता। बल्कि अवश्य ही होगा।

—जो लोग सोचा करते हैं कि मिलावट के बिना दौलत बनाई नही जा सकती, जो लोग "मिलावट करो और धन बटोरो" नीति के समर्थक हैं, उन जैसे लोगों के लिए मेरी यह खालिस, पुख्ता, बगैर किसी मिलावट वाली रसौली एक बहुत बड़ी चुनौती है मिस्टर।

—वाह्, वाह्। क्या कहने आपके विशुद्ध ख्यालों के !

—एक ही वाक्य में अगर कही जाए तो इस समय हिन्दुस्तान में मेरी उपस्थिति, याने कि वहां पर मेरा मौजूद रहना विभ्रांत जनता में उनकी आत्मविश्वास को दुबारा वापस लौटा सकती है।

आगंतुक की विचक्षण आंखों में उस समय विस्मित प्रशंसा तथा कुछ कुछ आग्रह के भाव तैरने लगे थे। फिर उन्होंने कहा—

—मिस्टर शर्मा। मैं आपकी भावनाओं की यथार्थता को समझ रहा हूं। आपका देश प्रेम का मैं कायल हूं। मगर आपसे मेरा एक निवेदन है, आप स्वदेश लौटने का प्रोग्राम सिर्फ और छः महीने के लिए मुलतवी कर दें। सिर्फ छः महीने की ही तो बात है।

वैसे, कम से कम अगले पांच वर्ष तक हिन्दुस्तान लौटने की खयाल तो मिस्टर शर्मा ने किया ही नही था। न ही कभी इस बारे में उनका खयाल आया था। पासपोर्ट पर पांच साल के मियाद है। बगैर सैलेरी की पांच की छुट्टी के लिए इस बीच वे रूपलाल टैकसटाईल कम्पनी को अपना दरख्वास्त भी भेज चुके थे। अगर कम्पनी इस पर उन्हें नौकरी से हटा भी देती, तो भी कोई फर्क नही पड़ता। अगला पांच बरस में वह यहां से जितनी दौलत बटोर लेंगे, उससे वह चाहें तो खुद भी एक टैक्सटाईल कम्पनी खड़ी कर सकते हैं।

—छः माह ? छः माह तक आप मुझे मेरी प्रिय मातृभूमि से अलग, दूर रखना चाहते हैं ? माफ करिएगा मिस्टर, आपका आग्रह रख सकूं,

इतनी सामर्थ्य शायद मुझमें नहीं है। मुझे तो ऐसा ही लगता है। यह असंभव है, आप अगर साठ हजार डॉलर दें तो भी शायद नहीं।

—मिस्टर शर्मा, हमारा ख्याल है कि हम शायद आपको साठ हजार डॉलर, शायद इससे भी कहीं अधिक आपको दे सकते हैं।

शर्मा ने किसी तरह अपने आपको रोक लिया। प्रस्ताव को नकारने जैसे सिर हिलाकर नाराजी जाहिर करते हुए कहा—मगर आपका शुभ परिचय? आप हैं कौन? क्या चाहते हैं मुझसे? क्यों चाहते हैं, वह तो मैं अभी तक जान नहीं पाया।

आगंतुक ने कहा—जी हां, जी हां,वह तो मुझे पहले से ही बता देना चाहिए था। क्यों है न? दरअसल बात यह है कि मिस्टर मैं एक विशिष्ट संस्थान की ओर से एक विशेष प्रस्ताव लेकर आपके निकट आया हूं। आप पहले हमको यह वचन दीजिए की अगर हमारा प्रस्ताव आपको पसन्द न आए तो भी कम-से-कम आप इस बात को गुप्त ही रखेंगे।

—ठीक है! अब बताइए।

—अबाबील कंपनी से बातचीत करने के बाद ही मैं आपसे मिल रहा हूं। आपको छः महीने तक छुट्टी देने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। आप तो जानते ही हैं कि हमारे यहां और छः महीना बाद राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होगा। मिस्टर हायना तथा मिस्टर डंबार्ड में तगड़ी रस्साकसी हो रही है। मैं मिस्टर हायना की चुनाव कमेटी का मुख्य सचिव डेविड् स्पाईडर हूं। हमारा आग्रह है कि आप उनके चुनाव प्रचार अभियान में भाग लें।

शर्मा ने जरा हंसकर कहा—मिस्टर हायना का इलेक्सन कैंपेन में भाग लेने का मतलब है उनका अवश्य जीत जाना। इसमें कोई शक नहीं। मिस्टर स्पाईडर आपको शायद पता नहीं कि मैं जब दसवीं में पढ़ता था तो एक बार "नर-बनाम नारो" शीर्षक एक डिबेट कंपीटीशन में भाग लेकर समूचे स्कूल में प्रथम आया था। उस समय रसौली नन्हीं-सी थी। और फिर अभी तो बात ही क्या है? मैं मिस्टर हायना के सपक्ष में बोल-कर तमाम अमरीकनों को उनका कायल कर सकता हूं। यह मेरे दाएं हाथ का खेल है मिस्टर। फिर शर्माजी ने एक भरपूर कहकहा लगाया।

—अरे नहीं, नहीं भाई। आपको भाषण-वाषण की लफड़े में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारे हजारों तालीमयाफ्ता ''''ेटर्स इसके लिए नियुक्त हैं। यह काम उनके जिम्मे हैं। इसके अला॰ अंग्रेजी-उच्चारण में एक कौमी खासियत भी है—जो संयुक्त राज्य के लोगों के गले में शायद न उतरे। शायद इतनी हाई प्रोनाउन्सीयेसन् वे फॉलो न कर सकें। आप हायना कहेंगे तो उन्हें डंबार्ड समझ में आ सकता है। मगर आपने अभी-अभी जो कहकहा लगाया है, हमें वैसे ही कहकहा की सख्त जरूरत है। आपको हमारे लिए सिर्फ कहकहा लगाने हैं। यह भाषा सबकी समझ में आसानी से आ जाएगी।

—अच्छा तो कहकहा लगाने के अलावा मुझे और भी क्या-क्या करना है ?

—कुछ भी नहीं, हम आपको बस थोड़ी-सी कल्पना-शक्ति की सहारे कुछ सजा-संवार देंगे। मूछें फिट कर देंगे, साफ तौर से कहें तो बात यह है कि आपको मिस्टर हायना के प्रतिद्वंदी मिस्टर डंबार्ड की तरह दिखाई देना है।

—इससे लाभ क्या होगा ?

—लाभ बहुत से हैं मिस्टर शर्मा। दरअसल बात कुछ यूं है कि मिस्टर डंबार्ड का सिर मिस्टर हायना के सिर से कुछ बड़ा है। देश में जब चुनाव चल रहा हो तो मतदाताओं के मनस्तात्विक क्रिया-प्रतिक्रियाओं की ओर कुछ अधिक ही ध्यान देना पड़ता है। उनके खयालों के बारे में काफी असरदार खोज करनी पड़ती है, हमारे स्कॉलरों का कहना है कि एक खास तबके मतदाताओं पर मिस्टर डंबार्ड का बड़ा-सा सिर का कुछ असर पड़ सकता है। उस असर को खत्म करने के लिए हमें व्यापक तौर पर तैयारियां करनी होंगी। हम आपके रसौलीया शरीर पर उजले अक्षरों में सिर्फ इतना ही सहज सत्य लिखेंगे—"डबल सिर के मायने डबल अक्ल नहीं होती, दुगूनी सर दुगुनी बुद्धि का निशान नहीं है। जब कहीं पर हमारे चुनाव सभा चल रही हो, तब आप पंडाल पर या हमारे प्रार्थी के पीछे एक ही गाड़ी पर बैठे सिर्फ मंद-मंद मुस्कराते रहेंगे। आपका काम सिर्फ इतना ही होगा।

शर्माजी ने इनकार करते हुए सिर हिला दिया—नहीं-नहीं मिस्टर, मुझे माफ करें, वह सब मुझसे हो नहीं पाएगा। वैसे करना मेरे व्यक्तित्व का अपमान है।

—अपमान! आप यह क्या कह रहे हैं मिस्टर शर्मा? आपके जवाब ने मुझे अचंभे में डाल दिया। जो सर्कस में जोकर बनकर उतरता है, क्या इसे वह अपना व्यक्तित्व का अपमान समझता है? इसके अलावा मिस्टर शर्मा, आप एक विशुद्ध हिन्दुस्तानी हैं। आपने गीता पढ़ी है। आपको यह बताने की कतई आवश्यकता नहीं है कि आपकी रसौली और आपकी आत्मा एक चीज नहीं है। एक रसौलीधारक के नाते आपका जो भी कर्म होगा, क्या वह आपकी आत्मा को स्पर्श कर पाएगी? रही व्यक्तित्व की बात, तो व्यक्तित्व के प्रति अपमान की बात कहां से उठती है? सच कहा जाए तो आपकी रसौली को छोड़ आपका स्वतन्त्र व्यक्तित्व कहां है? मान लीजिए की आपकी रसौली न होती, तो मिस मेरिलीन जैसी खूबसूरत लड़की क्या कभी आपको प्यार कर सकती थी?

किसी जहरीला सांप के ऊपर गलती से अचानक पैर पड़ गया हो, इस तरह से चौंक उठे थे मिस्टर शर्मा।

—मिस मेरिलीन को आप किस तरह से जानते हैं मिस्टर स्पाईडर? फिर यह भी कि वह···वह मुझे चाहती भी है—हालांकि वह मुझे नहीं चाहती; यह तो मैं कह नहीं सकता, मगर आपको यह सब मालूम हुआ कैसे? आपको यह सब बताया किसने?

—मिस्टर शर्मा, आपकी जिन्दगी के हर एक वाकए से हम वाकिफ हैं। हमें सब कुछ पता है। हम किसी के साथ कोई किस्म के कारोबार करने के पहले ही हमारा करेक्टर इनवेस्टिगेशन ब्युरो उस व्यक्ति के बारे में पूरी छानबीन के साथ उसका रिपोर्ट तैयार करता है। इस दौरान उसकी हिस्ट्री भी संग्रह कर ली जाती है।

मिस्टर शर्मा कुछ पल के लिए भौचक्के रह गए, फिर धीरे-धीरे कहने लगे—मिस्टर स्पाईडर, आपसे कुछ और छुपाना अब बेकार है। मैं मिस मेरिलीन से डरता हूं। गले में टोपी कंपनी की बोर्ड लटकाने से नाराज होकर उन्होंने एक बार मुझे "हृदयहीन" कहा था···उस···उस बात से मुझे

गहरी चोट पहुंची थी। मैं काफी दुःखी हुआ था मिस्टर स्पाईडर। मुझे काफी अखरा था।

—मिस्टर शर्मा, मिस मेरिलीन आपको हृदयहीन कह सकती हैं, मगर आपको रसौलीहीन कौन कह सकता है? है कोई माई का लाल? क्या मेरिलीन भी आपके बारे में यह कह पाएंगी? दुनिया का कोई भी स्त्री या पुरुष ऐसा कहने का साहस जुटा नहीं पाएंगे मिस्टर शर्मा!

—जी सच हैं।

—तो फिर हाः···हाः···हाः···

—हाः···हाः···हाः···

इसके बाद की बातचीत बहुत ही संक्षिप्त और मधुर थी। मिस्टर स्पाईडर ने आशातीत मेहनताना देने का वादा किया। इससे पहले कि मेरिलीन की तरफ से कोई अड़चन पैदा हो, उसको ऐसा कोई मौका देने के पहले ही समझौता को पक्का कर लेना उचित समझा मिस्टर शर्मा ने।

मिस्टर स्पाईडर जब कुर्सी छोड़कर चलने लगे तो शर्माजी ने कुछ सकुचाते हुए पूछा—

—अच्छा मिस्टर स्पाईडर, आप अगर बुरा न मानें तो एक बात पूछना चाहता हूं, मिस मेरिलीन मुझे प्यार करती हैं, इस बारे में आपकी ब्यूरो ने जो रिपोर्ट दिया है, उसे कहाँ तक सही माना जा सकता है?

—रिपोर्ट सौ फीसदी सही है मिस्टर शर्मा। पार्क में आप दोनों के बीच जो बातें हुआ करती थीं, टेप कर लिए गए हैं। उस टेप को हमारे ब्युरो ने कंप्युटर पर परीक्षण करके देखा है। कंप्युटर के बताने के मुताबिक जब तक आपकी रसौली सही सलामत है; तब तक उसके प्यार के बारे में आप निश्चिन्त रह सकते हैं।

—तो रसौली को छोड़ अगर मेरा कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व ही न हो तो भी क्या नुकसान है।

—कुछ भी नहीं। आपकी रसौली अमर रहे।

—धन्यवाद मिस्टर स्पाईडर। बहुत-बहुत धन्यवाद।

सात

अगले दिन सुबह मेरिलीन के साथ शर्माजी की भेंट होने के बहुत पहले ही बहुत से अखबारों के प्रातः संस्करण में बॉक्स न्यूज छप चुका था—"राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार मिस्टर हायना के पक्ष में दुनिया की वृहत्तम रसौली।

अबाबोल कम्पनी के शोरूम बन्द होने में अभी सिर्फ पांच मिनट ही शेष थे कि शर्माजी का कॉल आया। लाइन पर मेरिलीन थीं—मिस्टर शर्मा, आपके लिए सूचना है कि अब मैं आप से मिल नहीं पाऊंगी, सॉरी। आप टैक्सी से ही लौट जाएं। फिर आपका यह जो नया अपाइंटमेंट हुआ है, मेरा खयाल है कि अब आपको गाड़ीवाली की कोई कमी रह नहीं जाएगी।

गजब हो गया, मेरिलीन नाराज हो गई है। रूठ गई है।

—मगर क्यों? आखिर क्यों तुम ने ऐसा रवैया अपनाया मेरिलीन ?

—इसका कारण क्या स्पष्ट नहीं है मिस्टर शर्मा ? फिलहाल आप एक राजनीतिक दल के चुनाव प्रचारक हैं। प्रत्यक्ष रूप से चुनाव प्रचार से सम्बद्ध किसी सज्जन के साथ मेरा निकट का सम्पर्क है। इसी से मैं लाचार हूं। फिर डॉक्टर हार्डस्टोन को भी यह कतई पसंद नहीं है।

—मगर मेरिलीन क्रेडिल पर रिसीवर छोड़ चुकी थी। रिसीवर पटकने की आवाज एक झन्नाटेदार तमाचे की तरह उनके कनपटी में महसूस हुआ।

शर्माजी का मन कसैला हो गया। वह खिन्न मन से बाहर निकले। वह बाहर आते कि एक अधेड़ हिंदुस्तानी कार से उतर कर मुट्ठी भर नकली दांत निपोर हंसते हुए उनकी ओर बढ़ा।

—रसौलीपुरुष मिस्टर शर्मा !

—कहिए !

—देखा कैसे पहचान लिया ? अधेड़ आदमी ने गर्व के साथ मुस्कराते हुए पूछा।

बस इतना सुनना था कि शर्मा का क्रोध एकाएक भड़क उठा। कभी-

कभार कोई-कोई यह बात कहकर अपनी बुद्धिमानी का परिचय देने की कोशिश करते हैं, शर्माजी उन्हें सहन भी कर लेते हैं। मगर आज उनका मन उखड़ चुका था। वह छूटते ही हमला कर बैठे।

—वाकई आश्चर्य की बात है। कैसे पहचान लिया ? आपको बताना ही पड़ेगा मिस्टर। यह क्या बदतमीजी है।

अधेड़ आदमी इस अचानक हमला से घबराकर बगलें झांकने लगा। वह असमंजस में पड़ गया। शर्माजी की रसौली की ओर बार-बार ताकते रहने पर भी वह कोई सीधा-सा जवाब दे नहीं पाया। फिर कैफियत देने के बदले उसने बात को इधर उधर घुमाना चाहा।

—देखिए साहब दरअसल बात यह है कि मुझे अचानक आपको देखते ही यूं लगने लगा कि जैसे हों-न-हों आप ही जरूर रसौली वाले मिस्टर शर्मा ही हैं।

—हूं हूं···आकाशवाणी हुई होगी। कहते हुए शर्माजी ने मुड़कर चलने को हुए।

मगर उस अधेड़ आदमी ने उनका रास्ता रोकते हुए कहा—जनाब, मैं आपके अपने ही देश का आदमी हूं। मैं हिन्दुस्तानी हूं।

—मुझे भी आकाशवाणी से वह पता चला चुका है।

—आपकी कार तो होगी ही ?

—जी नहीं। कार नहीं है। जब खरीदनी होगी तो सीधा जाकर ले लूंगा। मुझे किसी दलाल के पचड़े में नहीं पड़ना है। मुझे किसी ब्रोकर की आवश्यकता नही, चाहे वह अपना देश ही का भले क्यों न हुआ हो। आप जा सकते हैं।

शर्मा ने दूसरे क्षण हाथ हिलाकर एक टैक्सी रोका, फिर उस अधेड़ हिन्दुस्तानी को भौंचक्का छोड़कर चले गए।

दिन भर में यही लौटने के कुछ पल ही उनके व्याकुल प्रतीक्षा के पल होते थे। जब शर्माजी चंचल हो उठते थे। बेसब्री से मेरिलीन की प्रतीक्षा किया करते थे। मेरिलीन को देखते ही उनका चेहरा फूल-सा खिल उठता था। मगर आज ? आज वह सब न था। शर्माजी मुंह लटकाए चुपचाप गुमसुम बैठे थे। जब टैक्सी उनके बहुपरिचित पार्क के निकट से

गुजरने लगीं तो अनायास ही शर्माजी की ठंडी आह निकल गई।

मगर कैसी विडंबना है? जब वह अपने कॉटेज के सामने टैक्सी से उतरे तो, उस समय अधेड़ हिन्दुस्तानी भी हंसते हुए अपनी कार से उतर रहा था।

—आपने गलत समझा मिस्टर शर्मा। मैं कोई दलाल नहीं हूं। मेरा मतलब था कि आपके पास अगर कार न हो तो मैं आपको अपनी कार में लिफ्ट दे देता।

—धन्यवाद!

—माफ कीजिएगा। मुझे आपको अपना परिचय देने का मौका ही नहीं मिल सका। मुझे डब्ल्यु। डब्ल्यु, सैनीटेरी वाला कहते हैं।

—यह बताकर आपने निश्चित रूप से मुझ पर मेहरबानी की है।

—मैं भारतीय दूतावास से सम्बन्ध रखता हूं। मैं दूतावास का अन्यतम सचिव भी रहा हूं। हिज एक्सीलेंसी महामहिम भारत के राष्ट्रदूत ने आपके साथ भेंट करने के लिए मुझे खास तौर पर भेजा है।

इतने दिनों के बाद भारतीय दूतावास को, राष्ट्रदूत को सुध आई की एक विश्वविख्यात भारतीय भी यहां पर रह रहा है? कभी कोई भारतीय कम्युनिटी सेंटर या संस्थान ने उनके सम्मान में कोई स्वागत समारोह का आयोजन किया? भारत से कितने मिनिस्टर अमरीका आते हैं, मगर कभी किसी ने औपचारिक तौर पर ही भले क्यों न हो, उनसे भेंट—करना चाहा? शर्माजी ने मन-ही-मन सोचा फिर कुछ जोश में भरकर कहा—ठीक है, ठीक है, आइये···पधारिये···आपका स्वागत है, तशरीफ रखिये!

मिस्टर शर्मा तथा मिस्टर सैनिटेरीवाला कमरे में आ गए—अच्छा, अब आराम से तशरीफ रखिए और फरमाइए कि बात क्या है। शर्माजी ने एक तरह से निर्देश देते हुए कहा—मगर जनाब, एक बात मैं पहले से ही आपको खुली तौर पर बता देना चाहता हूं कि अगले छः महीने तक मैं किसी तरह से भी खाली नहीं हूं। इस बीच में किसी तरह के भी एनगेज-मेंट स्वीकार कर पाने की स्थिति में नहीं हूं। एक महान कर्तव्य का बीड़ा सिर पर उठा रखा है। और उसके साथ इस अमरीका की क्या तमाम

विश्व की किसमत का प्रश्न जुड़ा है।

अधेड़ हिन्दुस्तानी कुछ असमंजस से में नजर आने लगा।

—मिस्टर शर्मा। मुझे आपसे इतना बतलाने के लिए विशेष रूप से भेजा गया है कि यहां पर आपकी गतिविधि भारत सरकार के लिए खासी दुश्चिता की कारण बन गई है। आप भारत के नागरिक हैं, आपका इस देश की अंदरुनी राजनीति में भाग लेना, और वह भी जिस खास ढंग से आप यहां के राजनीति में अपना सहयोग दे रहे हैं, वह हम भारतीय महाजाति के हित में कहां तक सम्मानजनक है, वह भी एक विवादास्पद प्रश्न रहा है।

—सम्मानजनक ? शर्माजी एकाएक आवेश में आकर फट पड़े—मेरी कीमत पहले विदेशी लोगों ने समझी। कहिए, यह आपके भारत के लिए कहां तक सम्मान का विषय है ? अगर इस बात को भी जाया कर दें तो भी भारत ने खुद तो मुझे कोई सम्मान, कोई इज्जत दी नहीं, मगर यहां, इस विदेश में मेरी खासियत, महत्व प्रमाणित होते ही आपकी सरकार की नींद हराम हो गई ? मिस्टर सैनिटेरीवाला, जो लोग सत्ता में आसीन हैं, उन अमलबरदारों की तंगनजरी तथा अपरिणामदर्शिता के यह फल हैं की आज भारत से यहां, गैरमुल्कों में ब्रेनड्रेन हो रही है। सच बताऊं तो मैंने सोचा था कि आप अपनी सरकार की ओर से मेरे लिए पद्मविभूषण का ऑफर लेकर आए होंगे, उससे नीचे का हो तो मैं कतई स्वीकार भी नहीं करता। मगर देखने को क्या का देश का सम्मान का सवाल, इज्जत की सवाल···ओह···आदमी का दिमाग खराब हो जायेगा···

शर्माजी हाथ में अपनी रसौली थामे बैठ गए।

—मुझे खेद है मिस्टर शर्मा ! मुझे काफी अफसोस है की···

—आपको क्या सचमुच कोई अफसोस हुआ है ? आपके हिज एक-सलेंसी, आपकी सरकार, आपके भारत की आम जनता, बच्चे-बूढ़े, पुरुष-स्त्रियां सभी को अफसोस करने का समय आ गया है। आपलोग समझते क्या हैं ? मैं आपकी नागरिकता छोड़ने को भी तैयार हूं। बल्कि छोड़ दूंगा।

दूतावास के सचिव ने ऐसी कोई बात की कल्पना तक नहीं की थी। वह उठकर खड़े हो गए।

—मैं आपके खयालों से हिज एक्सलेंसी को अवगत करा दूंगा। वह शायद जल्द ही नई दिल्ली से इस विषय में संपर्क करें।

अधेड़ सचिव भारी कदमों से बाहर निकल गए। उनके पीछे-पीछे शर्माजी भी दरवाजे तक उन्हें छोड़ने आए।

सचिव मिस्टर सैनिटेरीवाला के साथ हाथ मिलाते हुए वह सोच रहे थे—हायना के वकील लोग सब ठीकठाक कर लेंगे। माताजी को भी किसी किसी तरह बहला-फुसलाकर यहां ले आने के बाद सब ठीक हो जाएगा। सुजला-सुफला भारतवर्ष, जिसके चलते मैं आज इतना बड़ा दर्जा पाने का काबिल बन पाया हूं, वही रसौली तेरे हवा पानी में बिकशित हुई है, प्रकटी है, मगर तेरे छप्पन करोड़ बेटे-बिटियां इसके योग्य न हो सके, हो सके तो मुझे माफ कर देना जननी भारत !

आठ

एक बड़ी-सी काला चमचमाती अत्याधुनिक कार आकर कॉटेज के गेट के सामने रुक गई थी। इंजिन की आवाज बहुत ही धीमी थी। शर्माजी अभी तक दूतावास के सचिव को विदा देकर रास्ते को निहारते हुए खड़े थे। वह हतभागनी भारतवर्ष की चिन्ता में खोये थे। कार के आने तथा रुकने के बारे में उन्हें कोई पता ही नहीं चल पाया था।

कार से तीन नौजवान बाहर निकले। वे तीनों मुस्करा रहे थे, फिर वे शर्माजी के निकट आकर सिर को थोड़ा झुकाते हुए अभिवादन किया। शर्माजी आजकल टोपी कम्पनी की शो रूम के बाहर सलामी के लिए सर नहीं झुका रहे थे। क्योंकि प्रॉफेसनल आवश्यकता के अलावा किसी के सामने अपनी रसौली को झुकाना वह पसन्द नहीं करते थे।

एक युवक ओवरकोट की पॉकेट से एक छोटी-सी नोटबुक निकाल रहा था। "साइन हंटर्स"—शर्माजी ने मन ही मन सोचा और पॉकेट से पेन निकालने लगे। अब ऑटोग्राफ देने में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है। पहले की तरह सिहरन भी नहीं महसूस होती। तमाम अमरीका में उनके—ऑटोग्राफस फैल चुके हैं।

शर्माजी युवक के हाथ से नोटबुक लेकर उसमें साइन करना ही चाहते थे कि उस बीच कार उनके दरवाजे के ऐन सामने आ लगी थी। वह परेशान हो बद्‌तमीज शोफर को घूरने लगे थे। मगर शाम के गहराते धुंधलके में उसका चेहरा उन्हें साफ नजर नहीं आ रहा था।

मगर पलक झपकते ही सब कुछ बदल गया था। वह कुछ समझ पाएं कि इसके पहले ही उन्होंने अपने मुंह तथा नाक के ऊपर किसी फौलादी हथेली का दबाव अनुभव किया। साथ ही रसौली के ऊपर एक मुलायम पैंड।

देखते ही देखते उन्हें एक गठरी बनाकर कार में डाल दिया गया। बस कुछ ही पल तो लगा था इन सब काम में।

फौलादी हथेली का कसाव अब भी उनके मुंह और नाक पर था। कार दौड़ने लगी थी।

कुछ समय बाद ही फौलादी-हथेली उनके चेहरे से हटा ली गई। वह चीखने ही जा रहे थे कि ठीक तभी उन्होंने अपने माथे पर किसी ठंडी चीज का स्पर्श अनुभव किया। आंखें ऊपर को उठाकर पहचाना—एक छोटी सी खूबसूरत पिस्तौल की चमचमाती काली मगर बहुत ही ठंडी नली थी, जो उनके माथे के साथ सटी थी।

याने मुझे अपहरण कर लिया गया है। शर्माजी ने मन ही मन कहा। उनकी एक ठंडी आह निकल गई। उन्होंने अपना सीना थाम लिया।

न जाने कितने समय बाद उन्हें रौशनी से जगमगाते एक कमरे में सुला दिया गया था। कमरा किसी दुमंजिली बिल्डिंग का था। तीनों नौजवान उनके साथ काफी नरमी से पेश आ रहे थे। उनके व्यवहार में कोई सख्ती नहीं थी।

—मिस्टर शर्मा, हमें अफसोस है की आपको इस तरह उठा लाना

पड़ा। आपको पूरी तरह से किडनैप करने का हमारा कोई इरादा नहीं था। हमें सिर्फ आपकी रसौली की ही जरूरत थी। मगर उसे हड़बड़ी में ऑपरेशन करने से आपका जीवन को भी खतरा था। यहां विशेषज्ञ सर्जनों के जरिये वह काम कर लिया जाएगा। फिर हम आपको आजाद कर देंगे। मगर आपका यह अजीब रसौली ही हमारे पास रह जाएगी।

शर्माजी की आंखें डबडबा आईं। उन्होंने टूटी हुई आवाज में रुक-रुक कर कहा—रसौली ऑफरेशन करवाने के लिए ही मैं यहां इतनी दूरी से आया था। मगर आप लोग कौन-से चैरिटेबुल हॉस्पिटल के अत्युत्साही स्वयंसेवक हैं, वह मैं समझ नहीं पा रहा हूं···

उनमें से लीडर जैसा दिखाई देने वाले युवक ने कहा—आपने तो अभी तक हमसे दुश्मनी नहीं की है; इसी से आपसे कुछ छुपाने की जरूरत नहीं है। मिस्टर शर्मा। हम राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार मिस्टर डंवार्ड का आदमी हैं। हायना ने आपकी रसौली का उपयोग कर मिस्टर डंवार्ड का मज़ाक उड़ाने की जो योजना तैयार की है, उसे बस विफल कर देना ही हमारा काम है। विश्वास कीजिये मिस्टर शर्मा, हायना एक निहायत ही बेहुदा, बदमाश, पाजी आदमी है। उसकी घिनौनी हरकतों में उपयोग करने के लिए भगवान ने आपको इतनी खूबसूरत, तथा विकसित रसौली का हकदार नहीं बनाया, इसमें हमें कोई शक नहीं। इसीलिए रसौली को हम लोग निकाल लेंगे।

शर्माजी रोने लगे थे।

—मुझे छोड़ दीजिये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। मैं अब अबाबील टोपी से ही संतोष कर लूंगा। मैं आपको वचन देता हूं। चुनाव प्रचार से किसी तरह का भी संपर्क नहीं रखूंगा। मुझ पर रहम करिये। भगवान के लिए मुझे छोड़ दीजिए।

—वह तो अब संभव नहीं रहा मिस्टर शर्मा। आप हायना के लिए जो कुछ करने वाले थे, वह तो प्रचारित हो चुका है। टोपी की दूकान में आपको हर दिन सैकड़ों लोग देखा करेंगे। आपको देखते ही उन्हें वह बात याद आ जाएगी। फिर आपके लिए स्नेहवश: वे हायना का वोट देने के लिए प्रेरित होंगे। फिर आप इस प्रचार अभियान से क्योंकर मुकर गए,

इस बारे में भी व्यापक प्रचार होगा। हो सकता है कि आप इस बारे में अपनी जुबान बंद रखें, मगर पत्रकार लोग हाय-तौबा मचाने से तो बाज नहीं आयेंगे। जरूर ही भांप लेंगे फिर सैंकड़ों मनगंढ़त कहानियां बनेंगी, प्रचारित होगी, जो कि निश्चित रूप से हमारे विपक्ष में ही जाएगा। मिस्टर शर्मा, हमारे सामने अब सिर्फ दो ही रास्ते शेष हैं।

—दो रास्ते ? वे क्या हैं ?

—हो सकता है कि हम आपकी रसौली को जबरन काटकर निकाल फेंके और आपसे यह भी जबरन लिखवा लें की आपने स्वेच्छतया डॉक्टर को फीज़ देकर रसौली का ऑपरेशन करवाई है। या फिर···

—फिर···?

—हमें यह बताते हुए दुःख हो रहा है मिस्टर शर्मा, मगर क्योंकि आप एक दयालु पुरुष भी रहे हैं, इसी से कृपया हमें गलत न समझें, अगर पहला उपाय कारगर न हो पाया तो फिर हम आपको एक हल्का सा धक्का देकर दरवाजे से बाहर सड़क पर धकेल देंगे। एक तैयारशूदा गाड़ी सड़क पर फर्राटे भरती हुई आ रही होगी और आप···बस यही लगेगा कि एक आकस्मिक दुर्घटना के शिकार होकर आपका अकाल निधन हो गया है। आपका विश्व का वृहत्तम रसौली भी कुचल जाएगा बुरी तरह।

—हे भगवान···शर्माजी बच्चों की तरह बिलखने लगे।

—रोईये मत मिस्टर शर्मा। रोईये नहीं। एक युवक ने रूमाल से शर्माजी की आंखें पोंछते हुए कहा। फिर अपनी भीगी आंखों को भी पोंछने लगा।

—जो कुछ भी होने जा रहा है, उसे आप एक स्पोर्टमैन की स्पिरिट से ही स्वीकार करने की कोशिश करें मिस्टर शर्मा, जैसे यह कोई एक विचित्र खेल ही हो। एक अन्य युवक ने सहानुभूति से भीगी हुई आवाज में ढ़ाढ़स बंधाया।

शर्माजी ने उसी तरह से हिचकियां भरते हुए कहा—मैं अपने हिंदुस्तान लौट जाऊंगा। मैं हिंदुस्तान लौट जाना चाहता हूं। मुझे मेरे देश वापस जाने दीजिए। मैं आप लोगों का आभारी रहूंगा। मुझ पर दया

कीजिए, मैंने आप लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ा···।

—यह प्रस्ताव भी कोई बुरा नहीं लगता। एक युवक ने कहा।

—हिंदुस्तान बहुत अच्छा है, बहुत ही भला···शर्मा ने रोते हुए कहा।

—बिलकुल सही, हिमालय की तलहटी के इलाकों में मैंने भी खुद भारत की बहारें गुजारी हैं। अपूर्व-रोमांचक···एक ने कहा।

—मेरे शहर में भी वसंत के मौसम में कोयल कूकती है। शर्माजी ने किसी तरह से अपने उबल आए उच्छवास को दबाते हुए कहा।

—हाय, हमारी इस बदकिस्मत महानगरी में विगत पचास वर्षों में शायद मुश्किल से ही कोई चिड़िया कभी चहचहाई होगी।

—हिंदुस्तान में मेरी मांजी रहती हैं। वैसी मांजी किसी की न रही होंगी। शर्माजी फिर से बिलखने लगे थे।

—उनसे हमारी नमस्ते कह दीजिएगा। और अगर हमारी तरफ से कुछ कष्ट स्वीकार कर उनके लिए एक बढ़िया-सा फ्रॉक खरीदकर ले जा सकें तो—बस, हमारी ओर से एक तुच्छ-सा सामान्य भेंट, तो हम आपका बहुत-बहुत आभारी होंगे। वाकई, हिंदुस्तानी मांओं की कोई तुलना नहीं होती, वे अतुलनीय, अनुपम होती हैं।

अब की बार तीनों युवकों ने अपनी-अपनी आंखें पोंछ शर्माजी की रसौली के ऊपर स्नेह से हाथ फिराने लगे।

अगले तीस मिनट में वे शर्माजी को बार-बार शराब, चाय, कॉफी पीने को आग्रह करते रहे। मगर शर्माजी ने रोते हुए मुट्ठी भर टॉफियों के सिवा और कुछ लेने से इन्कार कर दिया और जल्दी-से-जल्दी अपनी माताजी के पास लौट जाने की इच्छा व्यक्त की।

युवकों ने अब की बार अपेक्षतया सीधे रास्ते से लाकर उन्हें उनके कॉटेज पर छोड़ दिया—आपके जाने के खर्च तथा मांजी के लिए एक सुंदर सा फ्रॉक के बाबत, कहकर वे शर्माजी के हाथ में नोटों की एक बड़ी-सी गड्डी थमा कर बहुत ही विनीत भाव से कहने लगे—

—मिस्टर शर्मा, आप मेहरबानी करके चौबीस घंटे के अंदर-अंदर ही अमरीका छोड़कर चले जाने का कष्ट करें, क्योंकि हायना के जासूस बहुत

ही चतुर हैं, वे काफी अड़चन पैदा कर सकते हैं। फिर से हमें हस्तक्षेप करनी पड़ सकती है।

शर्माजी शराबियों की तरह लड़खड़ाते हुए कमरे के अंदर प्रवेश किया फिर नोटों की गड्डी खोलकर गिनने लगे—पूरे पांच हजार डॉलर।

फिर शर्माजी ने भारतीय दूतावास से फोन मिलाया—मैं भारत वापस चला जाना चाहता हूं। चौबीस घंटे के अंदर ही मुझे किसी फ्लाइट में सीट रिजर्व करवा दें।

डब्ल्यु, डब्ल्यु, सैनिटेरीवाला के हाथ से फोन लेकर स्वयं हिज एक्स-लेंसी ने कहा—

—मिस्टर शर्मा, आपके अत्यन्त विज्ञजनोचित फैसले के लिए मैं आपको अपनी सरकार की तरफ से तथा मेरे और मेरी धर्म पत्नी की ओर से मुबारकबाद देता हूं।

नौ

अमरीका से हिंदुस्तान—इतनी लंबी हवाई सफर, एक कशिश, दर्द को सीने में छुपाए मिस्टर शर्मा लौट रहे थे, "मेरिलीन का कहना था कि मैं हृदयहीन हूं, मेरा हृदय नहीं है। मेरे अंदर दिल नाम की कोई चीज शायद नहीं है।" उस अनसहा दर्द से डूब उतरा कर कभी-कभी शर्माजी अपने आपको मन-ही-मन कहने लगते।

वह दर्द का, उस कशिश का असल कारण था—आते समय वह मेरिलीन से मिल नहीं पाए थे, यही दुःख उन्हें खाए जा रहा था। मेरिलीन जो उनकी इतनी करीब थी, वह, जो मेरिलीन के इतने निकट थे, इतने दिनों का साथ था, पर आते समय उससे भेंट ही नहीं हो पाई। इससे बढ़-कर दुःख की बात और क्या हो सकती थी।

—मेरिलीन, तुमसे सलाह लिए बगैर काम करने का सजा मैं अब

हर पल भुगत रहा हूं, जीवन में फिर कभी भेंट होगी। होगी भी या नहीं, नहीं जानता, काश, मैं तुम्हारे मसवरे पर चला होता मेरिलीन…।"

क्या इन खयालों को एक प्रेम पत्र के रूप में लिया जा सकता है? क्या यह प्रेम पत्र का मसविदा है? बहुत सोच-विचार करने पर भी शर्माजी कुछ तय नहीं कर पा रहे थे। मगर फिर भी आखिर उस पत्र को वह मेरिलीन के पते पर छोड़ आए थे।

अपने शहर का हवाई अड्डा दिखलाई देने लगा था। अचानक शर्मा जी को लगा कि उनके मन का तमाम बोझ एकाएक उतर गया है। वह अपने को काफी हल्का महसूस करने लगे। हवाई अड्डे पर काफी भीड़ थी। इतने सारे हिंदुस्तानियों को एक साथ देखने का मौका बहुत दिनों के बाद ही तो मिल रहा था।

मगर? मगर इतने सारे लोग एक साथ ही क्यों? क्या किसी नेताजी का आगमन हो रहा है? शर्माजी ने प्लेन के अंदर नजर डाली। मगर फिर भी उनकी समझ में कुछ नहीं आया। कोई नेता-वेता हो, ऐसा तो कोई दिखाई नहीं देता। तो फिर? किसलिए आखिर यह इतनी जमघट? बात क्या है?

मगर बीस मिनट बाद ही सारी बात उनकी समझ में आ गई। हवाई ज़हाज से बाहर कदम रखते ही वह चेहरों को पहचानने लगे थे। अधिकांश उनके सहकर्मी ही थे—स्त्री-पुरुष यानी रूपलाल टैक्सटाइल की तमाम कर्मचारियां।

और कुछ आगे बढ़ते ही पता चला कि सब उनके आगवानी के लिए आए हैं। खुद मालिक मिस्टर रूपलाल भी साथ में थे। ढेरों फूल और कपूर की मालाएं भी उनके साथ थी।

—"देश के गौरव स्वागतम" लिखा एक फेस्टून से सजी खुली जीप पर रूपलाल के निकट उन्हें आदर के साथ बिठाया गया। फिर जीप शहर की ओर रवाना हुई। अन्य सहकर्मियां कंपनी की दूसरी गाड़ियों में बैठ उनके पीछे-पीछे चल पड़े। मिस्टर शर्मा की स्वागत में कंपनी ने ऑफिस में एक बड़ा-सा भोज आयोजित कर रखा था। उसमें कंपनी की तमाम कर्म-चारियों तथा शहर के बहुत से जानेमाने नागरिक ऑफिसर्स भी निमंत्रित थे।

यह सब देखकर शर्माजी को काफी खुशी हुई। उन्होंने सोचा—लगता है कि आखिर देशवासियों ने उनकी अहमीयत को पहचानना शुरू कर दिया है। इतने दिनों बाद ही सही उनका महत्व का लोहा तो माना जा रहा है। वे काफी खुश हुए :

भोज के उपरांत मिस्टर रूपलाल खुद अपनी कार से शर्माजी को उनके घर पहुंचाने चले तो रास्ते में अपना उद्देश्य बतलाते हुए कहा—

—मिस्टर शर्मा, कुछ एक महीनों में यहां उपनिर्वाचन होने वाला है।

—ओ अच्छा···अच्छा···

—मैं भी कांटेस्ट कर रहा हूं।

—अच्छा · अच्छा···बहुत ही खुसी की बात है।

—मगर मिस्टर शर्मा, मेरे विपक्ष में एक तगड़ा उम्मीदवार खड़ा हुआ है। वह अपने आपको प्रगतिशील जतलाते हुए मुझे रीएक्शनरी कहता है।

—ओह !

—आपको ही मेरी रक्षा करनी है।

—जी, वह कैसे ?

—मेरे लिए आपको धुआंधार प्रचार करना होगा। सिर्फ यही एक रास्ता बचता है, जो मुझे पराजय से निश्चित रूप से बचा सकता है। आपने अभी-अभी जो पापुलेरिटो, फेम पाया है, लोगों पर इसका काफी प्रभाव है। आप एक के लिए कहें तो मुझे हजारों वोट मिल जाएंगे।

अचानक शर्माजी को क्रोध आ गया। तो इसलिए रूपलाल ने इस स्वागत का ढोंग रचा था। स्वार्थी। उनके रसौली के सहारे वहां अमरीका में हायना इलेक्शन जीतना चाहता था और अब यहां रूपलाल उनका रसौली का उपयोग कर चुनाव जीतना चाहता है।

और ठीक उसी समय अप्रत्यासित रूप से शर्माजी ने एक आंतरिक प्रेरणा अनुभव की। उस प्रेरणा से वह पुलकित हो उठे। घर पहुंचते ही माताजी का चरणस्पर्श किया। उन्हें देखते ही माताजी खिल उठे, फिर वह एक ठंडी सांस लेकर रह गईं। रूपलाल के जाते ही माताजी ने कहा—

—रसौली को फिर से लौटाकर ले आए, बेटा !

—मांजी, यह रसौली नहीं, साक्षात् लक्ष्मी है, लक्ष्मी । दुनिया के तमाम लोग इसकी महत्ता को समझ गए, मगर सिर्फ एक तुम्हीं हो जो कुछ समझतीं ही नहीं, इसका महत्व को स्वीकारती नहीं, कुछ एक माह इंतजार करो । फिर इसका करिश्मा देखना, देखोगी तो दंग रह जाओगी ।

अगले दिन सुबह शर्माजी ने टेलिफोन से रूपलाल को अपने दो फैसले से अवगत करा दिया । पहला यह कि, उन्होंने पहले से ही छुट्टी के लिए एप्लीकेशन भेज दिया था और अब इस्तिफा भेज रहे हैं । दूसरा यह की उन्होंने खुद ही उपचुनाव में उम्मीदवार होने का निश्चय कर लिया है ।

त्रिमुखी प्रतिद्वंदिता तीव्र से तीव्रतर होने लगी । अपनी रसौली के ऊपर अटूट विश्वास रख शर्माजी ने अपने लिए खुद ही चुनाव प्रचार करने लगे । अपना ही निर्वाचन क्षेत्र के एक युवक ने विश्व में एक रिकार्ड कायम किया है, इसी से प्रांतीय देशप्रेम से उद्‌बुद्ध ही बहुत से युवक शर्माजी के लिए दिन-रात अथक मेहनत करने लगे । कभी प्रांत भर में शर्माजी का रसौली एक मजाक का विषय रहा था; मगर अब अचानक एक गुणगत परिवर्तन के तहत उनकी प्रसिद्धि की बात को कोई भी नकार न सका ।

"तमाम दुनिया ने जिसे रसौली श्रेष्ठ माना हो, उसे अपने प्रांत के लोग न चुने, यह कभी हो सकता है ?" इसी अमोघ तर्क के साथ शर्माजी का सचित्र पोस्टर हजारों की तादाद में दरो-दीवार पर छा गए ।

रूपलाल ने किसी सूत्र से "खिलाड़ी" पेपर में प्रकाशित वह चित्र भी हथिया लिया था, जिसमें शर्माजी मिस ची ची के साथ एक शर्मनाक पोज में फोटो लेने के लिए मजबूर कर दिए गए थे । फिर उस चित्र को आर्ट पेपर में छपवाकर रूपलाल चारों ओर बंटवा दिया था । मगर चुनाव-पर्यवेक्षकों का कहना है कि इसका नतीजा कहीं उलटा ही निकला । शर्माजी का कहीं और ही अधिक प्रचार हुआ । वे और भी चर्चा की विषय बन गए । लोग आपस में कहने लगे कि देखिए, जिस रसौली का हम मखौल उड़ाया करते थे, उसे ही सात समुंदर पार की एक अपूर्व सुंदरी परी ने प्यार के साथ उसे बांहों में भर रखा है । लोगों का कहना है कि एक-दो चाय को दुकान पर भी वही चित्र फ्रेम में लगे टंगे नजर आए थे ।

शर्मा़जी के प्रचारकर्ता उन्हें चेलैंज करने लगे—कौन कहता है कि शर्माजी ने यह फोटो खिचवाया है ? क्या प्रमाण है इसका ? आजकल विज्ञान से सब कुछ संभव है। शर्माजी ने ऐसा फोटो कभी नहीं खिचवाया। पत्रकारों से तंग आकर शर्माजी ने सिर्फ अपने फोटो लेने की अनुमति दी थी। वह भी अखबारों में प्रकाशित होगा इसीसे। रूपलाल में ऐसी हिम्मत हो तो करके दिखाएं, हम भी तो देखें।

शर्माजी को पैसे की कोई कमी नहीं थी। मगर उनकी तमाम फॉरेन एक्सचेंज सरकारी देखरेख में ही बैंक के जरिए आई थी। सब ह्वाइट ब्लैक कुछ भी नहीं। हिन्दुस्तान में कुछ, कोई खास रकम थी भी नहीं। जो कुछ था वह जोड़ बटोर कर ट्रीटमेंट के लिए अमरीका ले गए थे। इसीसे चुनाव में वह मनमाना खर्च न कर पाए। क्योंकि चुनाव खर्च की भी एक सरकारी सीमा होती है। शर्माजी ह्वाइटमनी के सहारे वहां तक पहुंचकर रुक गए। बल्कि मजबूर हो गए। मगर रूपलाल ने ब्लैकमनी की बारिश कर दी।

फिर भी, प्रबल उत्तेजना के बाद जब चुनाव-परिणाम घोषित हुए तो पता चला कि शर्माजी ने अकेला जितना वोट पाया था, उभय प्रगतिशील और रिएक्शनरी उम्मीदवार दोनों को कुल मिलाकर उनसे भी कहीं कम वोट मिले थे। फलत: शर्माजी बहुमत से चुन लिए गए।

—मां जी रसौली को आशीर्वाद तो दो, ताकि वह कम-से-कम एक डिप्टी मिनिस्टर तो बन सके।

माताजी ने फिर एक ठंडी आह भरकर कहा—बेटा, चुनाव जीतकर तेरा भला हुआ या बुरा हुआ, यह तो मैं नहीं जानती। डिप्टी मिनिस्टर बनकर भी तेरा भला होगा या बुरा होगा, यह भी मुझे पता नहीं। फिर मेरे आशीर्वाद का मोल ही क्या है ? अगर सही मायने में तेरा मन आशीर्वाद पाने को करता है मेरे पूज्य गुरुजी के पास चलो। उनके आशीर्वाद से असंभव भी संभव हो सकता है।

—मां जी। देखो, उन सब में मेरा विश्वास नहीं है। मुझे तो सिर्फ मेरी रसौली पर ही अखंड विश्वास है। और कहीं नहीं।

मां जी चुप हो गईं।

मगर फिर भी शर्माजी डिप्टी मिनिस्टर नहीं बन पाए। चुनाव के फौरन बाद ही राजनैतिक संकट गहराने लगे। कुछ एक विधायक ने दल-बदल कर लिया। और उसमें से भी बहुत से विधायक फिर से मूल पार्टियों में लौट गए। उन्होंने एक इस्तहार दे दिया कि दल बदलने के कागजातों में उनके किये गए दस्तखत कानूनन मान्य नहीं होने चाहिएं। क्योंकि वे दस्तखत स्वेच्छा से दिये हुए नहीं है। क्योंकि उन्हें शरबत के बहाने कुछ और पिलाकर और कुछ गलती से पीकर उसके प्रभाव से कागजों पर दस्तखत करवाये गए थे। स्वाधीन प्रार्थी शर्माजी किस पार्टी में योगदान करें-न-करें इसी उधेड़बुन में कुछ दिन अधर में लटके रहे। इसी बीच सत्ताधारी पार्टी की हाईकमान बाजीगरों की तरह अधर में कुछ दिन कलाबाजियां खाने के बाद अचानक तौर पर एक दिन अर्धरात्रि के समय सरकार टूट गई।

फिर से दुबारा चुनाव होना तय पाया।

—"रसौली का जादू शायद अब की बार कोई विशेष काम न कर सके···" कोई-कोई एकांत विश्वस्त कार्यकर्ता चोरी छुपे आकर शर्माजी के सामने अपनी-अपनी आशंकाएं प्रकट करने लगे—लोगों के चरित्र ही कुछ ऐसे हुआ करते हैं, कि आप उन पर विश्वास बनाये रख ही नहीं सकते।" वे लोग खखुआ कर टीका टिप्पणी करने लगते।

उस दिन रात में शर्माजी ने मां जी से अनुनय किया—मां जी, तुम मुझे तुम्हारे उस गुरु महाराज जी के यहां एक बार ले चलने के बारे में कह रही थीं न ?

—भगवान तुझे सद्बुद्धि दे बेटा। मां जी ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ बेटे को आशीर्वाद दिया।

दस

अपूर्व ही थी उस आश्रम की शोभा—पवित्र और पुलकित वातावरण से सराबोर।

ध्यानाविष्ट गुरुजी का पद पंकज को माथा से लगाया मां जी तथा शर्माजी ने। गुरुदेव ने मंद-मंद मुस्कराकर आशीर्वचन दिया। उस पावन मुस्कान के प्लावन में शर्माजी को एक अनिर्वचनीय सिहरन का अनुभव हुआ। ठीक बचपन में एक बार किसी समुद्र के उत्ताल लहरों में डूब, फिर से बाहर निकल आने पर जैसा सिहरन—जिससे शरीर और मन में हल्का पन, विस्तार तथा विस्मय का उदय होता है।

अगले दिन भोर की वेला। शर्माजी के कमरे में मां जी चाय लेकर आईं। बेटे के सिर पर हाथ फेरकर उसे नींद से जगाया। एक कृतज्ञता भरी प्रसन्नता से मांजी का चेहरा दमक रहा था।

—क्यों, विश्वास नहीं होता था न ? आइना में जाकर अपना चेहरा देखो, गुरुजी की आशीर्वाद से तेरी रसौली आधी से भी कम रह गई है।

—क्या कह रही हो मां ? शर्माजी खाट से उछलकर आईने के सम्मुख खड़ा हो चीख मे पड़े।

—मां जी, यह क्या हो गया, यह···? मैंने तो यह कभी भी नहीं चाहा था। मैंने तो गुरुदेव से यही प्रार्थना की थी कि मेरी रसौली दिनों-दिन बढ़ती ही चली जाए, जिससे उसपर लोगों का घटता विश्वास फिर से बढ़ता जाये। ताकि मैं फिर से चुनाव जीत सकूं।

—मगर बेटा, मैंने तो यही चाहा था कि, हे भगवन्, मेरे बेटे को इस बला से छुटकारा दिला दो।

—रसौली चली गई तो मेरा और रह ही क्या जाएगा मां जी ? शर्माजी फफक-फफक कर रो उठे।

मां जी ने अचानक शर्माजी को पकड़कर जोर से झिझोड़ दिया—होश में आओ बेटा, होश में आओ। देखो, कोई गोरी महिला तुमसे मिलने आ रही हैं। जल्दी से यह रोना-धोना बंद करो।

—कौन ? मेरिलीन ? शर्माजी चौंक पड़े थे।

मेरिलीन ने आकर, हिन्दुस्तानी रिवाज के मुताबिक मां जी के पैर छूये। फिर पैनी नजरों से शर्माजी की ओर निहारने लगीं।

अचकचाये शर्माजी ने जल्दी-जल्दी आंसू पोंछते हुए कहा—और क्या देखने यहां आई हो मेरिलीन ? मेरा सब कुछ तो लुट गया। मेरी रसौली तो गायब होती जा रही है, तुम्हारी प्यारी रसौली। जिसे तुमने इतना चाहा था।

—ओह मैं कितनी उत्तेजित हुई जा रही हूं। ओ गौड ! काश, बगैर —ऑपरेशन के ही पूरी की पूरी गायब हो जाती ! मेरिलीन खुशी से नाचती हुई सी जाकर शर्माजी के गायब होते हुए रसौली को सहलाने लगी थीं।

—मेरिलीन, तो क्या तुम भी मेरे रसौली के विरुद्ध रही हो ? एक रसौलीविहीन शर्मा से क्या तुम प्यार कर पाओगी ? अचानक शर्मा की जबान से यह बात निकल गई। फिर मां जी पर नजर पड़ते ही उन्होंने जीभ काट ली।

—हां शर्मा, रसौलीविहीन शर्मा से ही मैं प्यार करती हूं। मैं तुमसे प्यार करती हूं। तुम्हारी रसौली से नहीं। मां जी की मौजूदगी का भान होते ही मेरिलीन ने भी दांतों तले अंगुली दबा लीं।

अचानक शर्माजी का चेहरा दमकने लगा था। वह बोले—अगली बार रसौली के लिए ही वोट पाया था। अबकी बार रसौली का अलौकिक तीरोभाव ही मुझे वोट दिलायेगा। विश्व के वृहत्तम रसौली की लिए जिसे दुनिया के तमाम लोग एक कृतकर्मा के रूप में जानते थे। रातोंरात रसौली के गायब हो जाने से भी वह एक कृतकर्मा क्यों नहीं हो सकता ?

—मगरा तेरी रसौली तो गुरु जी का आशीर्वाद से ही गायब हो रही है। मां जी ने उसे याद दिलाई।

—गुरुजी का आशीर्वाद मुझ पर जैसे कारगर हो रहा है, कम-से-कम यही देखकर तो लोग चमत्कृत होंगे। शर्माजी ने प्रसन्न होकर चहकते हुए कहा।

—बेटा। फिर से ऐसी गलती मत कर बैठना। गुरुजी का आशीर्वाद

तुम्हें रसौलीमुक्त करने के लिए है। उस आशीर्वाद को बेचकर उससे तुम लाभ उठाओ, इसलिए नहीं है। तेरी इस रसौली से छुटकारा पाने की घटना के बीच ही मैं सपना देख रही हूं कि सारी दुनिया एक दिन शायद इस रसौली तांत्रिक राजनीति तथा बिजनेस के हाथों से मुक्त हो सके। मुझे कम-से-कम यह सपना देखने का तो मौका दो बेटा।

लक्ष्मी का अभिसार

जिस समय शहर की उपांत नगरी बस्तियों के छोटे-छोटे गृह, झाड़-झंखाड़ और ऊबड़खाबड़ छोटे-छोटे सड़कों के ऊपर दोपहर आकर थम जाती है उस समय बस्ती की हालत पुराने जमाने की मास्टरजी के आ जाने से अचानक शोरगुल गुम हुए स्कूल की तरह हो जाती है। ठीक उसी समय मंदिर की दक्खिन की ओर जो गुलमोहर का वृक्ष है, उसके नीचे से आती हुई लक्ष्मी दिखाई पड़ती है। उसका मन कितना होता है कि मन्दिर के भीतर एक बार प्रवेश करे—कितना चाहती है कि सिर्फ एक बार के लिए ही भले क्यों न हो वह, मंदिर के अंदर से हो आए। मगर बूढ़े पुजारी से कितना भय लगता है। वह पंडित आदमी हैं, देखते ही मानसांक पूछ बैठेंगे, न हो तो एक तात्पर्यपूर्ण साधु शब्द का अर्थ ही पूछ बैठें तो ? फिर —ठाकुरजी की खास अपना आदमी होने की हैसियत से मंदिर के समीप से बच्चों को भगाना भी उनका अन्यतम कर्तव्यों में से है।

बहुत से दोपहर के बाद आज पुजारी पण्डितजी सो गए हैं। उनकी नाक भी बज रही है। खर्राटे की नींद है। लक्ष्मी बहुत ही धीरे-धीरे उनके समीप से होती हुई आगे बढ़ गई। फिर मंदिर के बिल्कुल ही अंदर जाकर ठाकुरजी की मूर्ति के आगे बैठते हुए जमीन से माथा टेक दिया। दो मिनट के लिए मुग्ध मधुर दृष्टि में मूर्ति और उसकी वेषभूषा देखकर बोली—

—मुझे पहचानते हो न ? मैं लक्ष्मी हूं। ओह, भगवान, एक मास हुआ, मैं तुम्हारे पास आने की बराबर कोशिश करती रही हूं। मगर क्या करूं। पण्डित रास्ता रोके बैठे रहता है। आज बूढ़ा सो गया है। हे भगवान, क्या पंडित रात में भी इस तरह खर्राटे भरता है ? तुम कैसे सो

लेते हो प्रभु ? हि-हि-हिऽ···हमारे स्कूल के पंडित भी ऐसे ही खर्राटे भरते हैं। खर्र···खर्र···खर्रर···अच्छा ठाकुर। पंडित लोग क्यों खर्राटे भरते हैं ? मान लो, मैं भी अगर खर्राटे भरना सीखूं तो क्या मैं भी पंडित बन जाऊंगी ? नहीं, नहीं, ठाकुर, तुम जल्दबाजी में मुझे कोई ऐसा वर न दे बैठना, न तो मैं पंडित बनूं, न ही मैं जैसे खर्राटे लेना शुरू कर दूं। यह खर्राटे लेना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं।

—हां, मगर, एक वर तो मांगूंगी ही—वह बाद में बताऊंगी। अच्छा, तो एक माह पहले तुम मुझे स्वप्न में क्या बोले थे, रात में—तुम्हारे साथ क्यों नहीं खेलती, तुम्हारी बात भूल गई—ऐसे तो कुछ बोले थे शायद, हैं न ? याद नहीं। तभी से तो मैं तुम्हारे पास आने की कोशिश कर रही हूं—मगर आ नहीं पाई।

अरे बाप रे ! तुम्हें यह केला किसने दिया है। पूरा कांदि का कांदि है। ऊपर के दो केले तो बिल्कुल ही पक गए हैं। तुम खाओगे कैसे ? खबरदार, ठाकुर सभी एक साथ खा मत लेना—तबियत बिगड़ जाएगी। एक, दो, तीन, चार, पांच···चौबीस पके हैं। तुम हर दिन दो···अच्छा, न हो तो चार-चार खा लिया करना। हुआ न ? तो चौबीस केले खाने के लिए चार दिन, या पांच दिन—बस, यही तो मुश्किल है। ठाकुर, मुझे हिसाब बिल्कुल नहीं आता। हां, एक बात कह रही थी, तुम एक जादू नहीं करते ? एक दिन रात को सब सोये रहते, तभी तुम कुछ कर देते, सुबह जब सभी उठते तो हिसाब भूल चुके होते···मानो, हिसाब करना ही भूल जाते यह मैं नहीं कहती, मेरा कहना है कि हिसाब नाम का कोई विषय है, पूरी बातें ही सब भूल चुके होते।

—नहीं-नहीं, तुम अचानक कोई वर दे न बैठना ठाकुर। गजब हो जाएगा। हो सकता है कि हिसाब का कोई अच्छा फायदा रहा हो, वह बात समझने की आयु मेरी नहीं हुई···है न ?

—हां, वर देना चाहते हो तो फिर ठाकुर, यही वर दो की लोग तुम्हें धीर भाव से भक्ति करें। उस दिन शेष रात में सपने में तुम क्या कह रहे थे—ठीक उसी समय मेरी नींद खुल गई थी। क्यों कि तुम्हारे मंदिर से उसी समय ग्रामोफोन बाजे में भजन बजने लगा था। ग्रामोफोन बाजा

अच्छा है, मगर यह जो मशीन का इतना बड़ा चोंगा लगाकर इतनी जोरों से चीखकर गीत गाते हैं, वह क्या कोई अच्छी बात है ठाकुर ? हमारे घर के पिछवाड़े में और एक बंगला है ? यानी कि बहुत बड़ा घर। वहां दूसरे धरम के लोग जाते हैं। वहां चोंगा लगाकर वे भगवान को बुलाते हैं। अच्छा, इतने जोर से चीख-चीखकर तुम्हारे प्रार्थना न गाने पर क्या तुम सुन नहीं पाते ? मैं उस दिन मां से पूछी थी—अच्छा मां, ध्रुव, प्रहल्लाद क्या यह मसीन की चोंगा लगाकर भगवान की प्रार्थना किया करते थे ? मां ने सोच-विचार कर बोली थी—नहीं। मां तो हर समय ठीक बातें बोलती है, है न ? फिर मैं भी तो इतनी धीरे-धीरे बोल रही हूं—मगर तुम तो ठीक सुन पा रहे हो देख रही हूं—तो फिर ?

—तो भगवान, मैं अगर कुछ गलती कह रही होऊं, तो तुम कुछ मत सोचना। तुमको अगर ऊंची आवाज पसंद हो तो मेरी बातों से मशीनी चोंगा हटाने की आवश्यकता नहीं। सच बात कहूं। मैं बड़ी डरपोक हूं। चीखना-चिल्लाना सुनते ही मैं घबरा जाती हूं। और मेरे पिताजी भी शायद मेरे जैसे हैं। उस दिन बेचारे को बुखार आ गया था। न जाने क्या एक त्योहार के लिए उसदिन हमारे पड़ोस में दिन-भर चोंगा में गीत बजा था। बाप बेचारा कितना छटपटाया ! मेरे हाथ को लेकर बार-बार अपने कानों पर रख लेता। बाप को और मेरे को तुम और थोड़ा साहसी कर दो प्रभु।

अच्छा भगवान, बाप को कहीं से कुछ पैसे दिलवा क्यों नहीं देते ? उस दिन मैं बाप को बोली, मुझे एक फ्रॉक चाहिए। बाप मां से बोला—मेरी बेटी कभी कुछ नहीं मांगती—आज मैं उसे फ्राक खरीद दूंगा।

मां ज्यादातर कहीं आती जाती नहीं। बहुत दिनों के बाद उस दिन वह मुझे लेकर बाप के साथ निकली थी—फ्रॉक खरीद देगी और थोड़ा-सा धूमधाम लेगी। भगवान ! हम ठीक घर से बाहर निकले हैं, कि इतने में एक लंबा, मोटा, भयानक मूंछवाला आदमी आकर पहुंच गया। बाप जितना पैसा लेकर निकला था। एक लंबी सांस लेकर वह सब उसके हाथ में थमा दिया। बात क्या है कि, बाप कुछ कर्ज किया है। रात दिन में वह भयानक आदमी लाठी लेकर आता है और ब्याज ले जाता है। बाप

बोलता था, उस आदमी ने जितना रुपया दिया था, उसे डेढ़ गुना सूद ले चुका है। अच्छा, उसे उतने में ही खुस हो जाना चाहिए, है कि नहीं ?

—छोड़ो। हां मैं बाप को बोल दी हूं, बाप, तू अगर इसके बाद भी फिर कभी रुपया कर्ज लेगा, तो और थोड़ा-सा गीड्डा आदमी देखकर, और जिसका मूंछ और लाठी भी जरा छोटे होंगे—उससे कर्ज लेना।

छोड़ो, तो वह आदमी सब पैसे ले जाने से हम फिर बाजार नहीं गए। मैं मां को बोली—बोऊ, तेरी एक पुरानी रंगीन साड़ी कितने दिनों से बक्से में तहाई हुई पड़ी है। तू तो कभी उसे नहीं पहनती। बात क्या है कि, तू खुद सिल कर उस साड़ी से अगर मुझे एक फ्रॉक बना देती तो, बस मैं यही कहती थी। मैं यही चाहती थी। बाजार की फ्रॉक की जरूरत न थी।

—तुम्हें तो पता होगा भगवान, मैं मां को इतनी झूठी बात जरूर बोली थी। हमारे बस्ती के बाजार में मैं एक रंगीन फ्रॉक देख रखी थी, और उसे पहनने के लिए ललचाई थी। बहुत ही मन कर रहा था मेरा।

बोऊ उसी दिन सांझ को मेरे लिए अपनी साड़ी से फ्रॉक तैयार करने बैठी। मगर मैंने देखा, वह रो रही थी। बोऊ को आज तक मैं सिर्फ और एक बार रोते हुए देखा है—जबकी बार बाप बुखार में पड़ा था, वही भयानक आदमी सुध लेने को आकर किवाड़ में डंडा ठुनकाया तो बोऊ जाकर दरवाजा खोलकर बोली—बाप कहीं दूर गया है, सात दिन के बाद लौटेगा। बाद में मैं मां को चुपके-चुपके बोली थी—मां, तू कहती थी न की झूठ बोलना बुरा है—फिर तू झूठ कैसे बोली ? मां बोली—झूठ बोलना जरूर खराब बात है। अभाव असुविधा में पड़कर मुझे कहना पड़ा। खराब काम करी हूं। फिर मां मुझे गोद में लेकर बोली—मगर तू मेरे से भी अच्छा आदमी बनना। अभाव असुविधा पड़ने पर भी कभी झूठ नहीं बोलना। ठाकुर, कुछ समय बाद मैंने देखा—मां, चुपके-चुपके छुप-छुपाकर रो रही है। उसी पल मैं क्या समझी जानते हो ? मेरी मां हो सकता है कि शायद वह झूठ कही हो, पर वह झूठी नहीं है। तमाम दुनियां झूठी हो सकती है, मगर मेरी मां कभी नहीं। वह सारी दुनियां से ऊपर है।

और ठाकुर, फ्रॉक के बारे में मैंने भी जो मां को कहा था, वह भी झूठ कहने की उद्देश्य से नहीं। तुम तो यह बात जरूर समझ रहे हो, है न? फिर भी भूल हो गई हो तो तुम मुझे क्षमा करना, मां को भी। करोगे न? ठीक है, मैं जानती हूं कि तुम इससे सहमत होंगे। तुम कितने अच्छे हो भगवान!

तो भगवान, अगर बाप को कुछ पैसे की जुगत बैठा देने में तुम्हें किसी बखेड़े या असुविधा में पड़ना पड़े, तो कुछ करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है।

छोड़ो, ठाकुर, तुमको कहते-कहते बहुत सारी बातें कह गई। मगर असली बात अभी तक बताई ही नहीं। मैं कितनी मूरख हूं, उस दिन सपने में तुम्हें देखा, कितनी खुश हुई; मगर तुम क्या बोले, समझ नहीं पाई। तुम और एक बार तुम्हारे सुविधा के अनुसार—मुझे एक बार सपने में कहना—इतना वर मांगती थी। और तुम अगर पंडित को दोपहर में जरा-जरा सा सुला देते तो मैं कितनी खुशी के साथ आती।

हे भगवान! पंडित का खर्राटा तो और कहीं सुनाई नहीं पड़ रही है? शायद उठ पड़े। तो आज चलती हूं। हाँ—तुम तमाम केले एक साथ खा मत लेना। क्यों, याद रहेगा न? मैं ले लूं दो केला? क्यों? नहीं, नहीं लेनी होगी? ठीक है तो फिर।

लक्ष्मी दो केले तोड़ कर ठाकुर को प्रणाम कर दरवाजे तक आ गई। बाहर चिलचिलाता धूप बिखरा है। पल भर के लिए उसका समयज्ञान चुक गया था, वह भूल गई थी कि वह रात थी या दिन की बेला थी।

अचानक एक प्रचंड ललकार ने उसे चकित कर दिया—दिन के दो-पहर में भगवान के निकट से चोरी। इतनी हिम्मत?

पंडित उसकी ओर लपकते चले आ रहे थे। लक्ष्मी पल भर के लिए काठ की गुड़िया की तरह स्तंभीभूत हो खड़ी रही। फिर वह बेतहाशा भागने लगी थी।

पंडित भी उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़े थे।

सामने एक पोखर है। लक्ष्मी की पथ घाट का ज्ञान जैसे विलुप्त हो चुकी थी। वह पोखर के अंदर घुस गई। पंडित की चीख ललकार सुन

और उन्हें भागता देखकर बहुत से लोग वहां इकट्ठे हो गए—पांच, दस, पंद्रह, बीस। लक्ष्मी पोखर के अंदर खड़ी हुई है। कमर भर पानी में, सीने पर दोनों केलों को भिचकर पकड़ रखा है।

—चल, पोखर से निकल बाहर। पंडित ने कड़ककर धमकाया—बाहर आ जा—दूसरे लोग भी गरजने लगे। फटी-फटी आंखों से लक्ष्मी सभी को एकटक देखे जा रही थी।

फिर समवेत जनता को परे ढकेलता हुआ लक्ष्मी का बाप आगे की ओर निकल आया। उन्हें देखते ही लक्ष्मी रो उठी। पानी में घुसकर पिता उसे गोद में उठाकर बाहर ले आए।

जनता बोला—अहा, कितनी गुणमती कन्या है! दो केले कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात है लड़की की चलित्तर। दिन दहाड़े इतनी हिम्मत! बाप रे बाप...

दोनों केले लक्ष्मी के हाथ से लेकर पिता ने पंडित के हाथ में पकड़ा दिए। और निर्वाक सा बेटी को कंधे में डाले धीरे-धीरे वह घर को वापस चला गया।

लक्ष्मी और कुछ नहीं बोली है तभी से। शाम होते ही बुखार से उसका शरीर लावा सा दहकने लगा। तीन दिन के बाद लक्ष्मी चली गई।

रविवार शाम को साप्ताहिक पुराणपाठ समावेश में उस बार सभी की जुबान में ठाकुरजी की प्रशंसा। जिस देवता को उन्होंने पाल पोसकर रखा है, वह इतने तत्काल, प्रामाणिक देवता हैं। उनकी सिंहासन के समीप से उनका आहार चोरी करने वाले का कोई खैर नहीं, इसका प्रमाण उन्होंने दिखा दिया।

इस आलोचना में भाग लेने वाले, मंदिर की पुनर्निर्माण के समय इकट्ठे हुए चंदे की एक बहुत बड़ी भाग डकार लेने वाला स्थानीय नेता, मंदिर की विभिन्न विभाग से क्रमागत चुराने वाले दो सेवक लक्ष्मी की दशा से रोमांचित होने के साथ-साथ भगवान उनकी चोरी पकड़ पाए हैं या नहीं, और अगर पकड़ लिए हों तो किस उद्देश्य के तहत अभी तक प्रतिशोध नहीं लिए, इस बारे में काफी दुश्चिन्ता में डूब उतरा रहे थे। और इसके फलस्वरूप वे लोग ठाकुर की सब से बढ़ चढ़कर प्रशंसा कर

रहे थे और उनकी तारीफ ठाकुर जी भी सुन रहे हैं, ऐसा उनका विश्वास भी रहा था।

पुजारी पंडित मगर विमर्ष भाव से गुमसुम अकेले-अकेले बैठे थे। जिस समय ठाकुरजी की प्रामाणिकता तथा प्रत्यक्षता उदाहरण से उद्‌बद्ध जनता ने हरिबोल की हर्षध्वनि किया, पंडित को अचानक यह अनुभव हुआ मानो, उसी समय ठाकुरजी की बिभूति सिंहासन छोड़कर चली गई। सिर्फ एक दीप्तिविहीन, अर्थहीन रूप ही पड़ा रह गया।

—यह क्या पंडितजी, तुम्हारा शरीर तो तवे की तरह धधक रही है। एक सेवक ने उन्हें छूते हुए कहा।

जीवन के अवशिष्ट कुछ दिन पंडितजी ने गुमसुम हो इतनी ही विनती की थी—प्रभु! अगले जन्म में यह पापिष्ठ जैसे जिह्वाविहीन जन्म ले, यही प्रार्थना है।

अपहृत टोपी का रहस्य

—बहुत वर्ष पहले की इस घटना को वर्णन करने के पीछे महारना बाबू या यूं कहें की उस समय के मछली, केंकड़े तथा चारुकला विभाग के मान्यवर मंत्री वीर बाबू की हंसी-मजाक उड़ाना जैसा निर्दय खयाल मेरा नहीं रहा है, इतना तो कम-से-कम आप लोग भी अवश्य कर लेंगे, ऐसा मेरा खयाल है । सिर्फ खयाल नहीं आशा भी है ।

महारना बाबू एक काफी मालदार आदमी थे। उनकी बहुत-सी जमीन-जायदाद थी । करीब पचास गांव भी रहे होंगे । हमारा गांव भी उनके इलाके में ही पड़ता था । और इतने बड़े इलाके में सिर्फ उनका ही एक दुमंजिला मकान था । स्वाधीनता प्राप्ति की ऐन पहले ही हवेली में नई सफेदी पोती गई थी । चूना चढ़ाया गया था । घने श्यामल अमराई के बीच धूप में चमचमाती हुई हवेली दूर सड़क से झिलमिलाती एक श्वेत विस्मय बिखेरती नजर आती । आस-पास के लोग हवेली को देखने आते । हवेली का एक स्वतंत्र ही आकर्षण था, किसी पर्यटन केंद्र जैसा । जनपद के निवासी भी उसकी सुन्दरता देखने आते । प्राय: आधी सदी के बाद किये गये उस पलस्तर तथा पोताई के पीछे जो विशेषता, प्रतीक तात्पर्य रहा है, उस ओर सभी का ध्यान जा चुका था ।

एक बहुत ही उदार, विवेकवान सज्जन के नाते महारना बाबूजी की बहुत ही प्रतिष्ठा रही थी । मेहमानों का अच्छी तरह आवभगत करना उनका एकमात्र खास शौक में शामिल था । छोटे-छोटे दो तलैया में उन्होंने बहुत-सी मछलियां छोड़ रखी थीं । तरह-तरह की मछलियां । उनकी गोशाला हर समय अच्छी नस्लों की गायों से भरी रहती थी । विशेष तौर पर वह एक खुशहाल तथा आदर्श ग्रामीण थे ।

ठीक इसी बीच हिंदुस्तान आजाद हुआ। आजादी के ऐन पहले तथा बाद में ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य तथा शूद्रों की घनी आबादी वाली इस पुनीत धरती पर एक नये वर्ग का उदय हो रहा था। कहना न होगा कि वह वर्ग था राष्ट्रभक्त देशप्रेमियों का वर्ग। न जाने वह कौन-सा ऐसा रहस्य था, जिसके नियम के आधार पर देशप्रेम एक सार्वजनीन आम रूप लेने के बदले, कुछ गिने-चुने विशेष लोगों के धंधे के रूप में विकसित हो रहा था तथा एक उपजाति का अलग से सृजन कर रहा था, इसका पता नहीं चल रहा था। गांव-गांव में ब्राह्मण, वैष्णवों के साथ कुछ-कुछ राष्ट्र-प्रेमी भी बसने लगे थे। इसी तरह से दिन व्यतीत हो रहा था।

इसी तरह की दो-एक राष्ट्रप्रेमियों की आवभगत में फिलहाल महारना बाबू की मत्सालय को आए दिन धंदोली जाती रहती, यह कोई छुपी हुई बात नहीं। सभी को अच्छी तरह से पता रहता। उसके बाद यथासमय महारना बाबू की दिल में भी देशप्रेम की लहर ठाठें मारने लगीं। बाद में मुझे पता चला था कि वह विधान सभा के लिए चुन लिए जाने के लिए भी काफी उतावले रहे हैं। इतना ही नहीं, बल्कि विधायक बन जाना ही उनकी एकमेव इच्छा भी रही थी। जिस घटना का संक्षिप्त विवरण, मैं यहां आप लोगों को देने जा रहा हूं, उसकी तैयारी की दिशा में वह उनका पहला ही कदम रहा था। बचपन में मैंने इस घटना को जिस तरह से समझा था, देखा था (क्योंकि मेरे ननीहर महारना बाबू का पड़ोस में ही था उनसे घर से लगा हुआ, और चूंकि मैं वहां कभी-कभार लंबे अर्से तक भी टिक जाया करता था, इसी से) उसे वर्णन करूंगा। आज हालांकि उन सब बातों को कलमबंद करते समय उस पर मेरी आयु के अनुरूप दृष्टिकोण का प्रभाव भी पड़ सकता है। और ऐसा होना स्वाभाविक भी है।

उस समय नवगठित मंत्रिमंडल में डिप्टी या सबडिप्टी मिनिस्टर आदि पद बनाया गया नहीं था। सभी मिनिस्टर लोग थे पूर्णत: मान्यवर मछली-केंकड़े तथा चाककला विभाग के मंत्री वीर बाबू का गांव हमारे जिले में होने की वजह उन्हें ही एक विपुल संबर्धना (आजादी की उस आदि काल में मंत्रियों की दैनंदिन कार्यसूचियों का एक प्रमुख अंश था

"संवर्धना" ग्रहण) ज्ञापन करने के बन्दोबस्त के साथ साथ ही उसी सूत्र से महारना को राजनैतिक दिवालोक में लाने को तैयारी भी उनके प्रवर्तकों ने लगे हाथ कर डाली।

देखते देखते जगह जगह तोरण द्वार खड़े हो गए। सड़क, राहों को चौड़ी तथा साफ़-सुथरा किया गया। महारना की एक बहुत ही बड़ी पुरानी बेंत की कुर्सी को एक सुन्दर कपड़े से ढंक दिया गया। कपड़े पर कसीदाकारी की गई थी। एक चित्र भी था गाढ़ा नीला और लाल रंग का। जिसमें दो बगुलों ने अपने चोंच में दो अत्यन्त ही सुन्दर मछलियों को पकड़ रखा था, प्रायः पन्द्रह दिनों तक आदर्श लोअर प्राइमरी विद्यालय की दुपहर बाद की तमाम पढ़ाई—बेंत की पिटाई अधिवेशन स्थगित कर दिया गया। बदले में लड़के-लड़कियों को स्वागत संगीत की शिक्षा दी गई। उस नई जमाने की बहुत से अदृष्टपूर्ण घटनाओं के बीच उस संगीत का जन्म भी एक खास घटना रही है। क्योंकि उस संगीत को रचने वाला कवि विद्यालय का भूत-पूर्व हेड पंडित महोदय काव्य प्रणयन की दिशा में किसी भी अभिलाषा या प्रेरणा की दृष्टांत के बगैर उस समय भी षड़सठ वर्ष तक जीवित रह चुके थे। लड़के-लड़कियां वैराग्य व्यंजक कीर्तन के सुर में प्रतिदिन घंटों तक अभ्यास करते उस संगीत की "घोष" आज तक मुझे याद है। वह टेक है—"आओ हे, आओ हे, आओ हे, मंत्री है, कैसे संभाल रहे तो धरती।" बाकी के पदों में मंत्री के आगमन के हेतु गांव के चारों ओर प्रकृति में कैसे अभावनीय परिवर्तन नजर आए थे। जैसे की पंछियों का एक निर्दिष्ट सुर में गाना, अचानक फूलों का ज्यादा महकना, यहां तक की खुद सूरज भी कैसे शर्मीला उल्लास प्रकट कर रहे थे, उन सभी का एक धारावाहिका विवरण पेश किया गया था।

यह लेखक जानता है, आजकल मंत्रियों का पूर्व गौरव अब नहीं रहा, मगर तब की बात कुछ अगल ही थी।

हम छोटे-छोटे बच्चे लोग बहुत सी समस्याओं के बारे में बातचीत किया करते—मंत्री खाता क्या है? पीता क्या है? सोचता क्या है? सोता है या नहीं? उसके पेट में मरोड़ होता है या नहीं? वगैरह।

मैं समझ रहा था कि महारना बाबू की उत्कंठा की कोई अंत न था।

हर दिन दोपहर में वह कम से कम डेढ़ घंटे के लिए सो जाते। यह उनकी बहुत ही पुरानी आदत थी। मगर मंत्री के आने के दस-बारह दिन पहले से ही उनका यह अभ्यास भी छूट गया था। बार-बार तमाम तैयारियों को तदारण कर लेने पर भी उनको संतोष नहीं होता था।

आखिर वह महिमामय दिन भी आ गया। गांव के तमाम बच्चे, बूढ़े तथा औरतों की उत्कंठित प्रतीक्षा को सार्थक बनाते हुए मंत्री जी का जीप आकर पहुंच गया। पहली वंदनवार तोरण के निकट ही जीप रुकवाकर मंत्री जी ने जमीन पर कदम रखा और महारना की अत्यन्त ही मोटा फूल माला ग्रहण की। उनकी तथा भारत माता की जयगान से चारों दिशा मुखरित हो उठी। संवर्धना मंडप की दूरी फिर भी एक फर्लांग होने के कारण मंत्री जी को जीप में बैठ जाने के लिए जब बार बार प्रार्थना की गई, तब उन्होंने जो कहा था, उसका सारांश है—भाग्य ने हालांकि उन्हें बड़ा बना दिया है फिर भी वह धरती पर कदम रखना ही ज्यादा पसन्द करते हैं।

जीवन दर्शन भरी इस आकस्मिक इस्तहार ने सभी को चमत्कृत कर दिया। सभी मंत्र मुग्ध से नजर आने लगे। उस पल भर की चमत्कृत चुप्पी के बीच एक दो बार अपने आप से निकल पड़े—चः चः के दो-एक शब्द भी सुनाई दिए थे।

मंत्री के आसपास चलते हुए, विशेष रूप से मंत्री जिस समय उन्होंने वजनदार बांह सर्पकाय महारना के कृतार्थ कंधों पर रखा, उस समय महारना खुली तौर पर रोमांचित हो उठे। उस समय उनकी आंखों में एक तरह की प्रशांति (परवर्ती जीवन में इस लेखक ने जो मृत्यु की ऐन पहले ही जीवन में सब कुछ पाए हुए बूढ़ों की आंखों में देखा है) तथा उदासीनता निखर उठी थीं, जैसे कि वह कह रहे हों—हे आत्मन ! इस मर जीवन में और अधिक क्या—अधिक क्या—अधिक क्या—तेरी चाह हो सकती है ? हाः !

जनता तरह तरह से मुंह खोले निरापद दूरी से आदमकद लकदक सफेद अतिथि को अपलक देखे ही जा रही थी. कुछ दूरी पर से उन्हें देख, उनकी व्यक्तित्व, पुरुषार्थ, प्रभुत्व आदी की जोड़ हिसाब करते हम सब

नाक बहता, पेट फूले, अधनंगे, मूढ़, गंवार, लड़के-लड़कियां आत्मग्लानि से पीड़ित हो रहे थे।

महारना के बंगले पर पहुंचने के साथ ही मंत्री तथा उनके पिछलग्गु अनुचर वर्ग ने काफी डोम पिया। आध घंटे के बाद दोपहर की खाना परोसा गया। पुलाव को घेरकर बीसियों तरह की सुपकव व्यंजन, दही, रबड़ी वगैरह परोसा गया था।

उसके बाद मंत्री ने विश्राम किया। उनके आराम में व्याघात न हो, उसके लिए पूर्व के तैयारी के मुताबिक सारा गांव प्राय हो वाक्शून्य हो गया, गरमी की दोपहर, फिर भी मंत्री के लिए जिस कमरों को चुना गया था, वह बगीचे की ओर की पोखर के सामने था। खुले झरोखों के राह काफी हवा आ रही थी। तिमि की तरह बपुमान मंत्री चार परस्त सेज के ऊपर सो गए।

महारना मुझे बहुत चाहते थे। उसी साहस तथा एक दायित्ववान शिष्ट बालक होने के आत्मविश्वास से धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ, मंत्री का कमरा और पोखर के बीच की बरामदे पर खड़ा हो गया। दुर्लभ व्यक्तियों की सामीप्य पाना उस उमर में मेरा अन्यतम उच्चाभिलाषा रहा थी। मंत्री का सोया होना ही उस अभिलाषा को चरितार्थ करने के लिए मेरे लिए एक सुअवसर था। हालांकि बड़े लोगों के बारे में मेरे जीवन में पहला मोहमुक्ति उसी समय ही घटित हुआ, क्योंकि मैं चकित होकर यह अनुभव किया कि किसी भी मरणशील आम प्राणियों की तरह मंत्री भी खर्राटे भरते हैं!

अपने उछाह तथा उच्चाभिलाषा में कुछ भाटा उतरता महसूस किया था उस समय। मगर ठीक उसी समय एक ऐसी घटना भी हो गई, जिसके फलस्वरूप मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया।

झरोखे के रास्ते मैंने देखा की सोये हुए मंत्री का अंडे की तरह केश मुक्त गंजी तथा चिकनी खोपड़ी से वियुक्त होकर उनकी टोपी पास ही एक स्टूल पर रखी हुई है। अचानक देखा, अत्यन्त अभद्र तथा शरारती फाजील झांडु पोखर की उस ओर की बाग से झपटता हुआ आया। खिड़की के अन्दर हाथ बढ़ाकर टोपी को उठाकर वह पलक झपकते ही

गायब हो गया।

मैं चीख भी नहीं सकता था—प्रथमत: झांडु के लिए मेरे दिल में ममत्व था (उसकी इस दु:साहसिक हरकत का परिणाम उसके लिए कितना भयानक होगा, यह सोचते ही मेरे दिल में एक बार भूकम्प हो गया) दूसरे मंत्री का खर्राटा और मंत्री का टोपी के बीच कौन-सा चीज अधिक मूल्यवान है, यह बात भी मैं उस समय निर्णय न कर सका था।

हालांकि मैं मामाजी को घर को चला आया, मगर कुछ ही पल में एक भयग्रस्त होहल्ला से आकृष्ट हो फिर से एक बार महारना को आंगन में जा पहुंचा। देखा, महारना जी वज्राहत सा खड़े हैं। मंत्री को पी० ए० को तमाम बदन में जैसे बाइखुजानी छू गए जैसे तिलमिलाकर वह गुर-गुराहट के साथ कह रहे हैं—मिस्टिरियस मिस्टिरियस। लोक संपर्क अधिकारी कह रहे हैं—टोपी गयी सो बात नहीं, मगर जिस ढंग से वह गई, वही सोचने की बात है। निश्चय ही यह सब कुछ एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं; देश के राजनीति पर इसकी प्रतिक्रिया क्या होगी, कौन जानता है! मंत्री कमरे के अंदर थे; मगर उनसे मिलने की हिम्मत किसी में भी न थी।

महारनाके शरीर से पसीना इस ढंग से छूट रहा था, मुझे तो लगा कि वह एक आइसक्रीम स्टिक की तरह पिघल पिघलकर आखिर में शीघ्र ही शेष हो जाएंगे। झांडु की बात कहूं या न कहूं, इस बारे में मेरे अन्दर जो उधेड़बुन मचा था। उनको ऐसे हालत में देखकर उस द्वन्द्व का अवसान हुआ।

जीवन में पहली बार एक वयस्क व्यक्ति की तरह मैं पेश आया। उंगुली के इशारे से मेरे पीछे-पीछे आने को महारना को संकेत दिया। एक सुबोध बच्चे की तरह उन्होंने मेरा पालन किया।

कुछ दूर अंतराल में ले जाकर झांडु का टोपी अपहरण विषय मैं उन्हें बताया। रोग निर्णय के लिए बहुत ही व्याकुल एक रोगी की बीमारी आखिर में पता चल जाए, मगर उस रोग के दु:साध्य होने का पता चले, उस समय मरीज की मानसिक अवस्था जैसे होनी चाहिए, महारना के चेहरे पर वही भाव तैरने लगा। उसके बाद माथे से पसीना पोंछ, मेरी

ठुड्डी में प्यार से हाथ सहलाकर वह बोले—बेटा, तुम यह किसी को भी मत बताना। तुझे मैं बाद में बहुत से लड्डू दूंगा।

मगर टोपी चोरी कि इस घटना ने वातावरण को मृत्युशीतल बना दिया। जो मंत्री इसको उसको देखकर अकारण ही चमचा भर हंसी बिखेर देते थे, किसी की पीठ पर हाथ फिरा देते थे। किसी की प्रार्थना सुन जरा-सा खांसी की कृपण आवाज सुना देते थे, वही इस समय कमरे के अन्दर से ऐसे निर्वाक, भयंकर गंभीरता बिखेर रहे थे, जिससे अपने आप कमरा तथा इन्सानों की बीच का फासला अपने आप बढ़ा जा रहा था।

मैं अपने दोस्त लड़कों के करीब जाकर देखता हूं, उनकी भी उत्कंठा की कोई हद नहीं। टोपी चोर अगर पकड़ा गया तो उसे फांसी होना अनिवार्य है। इसमें कोई शक की गुंजाइश नहीं। मगर गांव के बाहरी सीमांत पर, बरगद के पेड़ या शहर की जेल घर में वह काम होने वाला है, वही था मुख्य आलोचना का विषय। हमारे मध्य ऐसे महामूर्ख भी थे, जो सोचते थे कि वह टोपी जिसे मिलेगी, वह मंत्री बन जाएगा।

सूर्यास्त के कुछ देर बाद हालात में कुछ सुधार हुआ। महारना कमरे में जाकर मंत्री से क्या बोले क्या पता—मंत्री हंसते हुए बाहर निकल आए। तब तक उन्होंने जितने भी किस्म की हंसी हंसी थी अबकी बार की हंसी उन सभी यों से बेहतर था। तब तक उनके लिए करीबन आधा दर्जन टोपियां जुटा ली गई थीं। वह टोपियां दूर-दूर से लाई गई थी। किन्तु मंत्री खुला सिर ही सज्जित मंच की ओर चलने लगे थे। मेरी तरह अनभिज्ञ बालक को भी समझते देर नहीं लगी कि उनकी उस गंजा खोपड़ी से एक जातीय शहीद द्युति विकिरणि हो रही थी।

सभा मंच के सामने तब तक करीबन पांच हजार लोगों का जमघट हो चुका था। मंत्री जिस समय मंच पर पधारे, उस समय वह काफी संतुष्ट नजर आ रहे थे। उनकी वह पहले की छोटी सी मुस्कान धीरे-धीरे विकसित होकर उनके तमाम चेहरे पर जैसे फैलती जा रहा था। महारना की बहन की बेटी, जो कि किसी दूर जगह पर नवीं कक्षा में पढ़ने वाली एक मात्र बालिका थी। उसने जिस समय मंच पर जाकर मंत्री को फूल माला पहनाई, उस समय हमारे इलाके की इतिहास में एक नए जमाने का

सूर्योदय हुआ कहें तो भी अत्युक्ति नहीं होगी। क्योंकि ऐन सबके आगे ही एक नौजवान लड़की का एक पुरुष के गले में माला डालना, इससे पहले किसी ने नहीं देखा था। खासतौर से हमारे लोगों के लिए यह घटना सर्वथा नई थी।

उसके बाद—"आओ हे, मंत्री हे" स्वागत संगीत दो अदद हार्मोनियम, एक बेहला, दो मृदंग तथा करताल के जरिए गाये गए। (इसके कुछ दिन बाद स्वर्गारोहण करने वाले उक्त संगीत के कवि हेड पंडित महोदय ने उस दिन शर्माते सकुचाते हुए "गीत कैसा रहा" यही सवाल शताधिक लोगों से घूम घूमकर पूछा था।)

रिसेप्सन कॉमेटी की चेयरमैन होने के नाते अबकी बार भाषण देने की पारी महारना की थी। मैं मंच के निकट खड़ा हो देख रहा था, महारना बाबू बड़े अजीबो गरीब ढंग से हाथ पांव हिलाकर भाषण दे रहे थे—डर के मारे निश्चय। मगर, फौरन ही वह माइक के स्टेंड को पकड़े स्थिर होकर खड़ा होने में सफलता प्राप्त की और करीब एक घंटा तक वीर बाबू की हजारों त्याग भरे कर्मों के बारे में ब्योरेबार सुनाया। और जिनके बगैर मातृभूमि वीरबाबू जैसे लोगों को पाने से महरूम रहती, उनकी वही स्वगत पिता माता को जाति की तरफ से श्रद्धांजली दी।

जनता के सामने उनकी उस प्रथम परीक्षा में सफल होने से मुझे काफी खुशी हुई। मगर इसके फौरन बाद ही मैं जो कुछ सुना, वह मेरे जिंदगी की सबसे बड़ी विस्मयकर अनुभवों में से है। प्रिय पाठको, किन शैली में उस अनुभव का वर्णन करूं, सोच नहीं पा रहा हूं। बहुत से लोग अवश्य महारना को एक पक्का राजनैतिक उस्ताद समझ सकते हैं, मगर मुझे पता है कि एक निहायत ही अच्छा इन्सान के नाते उन्होंने इसका झूठा प्रचार किया था—हालांकि वह प्रचार आवेग प्रणोदित रहा था। उन्होंने पूरी आवाज के साथ कहा—भाईयो तथा बहनों, आप सभी ने मंत्रीजी की टोपी किस रहस्यमय ढंग से अदृश्य हुई इस बारे में सुन चुकी हैं। आप लोग सोच रहे होंगे कि वह चोरी हो गई है, मगर भ्राता और भगिनिओं, वह चोरी नहीं गई, हो ही नहीं सकती।

(ताली बजती हैं)

महारना बाबू के होंठों में एक रहस्यमय मुस्कान खिल उठी। मंत्री उनकी उपग्रह जैसी चमकती कानों तक फैली चंदिया को अत्यन्त ही तात्पर्यपूर्ण ढंग से हिलाकर हामी भरने लगे। महारना ने फिर कहा—तो, भाईयो और बहनों, टोपी की चोरी नहीं हुई तो वास्तविकता उसकी क्या हुई? कहां गई? क्या? किधर? इतना भर जानने के लिए आप लोगों का दिल जार जार हो रहा है। हां, हां, जरूर हो रहा है। तो सुनिए, आप लोगों के सवाल का जवाब, । हमारे इलाके के एक अत्यन्त ही संपन्न व्यक्ति टोपी को ले गए हैं; क्यों? सहेज के रखने के लिए। हां, हां, सहेज के रखने के लिए। यादगार के रूप में सहेजने के खातिर। सवाल उठता है तो फिर क्यों वह टोपी को सबकी नजरों से बचाकर ले गए? उसका कारण यह है कि मंत्री जी जान बूझकर टोपी कभी भी न दिए होते। वे मंत्री हैं, महान हैं, मगर क्या मजाल जो विनय में कोई उनसे बढ़ जाए? उनकी टोपी को एक सज्जन पवित्र चीज की तरह सहेजकर रखना चाहते हैं, यह जानकर हमारे मान्यवर मंत्री महोदय क्या कभी अपनी टोपी दे सकते थे? कभी नही?

विस्मय से फैले हजारों आंखों के सामने महारना ने अपनी पॉकेट से अंजुरी भर सिक्के भरा एक रूमाल निकाल उसे सबके सामने दिखाकर बोले—भाई और बहनो, हमारी वह टोपी लेनेवाले दोस्त ने यह एक सौ एक सिक्का मान्यवर मंत्री जी के हाथों में अर्पण करने के लिए हमसे अनुरोध किया है। मान्यवर मंत्री महोदय के जीवन के एकमेव व्रत-जनता जनार्दन की सेवा में यह अगर कुछ काम आ सके तो उनका जीवन धन्य होगा।

उपस्थित जनता में उस समय जो भावावेग था उस बारे में न कहें तो भी कोई फर्क नहीं। फिर विपुल तालियों की गड़गड़ाहट के बीच महारना ने रूमाल मंत्री जी को समर्पित किया। क्रमागत तालियों की गड़गड़ाहट से इस तरह का एक आत्मविस्मरणकारी समां बंध गई, जिसके चलते स्वयं वीरबाबू और महारना ने भी तालियां बजा डालीं।

उसके बाद मंत्री जी ने करीबन दो घंटे तक भाषण दिया। शेष में उन्होंने फिर से तालियों के बीच घोषणा की—हालांकि इस धन्य-धान्य

पुष्प भरे देश में टोपी की कोई कमी नहीं, मगर उस अज्ञात गुणग्राही, पारखी के सम्मानार्थ ही उन्होंने उस विराट सभा में खुले सिर बैठने का सिद्धांत लिया था ।

इस चमकप्रद घटना के बाद मैंने महारना की अक्ल की जितनी प्रशंसा की झांडू की बदमासी के चलते उन्हें एक सौ एक रुपया खर्च करना पड़ा था । इससे उतना कष्ट भी अनुभव हुआ था ।

उस रात हमारे इलाके के तमाम विशिष्ट व्यक्तियों ने मंत्री जी के साथ महारना के घर पर खानपान में योग दिया । सभी लोग बार-बार मंत्री की नंगे सिर की ओर बाइज्जत देखने के साथ-साथ उस महान टोपी चोर की बाबत आलोचना करते जाते थे ।

मगर उसके दूसरे दिन सुबह मैं जब महारना को देखा तो वे काफी ग्लानिबोध से पीड़ित हैं, यह समझते मुझे देर न लगी । मुझे देखते ही उनका सिर झुक गया था । वह कभी झूठ नहीं बोला करते थे, मगर जब बोले तो एक साथ हजार-हजार नर-नारियों के सामने बोल पड़े, भगवान की बात को छोड़ भी दें कम से कम मुझे इतना तो पता था कि वह भी अब और सत्यवादी नहीं रहे । मंत्री जी मगर काफी प्रसन्न नजर आ रहे थे । उस प्रसन्नता की परिमाण को देखते हुए, उसके परिणामस्वरूप हमें लगा कि वह दिन अब दूर नहीं जब हमारे इलाके में बड़ी-बड़ी सड़कें होंगी, पक्की सड़क । गांव में जल्द ही एक हाई स्कूल, यहां तक कि एक जच्चाखाना खुल जाना भी असंभव नहीं—इस विषय में लोग आपस में बातचीत करने लगे थे ।

महारना यथाविधि हंसते हुए हर काम की देख-रेख कर रहे थे, मगर यह तो मुझे ही पता था कि वह कितने विवादग्रस्त हैं, अंदर से कितनी छटपटाहट हो रही थी उन्हें । आखिर मंत्री जी का विदा होने का समय आया । बाहर के वरामदे पर सभी खड़े थे । मंत्री जी को उनके कमरे में इलाके के सबसे बड़े गिलास में दही का शर्बत दिया गया था । वह उसे धीरे-धीरे पीते हुए, भावावेग में कंठ अवरुद्ध हो जाने पर भी बोले—समझे महारना । हा:, हा:, और हा:, हा:, मुझे शायद नंगा होकर घूमना पड़े, हा:, हा:, मगर किया भी क्या जा सकता है । हा:,

हा:, लोगों के प्यार मुहब्बत को तो दबाया नहीं जा सकता, हा: हा: ।

दही शरबत पी लेने के उपरान्त मंत्री जी पोखर की ओर के बरामदे पर हाथ-मुंह धोने के लिए चले गए, पानी का मग लेकर महारना भी उन के पीछे-पीछे हो लिए ।

उधर के बरामदे पर मेरे अलावा और कोई नहीं था । मेरा वहां होना एकांत हो, ऐसा नहीं। कुछ समय पहले बागीचे की ओर से झांडू को मंत्री जी की अपहृत टोपी लेकर खेलता हुआ धीरे-धीरे पोखर की ओर बढ़ता देखकर मैं उधर चला आया था। झांडू किसी तरह भी मंत्री जी की नजर में न आए, मैं दिलोजान से यही चाहता था, जिंदगी में बहुत कम ही बार इसी तरह किसी काम के लिए मैंने इस तरह की चाहत की है।

हां, मैंने शायद अब तक आप लोगों को नहीं बताया कि झांडू किसी शरारती लड़के का नाम नहीं, झांडू एक बंदर है। वह भी किसी आलंकारिक भाषा या मुहावरे के अर्थ में नहीं, सचमुच वह एक नर बंदर है। दलपति नर बंदर से उसे बचाने के लिहाज़ से कभी उसकी मां ने उसे गोद में छुपाकर महारना के कोठे पर पनाह ली थी। महारना तब घर पर नहीं थे । उनके विवेकहीन नौकर ने बंदरिया को पीट-पीटकर मार डाला था। महारना जब लौटे तो सभी बातें सुनकर उनको इतना गहरा दु:ख पहुंचा कि करीबन डेढ़ दिन तक उन्होंने अन्न-जल त्याग दिया। उन्होंने बच्चे को बहुत ही स्नेह से पाला, फिलहाल झांडू नाम से मशहूर वह बंदर आधा पालतू तथा आधा जंगली बनकर रह गया है। बंदरों का हूजूम देखता है तो आदमियों के बीच भाग आता है, सबसे मसखरी करता है, सभी उसे सह लेते हैं, हम बच्चे लोग तो उसकी इज्जत भी करते हैं। मैंने घबरा कर देखा कि झांडू पोखर की उस ओर से मंत्री जी तथा महारना को देख-देख कर धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ा आ रहा है। मैंने एक बार इशारे से महारना को बताने की कोशिश भी की, मगर सफल नहीं हो पाया। देखते-देखते झांडू आकर दोनों के बीच धप् से बैठ गया। और एक बार टोपी को अपने सिर पर पहन फिर बहुत ही आहिस्ता इज्जत के साथ वीरबाबू की तरफ बढ़ा दिया ।

उस समय मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। देखा, महारना को

काटो तो खून नहीं। उनका चेहरा का रंग उड़ गया है। वे कांप रहे हैं। मंत्री जी बोल उठे—अरे, अरे, यह तो मेरी टोपी है। कोई सज्जन शायद इसे ले गए थे ?

महारना के चेहरे का रंग तेजी से बदल रहे थे। उत्तेजना के उस असहाय पल में उनकी मुंह से तक बहुत ही विस्मय करने वाली बात निकल गई। मरते हुए आदमी की आखिरी बात की तरह सुनाई दिया—हां, हां सर, यहीं वह सज्जन हैं।

वीर बाबू ने बहुत ही दयनीय भाव से किसी तरह पूछा—जी, क्या कहा आपने !!

मगर महारना और कुछ कहने की अवस्था में न थे। वे रो दिए। उसके दूसरे पल मैं और भी विस्मय हो ताकने लगा कि मछली केकड़े तथा कारुकला विभाग के मंत्री भी रो रहे हैं।

बाहरी बरामदे की ओर से पी० ए० का आवाज सुनाई दिया—सर, जीप रेडी है।

मंत्रीजी मुंह धोने के लिए लिया हुआ मग का पूरा का पूरा पानी एक ही सांस में गटक गए फिर जीप की ओर बढ़ने लगे। महारना भी पीछे-पीछे चलने लगे। उनके फूले-फूले चेहरों को लोगों ने विदाईकलीन दुःख का प्रभाव समझने लगे।

राजनीति की दिशा में महारना की अस्पृहा और अधिक बढ़ी हो तो मुझे पता नहीं। यह भी बहुत ही आश्चर्य की बात है कि कभी नंगा होकर विचरने के लिए तैयार बीरबाबू भी कुछ ही साल के अन्दर राजनीति जगत से विस्मृत हो गए।

न जाने मुझे क्यों ऐसा लगता है कि उनके जीवन के लक्ष्य में इस तरह के परिवर्तन के साथ उस टोपी से सम्बन्धित घटना का कहीं न कहीं गहरा प्रभाव जुड़ा है।

सीता के लिए वर

प्रख्यात कंट्रक्टर लालबाबू की बेटी वासन्ती का ब्याह आधी रात के समय सम्पन्न हुआ। इसमें कोई शक नहीं कि ब्याह बहुत ही धूमधड़ाके के साथ हुआ, क्योंकि इस उपलक्ष्य में अनुष्ठित-अनुष्ठान सिर्फ वासंती का ब्याह तक ही सीमित न था, बल्कि तीन-तीन प्रतापशाली प्रतिद्वन्दियों के ऊपर लालबाबू की विजय-झंडा फहराने का एक बहुत ही महार्थ अवसर भी था। क्योंकि सबसे बड़ी रकम की बोली बोलकर उन्होंने एक इंजीनियर पात्र को नीलाम में हासिल किया था।

लालबाबू के परिवार की वे तमाम गोपनीय बातें जो उनके इंजीनियर दामाद जर्मनी में पढ़ते समय लड़कियों से सम्बन्ध में जो तमाम उड़िउड़ाई अफवाहें उनके चारों ओर चक्कर काट रहे थे, उनका उल्लेख यहां प्रासंगिक नहीं है। धूमधड़ाके भरी रात के खत्म होते ही, लालबाबू के पड़ोसी स्थानीय कॉलेज की अध्यापक देवबाबू की छोटी लड़की सीता (हमारे अंतरंग गोष्ठी में सुपरिचित, वही बड़ी सांवली, सलोनी, लाडली लड़की) बरामदे में आकर इधर-उधर बिखरे ठंडे पटाखे, आतिसबाजियों के चिथड़े कागज के टुकड़ों, जंगीलाट साहबों जैसे इधर-उधर फिरते वरयात्रियों और बहुत सी चीजें तथा लोगबाग समन्वित परिवर्तित परि-स्थिति के कारण जिस समय पूछताछ करने लगी, सुबह के उसी मासूम मुहूर्त से ही, देवबाबू की स्वच्छ, शांत गृहस्थली की परिप्रेक्षी से हमारी यह कहानी आरम्भ होती है।

सीता के सवाल का जो उत्तर उसकी मम्मी ने दिए, उतना उसके लिए काफी न था। रहस्मय 'ब्याह' शब्द उसने बहुत बार सुना है। मगर वह इतना सटीक, इतनी वास्तविकता के साथ, उसकी सुपरिचिता वासंती

जैसी लड़की को केन्द्र बिन्दु बनाकर घटित हो सकता है, उसने सोचा तक नहीं था। तरह-तरह की गहने, साज-श्रृंगार में सजीसंवरी, लाज की मारी वासंती को वह एकाधिक बार झांक आई, तरह तरह की पकवान परोसे संभ्रांत उपभोक्ताओं के प्रसन्न चेहरों के ऊपर भी वह कितनी बार नजरें घुमा लाई। फिर उसने अपनी पिता माता की दायित्व-हीनता के लिए बहुत ही क्षोभ प्रकट किया की वासंती के ब्याह के समय क्यों उसे जगाया नहीं गया। श्री और श्रीमती देव के यथानुरूप अनुताप प्रकट करने पर भी सीता संतुष्ट नहीं हो पाई। जिस अनुष्ठान के बाद की बातें भी इतने दिलचस्प हों, उसका मूल अनुष्ठान कितना सुन्दर रहा होगा।

सीता ने जिद्द पकड़ ली—चाहे कुछ भी हो एक असली ब्याह वह देखेगी। उसके लिए तमाम रात भी जागनी पड़े तो भी कोई परवाह नहीं। उसके लिए यथाशीघ्र कोई न कोई व्यवस्था होना एकदम से जरूरी है। किस किस परिचित परिवार में विवाह उत्सव हो रहा होगा, बेटी को लेकर, दिखाने का वह क्या उपाय करेंगे, देवबाबू इन चिन्ताओं में जिस समय परेशान हैं, उसी समय उनकी गोद में बैठी सीता का चेहरा अचानक खुशी से खिल उठा। सीता अपने पिता के चेहरे पर प्यार से हाथ फिराती हुई बोली—डैडी, मैं एक अच्छी बात कहूंगी। मानोगे ?

देवबाबू ने जब हामी भरी तो बहुत ही प्यार से सीता बोली—डैडी, तुम खुद शादी कर लो मैं देख लूंगी।

देवबाबू ठठाकर हंस पड़े। उनको हंसता देखकर सीता काफी गम्भीर हो गई। झक मारकर देवबाबू को चुप हो जाना पड़ा। सीता की किसी भी बात को मजाल है कोई हंसकर टाल दे। देवबाबू को आखिर कैफियत देना पड़ा। वह बहुत ही अपराधी भाव से बोले—मैं, मेरी तो शादी हो चुकी है।

—जाओ मैं तुमसे नहीं बोलती, झूठ।

—सच बात है।

—किससे की ?

—तेरी मम्मी से।

उस समय देवबाबू को पता न था कि इस निष्कपट बयानी से वह एक कितना बड़ा तूफान का द्वार खोल दे रहे हैं। सीता उनके सामने खड़ी हो उन्हें इस तरह लालपीली होकर घूरने लगी कि वाकई वह इसके सशंकित हो उठे। फिर सीता पलटकर धीरे-धीरे कमरे की ओर बढ़ने लगी। पीछे से सिर्फ इतना पता चल रहा था कि वह निदारुण अभिमान से उपजे क्रोध और क्षोभ तथा शोक से उसकी दोनों गाल फूल-फूल जा रहे हैं। घबराए देवबाबू सीता की इस अचानक भावांतर का कारण समझ नहीं पाए। फिर चकित हो वह अपनी पत्नी की शरण में पहुंचे। बहुत ही सोच-विचार करने के बाद आखिर काफी मेहनत के बाद उन्होंने सीता से जो कहलवा पाए, उसका सारांश है कि वासंती की ब्याह के समय उसे जगाया नहीं गया तो न सही, मगर खुद डैडी और मम्मी के ब्याह के समय उसे क्यों जगाया नहीं गया? वे इतना स्वार्थी हैं? मगर यही डैडी उसे कितना प्यार का दिखावा करते हैं?

तबकी बार सीता का अभिमान तोड़ने में काफी समय लगा। बहुत मुश्किल से ही कहीं वह मानी। एक साथ इतने सारे अमरूद, यहां तक की चाभी भरने से बीड़ी पीने का अभिनय करता एक भालू का खिलौना, किसी से भी कुछ नहीं बना। डैडी की इस धोखाधड़ी, विश्वासघात ने सीता को बहुत ही अभीभूत कर दिया। हालांकि देवबाबू ने एक बार समझाने की भी कोशिश की कि उनके ब्याह के समय सीता नहीं थी। मगर उनकी उस साफगोई को, कैफियत को सीता मजाक में उड़ाकर बोली—जाऽ, जाऽ, लो और सुनो, मैं कब कहीं नहीं थी? दुर्गा पूजा के समय मैं थी, तबकी बार जब बन्दर का नाच हुआ था, तब थी, सिर्फ आपके ब्याह के समय में नहीं थी? बेवकूफ बनाते हो ठीक है, मुझे न जगाया न सही। एक दिन आप भी जब नींद में सोए होंगे, न, मैं भी ब्याह कर लूंगी। उस समय दाल-चावल का भाव मालूम पड़ेगा।

सीता का भावांतर का अगली सीढ़ी का प्रारम्भ यहीं से होना है। क्योंकि उसका स्वतः निकल पड़ा आखिरी फैसला सुनकर देवबाबू बोल उठे—हां, अभी जाकर कहा तूने सही बात कही है। सीता, तू खुद ब्याह कर लेगी तो सभी बातों का समाधान हो जाएगा। मन भर कर सभी बातें

देखेगी। और किसी का ब्याह का इंतज़ार किस लिए ? उसकी जरूरत भी क्या है ?

सीता ने ठंडे दिल से कुछ पल को सोचा। हां बात तो ठीक है। जलसा भी होगा। और मम्मी डैडी को वाजिब सीख देने की बेहतरीन मौका भी हाथ लगेगा। सीता काफी प्रसन्न और उत्साहित नजर आने लगी। मगर, बस कुछ पल के लिए ही। फिर उसके बाद एक नई समस्या दिखाई दी। वर कहां है ? पति की भूमिका — जैसे बातें मानना, एक ही ऐनक में बाल संवारना, थिएटर, सिनेमा दिखाने के लिए रिक्शे में बिठाकर ले जाना इत्यादि विषय में मम्मी और डैडी को दूल्हा और दूल्हन की रूप में आंखों के आगे रखकर सीता ने जो धारणाएं बनाई थीं उसके साथ ज्यादा से ज्यादा बिना लड़ाई-झगड़े के खेल पाने के कर्त्तव्य को मिलाकर वह मन ही मन एक उपयुक्त पात्र की खोज करने लगी। मगर जल्द ही उसे पता चल गया ही, काम उतना सहज नहीं है। दूर के रिश्ते के जो बूढ़े दादा बीच बीच में आते हैं, उसे बहुत प्यार करते हैं, जिनकी सफेद लम्बी-लम्बी दाढ़ी स्नेह, ममता की एक कल्पतरु जैसी है—जिनसे कभी टॉफी, कभी संतरा मिलता ही रहता है, खोज से पता चला कि वह भी शादी-शुदा है। हां पड़ौस की ऊंची इमारत के बरामदे से एक आध बार उसे हाथ के इशारे से लालबाबू का छुटकु बुलाता है। एकाध बार सीता वहां गई है। उसके पास तरह-तरह के खिलौने का अंबार है, यह भी उसी समय देखा है। एक बार सीता ने जिसे बहुत ही मीठा और पका हुआ केला समझ कर उठा लिया था, देखने पर वह मिट्टी का बना हुआ था। मगर जो भी हो, मिट्टी के बना उस केले को उसने उठा लिया था। इसलिए उस छोकरे ने उसे कितना जोर से नोच डाला था, जिसके लिए उसे उससे भी कहीं कष्टप्रद दवा लगाने पड़ी थी।

मगर दूसरे पात्रों की अभाव में वह छोकरा भी कोई बुरा नही होगा। और क्या किया जाए, शादी जब करनी है तो करनी ही पड़ेगी। मगर उसकी नाचने की जो आदत है, उसकी मरम्मत करनी होगी। जैसे कि उस बिड़ी खोर भालू की नुकीली पूंछ को वह पीट-पीट कर भुर-कुश कर डाला है।

सोच विचार के बाद सीता ने अपनी डैडी के आगे यह प्रस्ताव रखा। डैडी मगर बात को टाल देने की कोशिश करने लगे। फिर प्रयास में अपने को सफल न होता देख वह गम्भीर हो बिटिया को समझाने लगे चूंकि लालबाबू बहुत बड़े आदमी हैं, इसी से उनके लड़के के साथ शादी करने के लिए काफी पैसे की जरूरत होगी।

—पैसे ? सीता रहस्यमयता के साथ हंसती हुई बोली—आपके पास अगर पैसे न हों तो मैं दे दूंगी। सीता के पास विभिन्न सूत्र से संग्रहीत प्रायः तीन रुपये जमा थे। उसे वह तत्क्षण कन्यादानग्रस्त पिता की सहायता के लिए दे देने को मचलने लगी। देवबाबू रस विमर्ष से हंसने लगे। बुद्धिमान कन्या ने समझा कि तीन रुपयों से अधिक, बहुत-बहुत अधिक रुपयों की आवश्यकता है।

बाजे-गाजे बराती, मिठाई तथा बड़े लोगों के घर विवाह वगैरह के साथ पैसे के संबंध के बारे में एक अस्पष्ट धारणा के कारण यहीं से सीता के भावांतर में फिर से एक नए परिवर्तन का प्रारंभ होने लगा। सिर्फ इतना ही नहीं, मम्मी डैडी तथा पास-पड़ोस की कुछ भद्र महिलाओं की बातों से सीता कुछ बात समझने लगी। उसे यह जानकर अचरज हुआ कि वासंती, उस दिन जिसका इतने ठाठबाट से ब्याह हुआ, वह अब दिन रात रो रही है। हालांकि लालबाबू ने अपने दामाद को ढेर सारे पैसे देने में कोताही नहीं की; यहां तक कि वासंती की एक पैर की अंगुली बचपन से अत्यधिक छोटी होने से उसके मुआवजे के बाबद अलग से नगद नौ हजार रुपये भी उन्हें देने पड़े हैं। फिर भी इंजीनियर दामाद के घर वासंती से हर समय चिढ़ते हैं और शराब की बोतल से पीटकर उसकी नाक भी तोड़ डाली है।

सीता को तमाम दुनियां बहुत ही विचित्र लगने लगी। वासंती की नाक वाकई कितनी सुंदर थी ! इंजीनियर लोग बड़ी-बड़ी इमारतें बनाते हैं और नाक भी तोड़ते हैं ! इन तमाम विरोधी बातों के बीच उसे कोई समानता नजर नहीं आती थी। हालांकि वह हर एक दिशा में सब-कुछ समझने के लिए कोशिश करती रहती थी। धीरे-धीरे वह काफी गंभीर होने लगी। अकेली समय काटने लगी। उसकी इस गंभीरता से उस

छोटे-से परिवार का वातावरण जैसे अचल हो गया। जिस समय वही बूढ़े दादा घूमने के लिए आए, उन्हें लगा, जैसे बैठकखाने का वह बीड़ीखोर भालू भी इस परिवर्तन से चकित हो गया है। दादाजी सीता के चेहरे पर मुस्कान बिखरने लगे। फौरन ही एक अकेला पल ढूंढ़कर सीता दादाजी से पूछ बैठी—कि उसके लिए एक मनचाहा वर कहां, किस तरह से मिल सकता है। दादाजी ने कहा—मेरी सीता के लिए वर कहां से मिलेगा? स्वयं रामचंद्रजी के सिवाय। उनकी बातों में सहज मजाक और अपनापन का निखार था।

फिर से एक बार सीता के चेहरे से प्रसन्नता छलकने लगी। राम-सीता कहानी उसे पता है उसकी इस जटिल समस्या का इतना सुंदर, सलोना समाधान कोई नहीं सुझा पाया था। दादाजी से लिपटकर वह फर्माइश करने लगी—रामचंद्रजी को बुलाकर लाना ही होगा। बूढ़े दादाजी ने कहा उनकी तो वह ताकत रही नहीं। मगर सीता अगर मन-ही-मन खूब व्याकुल होकर पुकारे, तो रामचंद्रजी अवश्य आएंगे। क्योंकि वह चूंकि सीता है, और रामचंद्रजी चूंकि भगवान हैं, इसलिए वह अवश्य ही आएंगे।

—बाजेवाले, बराती सब ही आएंगे? सीता ने सवाल किया।

—हां हां सभी आएंगे, दादाजी कहते हैं।

सीता ने आंखें मूंद कुछ पल को सोचा। उसके बाद चैन से सांस लेकर उठ खड़ी हुई। अचानक उसके चेहरे से गहरी प्रसन्नता बरसने लगी। फिर सीता ने अपना मुंह दादाजी के कान के पास ले जाकर मिन्नत की—"मैं आज रात में ही उन्हें बुलाऊंगी। तुम मगर बाबा, मम्मी से बताना नहीं। नहीं कहोगे न?"

उस दिन दिनभर सीता बहुत ही कम बातचीत में लगी। मगर उसके चेहरे में वही रहस्य और प्रसन्नता की अपूर्व आभा प्रस्फुटित होती रही। सांझ की दीया-बाती के कुछ ही समय बाद से वह सबको जल्दी से खाने-पीने से निबट कर सो जाने की मिन्नत करने लगी। बिस्तर पर जाते हुए उसने कहा—बाबा, तू और मम्मी अच्छी तरह नींद से सो जाना। रात में कोई भी उठेगा नहीं। मगर पलभर बाद ही अपने को संभाल न पाकर कहा—उठते तो मजा देखते। देवबाबू दादाजी से पहले से ही सब कुछ

सुन चुके थे। एक मिश्रित भाव से वह सिर्फ हंसने लगे थे।

सुबह हुई। उस दिन और दिनों से कुछ विलंब से सीता ने आंखें खोलीं। विगत रात की बात, देवबाबू सब भूल चुके थे। मगर सीता की ओर नजर पड़ते ही एक चौंक के साथ जैसे सभी बातें उन्हें याद आ गईं। सीता सोकर उठते ही उनके ऊपर झूल जाती, गीत गाती। मगर उस दिन उसके चेहरे पर गांभीर्य तथा स्निग्धता का एक अवर्णनीय निखार झलक रहा था। उसे जो कुछ कहने से भी बस वह जरा सी हंस देती—थोड़ी सी करुणा की मुस्कान। मगर मुंह से कुछ कहती नहीं। जैसे वह एक स्वप्न-लोक में विचर रही हो। जिस लोक में वह एक बहुत-बहुत बड़ी हस्ती हों, जहां बाबा और मम्मी सिर्फ सामान्य बच्चे भर हों।

उस दिन रविवार था। सीता की इस अभिभूत हालात को दिन भर देखने के बाद देवबाबू जैसे कुछ डर से गए थे। शाम को वह सीता को हंसाने के लिए, बातें करवाने के लिए बार-बार कोशिश करने लगे—उसे [illegible]र को उठाकर, नचाकर, गुदगुदाकर। सीता मजबूरन हंसकर बातों-[illegible]नों में जो कुछ कह गई, उससे देवबाबू सिर्फ इतना ही समझ पाए कि [illegible] रात में बाबा, मम्मी को नींद से न जगाकर रामचंद्रजी से ब्याह कर [illegible] है—सुंदर, धनुर्धर किशोर के रूप में, चंदन चर्चित, पुष्प विभूषित [illegible]र जो आए थे, कितने स्वर्गीय वाद्य, संगीत तथा द्युतिमान देवदूतों के साथ।

और देवबाबू ने यह भी समझ लिया कि तब तक उस सपने को सीता सत्य ही मान रही है।

देवबाबू ने हंसते हुए अपनी पत्नी को बुलाकर सभी बातें बताईं और दोनों मिलकर हंसते हुए गौर किया कि सीता का चेहरा धीरे-धीरे गंभीर होता जा रहा है। आश्चर्य। सीता की वह गंभीरता और कभी भी हटी नहीं।

इस घटना के कुछ दिन बाद देवबाबू और उनकी पत्नी के मुख पर पर स्पर एक दु:संवाद था—वासंती की आत्महत्या। इस आलोचना के बाद देवबाबू ने सचेतन होकर देखा, सीता आंखें फैलाए उनकी ओर एकटक निहार रही है। उस नजर के मायने कुछ भी क्यों न रही हो, देवबाबू को

लगा, सीता यही तो पूछ रही है—बताइये, कौन-सा सपना है ? उस दिन इतनी धूमधाम से हुई वासंती का ब्याह या मेरा ब्याह, जिसे तुम लोग सपना कहकह हंसी मजाक में उड़ा रहे हो ।

इस बीच तेईस वर्ष बीत चुके है । देवबाबू से बिछुड़ कर मेरे बहुत दूर चले आने के बाद एक आध बार उनसे भेंट भी हुई है । सुना था, देवबाबू सीता के ब्याह के बारे में बंदोबस्त कर रहे थे, हालांकि सीता मना किए जा रही थी । आज यह दहला देने वाली बुरी खबर मिली है—मामूली अस्वस्थता के बाद सीता का अचानक निधन हो गया है ।

लुवुर्भा जंगल का एक संवाद

प्रिय श्री संपादक जी महोदय,

नमस्कार। आपने मुझ पर जो जिम्मेदारी सौंपी थी, उसे मैंने भरसक परिश्रम तथा निष्ठा के साथ पूरा किया है। मेरे इस अनुसंधान का विवरण इस प्रकार है—

लुवुर्भा के जंगल में प्रवेश करते ही मैं भौंचक्का रह गया था। सारे जंगल में उस समय मेला लगा था। उत्सव मनाया जा रहा था। कुछ तरुण गर्दभ परमोल्लास में संगीत परिवेशण कर रहे थे। गांधर्व विद्या में गर्दभों के अटूट आत्मविश्वास के संबंध में मुझे पहले से ही पता था। इसी के चलते उनके मोहभंग करने का हर एक प्रयास व्यर्थ साबित होता, यह जानकर मैंने चुप रह जाना ही उचित समझा। मगर कुछ एक जंगली सूअरों के आपत्तिजनक व्यवहार से मैं काफी दु:खी हूं। वे सब नाच रहे थे और मुझसे वाहवाही लूटने की आशा लिये मेरी ओर बार बार अर्थपूर्ण नजरों से तांक रहे थे। उनको ऐसा करते हुए देखकर मैंने कहा—आप लोगों का उद्यम अवश्य ही सराहनीय है। मगर नृत्य के लालित्य के लिये कटीदेश नामक एक अवयव की भी कांफी जरूरत रहती है। इसी से आप लोग किसी और ही कला की चर्चा में अपना मनोनिवेश करें तो वेहतर होगा।

यह सुनते ही वे काफी उत्तेजित हो उठे थे। उनके नृत्य गुरु ने मुझसे कहा—आप जैसे एक जनतांत्रिक सांवादिक से हमें ऐसे अजनतांत्रिक मंतव्य की कतई आशा नहीं थी। हमारे सर्वमान्य संविधान में नृत्याभ्यास का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त है।

मुझे मजबूरन कहना पड़ा कि अधिकार एक बात होती है और विवेक

एक और बात होती है।

उन्होंने भड़क कर कहा—हमारा पेट निर्मल विवेक से अंटा पड़ा है। तुम बेवकूफ हो, फिर भी तुम्हारा भाग्य अच्छा है जो तुम जैसों को हमारे संपर्क में आने का मौका मिला है। हम तुम्हारे अंदर भी कुछ कलाबोध का उद्रेक अवश्य कर देंगे।

इसके बाद वे मुझे घेरकर नृत्य करने लगे। करीब तीन घंटे तक उनके बीच फंसे रहने के बाद मैंने कातर होकर कहा—भाइयो, मेरी काफी उन्नति हो गई है। अब मैं उन्नत कलाबोध से लबालब भर चुका हूं। इतना सारगर्भक टुइस्ट नृत्य मैंने पहले कभी, कहीं भी नहीं देखा।

मुझे यह वक्तव्य लिखित रूप में भी देनी पड़ी और फिर कहीं मैं उनके चंगुल से मुक्त हो मेरे पूर्व परिचित शियार प्रवर के साथ भेंट करने के लिए चल पड़ा। लुवुर्भा जंगल में मैंने जो तीन दिन बिताए, उस मध्य मुझे बार-बार अनुरूप हालात से सामना करना पड़ा—हालांकि मैं एक खास घटना की तहकीकात के लिए वहां गया था—लुवुर्भा जगल में फिलहाल सार्वजनीन तौर पर कैसे स्वाधिकारप्रमत्त वातावरण रहा है, सिर्फ उसी को सूचित कर देने के ही अभिप्राय से ही मैंने इस दृष्टांत का उल्लेख किया है।

संपादक महोदय, शियार प्रवर के अग्रज शियार पुंगवा फिलहाल लुवुर्भा के एकमेव आस्थावान अस्थायी मंत्री रहे हैं। (अब से मैं उन्हें सिर्फ प्रवर और पुंगवा के नामों से ही अभिहित करूंगा। कृपया यह नोट कर लें।)

प्रवर सामान्यतः मुझे देखते ही भावविभोर होकर गले से लगा लेता था। मगर अबकी बार वह सिर्फ आंखें झपकाते ही रह गया था। फिर पूछा था—क्यों भाई, कैसे हो कहकर वह अपने रिस्टवाच को बार-बार देखने लगा था। मगर मैंने जब उनको बताया कि हम संप्रति लुवुर्भा में संघटित विप्लवात्मक परिवर्तन के संबंध में एक विशेषांक निकालने के बारे में सोच रहे हैं, सिर्फ तभी वह मेरे साथ उनके पूर्व-अनुराग की बातें अचानक याद कर पाए और मुझसे लिपट कर अनुयोग करते हुए कहा—तुमने तो हमको बिलकुल ही भुला दिया। मिनिस्टर साहब और

हम बहुधा तुम्हारे बारे में ही बातें करते रहते हैं।

मैंने गौर किया कि प्रवर पुंगव को पहले की तरह 'भाई' कहकर संबोधित करने के बजाए अब उन्हें 'मिनिस्टर साहब' कहने लगे हैं।

प्रवर के साथ मैंने पूरा एक दिन बिताया था। बहुत से तथ्य भी एकत्र किए। बाद के दो दिनों में मैंने तीन विशिष्ट जंगली भैंस, गयल संघ के मुख्य संचालक, उल्लू महासंघ की संपादक, अखिल लुवुर्भा हिरण संसद की समानेत्री, अन-विषधर सर्प सभा तथा विषधर सर्प महासभा की दोनों चेयरमैनों और व्याघ्र परिषद के अवैतनिक कोषाध्यक्ष तथा सर्वोपरि दिवंगत शासन मुख्य सिंह शेखर की पी० ए० (फिलहाल उन्हें सादे पोशाक वाले श्वापद लोग उन्हें नजरबंद कर रखा है।) के साथ मिला। बहरहाल दुःखी पी० ए० को छोड़ बाकी सब लोगों ने घटना का स्थूल विवरण भर ही दे पाये। इससे ज्यादा कुछ मालूम हो न पाया। मोटी तौर पर घटना तथा उसके अंतराल में होने वाले व्यापारों का ब्योरा इस प्रकार है—

लुवुर्भा जंगल के मंत्रीमंडल के सभापति के रूप में सिंह शेखर बीस वर्ष लंबी अवधि तक सत्तारूढ़ थे। जिस अधिवेशन में सिंह शेखर सभापति चुने गये थे उसके बाद कभी किसी ने मंत्रिमंडल को मंडलाकार में बैठते हुए नहीं देखा। किसीको मालूम तक नहीं था कि समग्र शासनक्षमता वृद्ध सेनापति के हाथों में थी। किसी-किसी का कहना है कि सभापति मंत्रीमंडल के सदस्यों को अपनी संतान की तरह समझते थे, उनके ऊपर किसी भार को देकर उन्हें भारांक्रांत करने के लिए कभी नहीं चाहते थे। और कोई-कोई यह भी कहते कि सभापति के सुशासन और व्यक्तित्व के प्रभाव से जंगल में कोई जटिल समस्या जन्म ही नहीं लेती थी। फलस्वरूप सदस्यों के लिए करने को कुछ भी काम नहीं होता था।

सदस्यों का भी कोई अभियोग नही था। वे अपनी-अपनी माइक्रोफोन स्टैंड संभाले सुख से कालातिपात कर रहे थे—यह भी मालूम हुआ है कि वे अपने-अपने माइक लिए जंगल का एक-एक अंश टूर करते और भाषण देते। अपना-अपना कंठस्वर तथा लुवुर्भा पर्वत शृंखला से आती उसकी प्रतिध्वनि को सुन-सुन कर आत्म सम्मोहित-सा जीवनयापन करना उनकी

आदतों में शुमार हो चुका था। एक-दो उद्भावनपटु मिनिस्टर स्व-स्व वचना-मृत अधिक-से अधिक मात्रा में सेवन करने के लिए अपने कानों में चोंगे भी जोड़ लिया करते थे।

धीरे-धीरे यह माक्रोफोन का नशा दूसरे लोगों में भी फैलता चला गया। शादी-ब्याह, व्यापार यहां तक कि सभी क्षेत्रों में धीरे-धीरे ज्यादा-से-ज़्यादा शक्तिशाली एंप्लीफायरों के जरिये संगीत या मामूली-से-मामूली घोषणाएं भी प्रचार की जाने लगीं। खासतौर से शियार लोग इस दिशा में अधिक ऋणी रखते थे—इसका प्रमाण भी मिलता है। सूर्यास्त के समय नदी के किनारे एकत्रित हो वे न सिर्फ माइक पर हुआं हुआं करते थे बल्की हर रोज कुछ एक प्रौढ़ सियार अमुक समय अमुक झाड़ी के चारों ओर समवेत 'हुआं-हुआं गान गोष्ठी' आयोजित होगी, वे प्रबल चीख-पुकार के साथ माइक्रोफोन पर इस बात की भी उद्घोषणा करने लगे थे।

संपादक महोदय से एक आध बार सभापति सिंह शेखर ने कहा भी कि—देखो, हुआं-हुआं का सामूहिक गान एक प्रागैतिहासिक अनुष्ठान है। और यह एक ऐसी अपरिवर्तनीय वास्तविकता है कि जो प्राज्ञपुरुष लोगों ने इसका प्रवर्तन करने के बाद से आज तक इसका वक्तव्य तथा गायन-पद्धति में कोई भी परिवर्तन नहीं किया। इसे माइक पर प्रचार करने से और ज्यादा क्या लाभ हो सकता है?

किंतु सिंहशेखर के ऐसे निवेदन पर भी हालात में कोई सुधार नहीं हुआ। फिर सिंहशेखर ने अचानक एक दिन एक विधेयक जारी कर दिया। इसका सारांश यह है कि—एक दूसरों को सम्मान प्रदर्शन करना सभ्यता का एक बड़ा प्रतीक है। इस दृष्टि से माइकदंड को सभ्यता की बल्कि असभ्यता का मानदंड कहना अत्युक्ति नहीं होगी। सवाल है, हम माइक को दूसरों के आनंद के लिए, उसके सहमती से उपयोग में लाते हैं—या दूसरों के विरक्ति के बावजूद उस पर हमारे अहंकार प्रणोदित तथा-कथित आनंद को जबरन लादने के लिए उपयोग कर रहे हैं? इच्छुक श्रोतामंडली की आग्रह के व्यतीत माइक की अन्यथा व्यवहार, रास्ताघाट या पशुपद के अंदर इसकी कान फाड़ डालने वाली चीख-पुकार असहाय लोगों के ऊपर हिंसाचार के अलावा क्या है? हो सकता है कोई हिरन

अस्वस्थ हो, हो सकता है कि कोई खरगोश उस समय कविताई कर रहा हो और कुछ भी न हो तो ऐसा भी हो सकता है कि कोई केवल खामोशी को ही पसंद करने वाला रहा हो—तुम्हारे परमोल्लास की स्टिमरोलर से उसका चित्त को कुचल डालने का कोई अधिकार तुमको नहीं है।

इस हुक्मनामे के बाद ही कहीं लुवुर्भा जंगल में शांति स्थापित हुई। घने वृक्ष लता के कुंजों से बहुत दिन के बाद फिर से कबूतर, कपोत, कोयल का मीठा-मीठा संगीत सुनने को मिला।

मगर मंत्रिमंडल के अन्य सदस्यों के दिल के अंदर अशांति की चिंगारी भड़कने लगी। आज तक कभी जिस बारे में वे सोच तक न पाते थे अब उस बारे में यानी की सिंहशेखर को पदच्युत करने के बारे में वे सोचने लगे। उन्होंने फैसला किया कि चाहे कुछ भी क्यों न हो कोई न कोई जुगत बनाकर सिंहशेखर को हटाना ही पड़ेगा। इस बारे में काफी तेजी के साथ वे सोच-विचार करने में जुट गए थे।

स्वनामधन्य मनस्तत्वविद एक उल्लू ने मुझे इस बारे में जानकारी देते हुए बताया था कि सिंहशेखर जी क्षमतालोलुप होकर सभापति के सिंहासन पर चढ़ बैठे थे, दरअसल बात ऐसी नहीं हैं, असलियत तो यह है कि बेचारे सत्ता छोड़ने की ही बात को भुलाए बैठे थे, बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा की भूल बैठे थे। पशु साधारण सुख थे। वे अपने कर्तव्य किए जा रहे थे बस।

इसी तरह दो वर्ष बीत गये। सभापति सिंहशेखार समान उछाह के साथ आसन संभाले शासन चलाये जा रहे थे। इधर माइक्रोफोन छिन जाने से, अन्य सदस्य लोग पगलाए जा रहे थे।

एक दिन दोपहर के समय मंत्रिमंडल के अन्यतम सदस्य शियार-पुंगव को सभापति सिंहशेखर ने अपने साथ मध्याह्न भोजन करने को आमंत्रित किया। उस दिन पहली बार के लिए सभापति ने गौर किया कि पुंगव अत्यंत घबराये हुए नजर आ रहे हैं। वह जब उसका कारण पूछने लगे तो पुंगव ने विनम्र होकर कहा कि जंगल की भली-बुरी बातें सोच-सोचकर उनकी इस तरह स्वास्थ्यहानि हुई है। विस्मित तथा उत्फुल्लित होकर सिंहशेखर ने कहा—हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई। पुंगव, हमें

पता ही नहीं था कि जंगल के भलेबुरे के विषय में हमारी तरह दूसरे लोग भी इनने चिन्तित हैं। कभी-कभी मुझे आशंका होती थी कि हमारे बाद जंगल में अराजकता फैल जाएगी। मगर आज हमारी वह चिंता भी दूर हो गई। अब तो हम बूढ़े हो चुके। एक न एक दिन तो मृत्यु सुनिश्चित है। अब हम निर्द्वंद होकर उस समय अपने आपको मौत के हवाले कर पाएंगे पुंगव।

एक दिन सिंहशेखर की मृत्यु भी हो सकती है, यह बात पुंगव या अन्य किसी सदस्य ने कभी सोची तक नहीं थी। आज अचानक ऐसी एक संभावना से पुंगव पुलकित हो उठे और एक ही सांस में एक सुराही शराब गटक गए। सभापति उनकी इस हरकत को पसंद न कर पाने से भी मेहमान को सम्मान दिखाने के खातिर खुद भी मात्राधिक शराब पीने के लिए मजबूर हो गए।

वहां से विदा लेकर पुंगव परमोल्लास में गीत गाते हुए जंगल के प्रांत में स्थित नदी के किनारे की ओर दौड़ने लगे। धीरे-धीरे सुराही भर शराब का नशा उनके व्यवहार से स्पष्ट होने लगा था।

जिस समय वह नदी के किनारे पहुंचे, उस समय सूर्यास्त होने लगा था। "हुक्के हो अनुष्ठान" में सम्मिलित होने के लिए समूची जंगल की शियार मंडली वहां यथाशीघ्र उपस्थित हो गई।

पुंगव की चेतना में मद्यपानजनित प्रतिक्रिया का प्रथम शिकार हुआ उनका कालज्ञान। सभापति एक दिन नहीं रहेंगे, उनकी मृत्यु होगी, इस पुलकप्रद संभावना को "सभापति नहीं रहे" कहकर वह समवेत सियार मंडली के सामने उद्घोषणा कर गए।

शियार मंडली कुछ पल के लिए तो हतवाक् रह गए। फिर निदारुण शोकोच्छवास में तमाम जंगल प्रकंपित करने लगे। इस अभावनीय दुःखातिरेक में क्रमशः जंगल के दूसरे प्राणी नदी की ओर आकृष्ट होकर आने लगे। पितृप्रतिम सभापति अब और इस लोक में नहीं रहे, यह सुनकर तमाम स्तब्ध रह गए, फिर तो आर्तनाद और रुदन का एक लंबा सिलसिला चल पड़ा।

जंगल के तमाम प्राणियां आंसु ढरकाते हुए सभापति के निवास भवन

की ओर गिरते-पड़ते भागने लगे। लुवुर्भा पर्वतशृंखला की अनुच्च अंश की एक निराडंबर गुफा में वृद्ध सभापतिजी का निवास था। उस दिन पुंगव के चले जाने के बाद वह मात्राधिक मद्यपान से बेसुध होकर पड़ गए थे। उन्हें गहरी नींद भी आ गई थी।

अरण्य के ऊपर चंद्रोदय हो रहा था। उस रहस्यावृत्त परिवेश में क्रमशः आबालवृद्धवनिता महामहिम सभापति की गुफा के नीचे आकर समवेत होने लगे। वे जब गुफा के निकटवर्ती हुए तो उनके आर्तनाद बंद हो चुके थे। वे अब सिर्फ ठंडी आहें भर रहे थे।

पुंगव ने गुफा के अंदर प्रवेश किया, और ऐन उसी वक्त ही उनका नशा काफुर हो गया—वह कितनी भयंकर भूल कर बैठे हैं झोंक में आकर? अचानक उसे महसूस कर वह थर-थर कांपने लगे।

ठीक उसी समय बंदर वंशोदभव, चरागे-रौशन मोहन मर्कट नामक एक महत्वकांक्षी युवक सदस्य उचक कर पत्थर के एक ऊंचे चबूतरे पर चढ़कर खड़ा हो गया और दिवंगत सभापति का यशोगान करना आरंभ कर दिया तो समवेत पशुसमाज में क्रंदन उठने लगा। यह होहल्ला, रुदन, हाहाकार सुनकर अचानक सभापति नींद से चौंककर जाग उठे। बाहर की उस विशाल पशु-समावेश'को देखकर वह चकित रह गए। फिर विह्वल नजरों से पुंगव की ओर देखने लगे।

पुंगव ने बेहाल-सा जीवन की बाजी लगाकर किसी तरह कांपते हुए स्वर में कहा—यह आप क्या कर बैठे महाराज। आप शायद भूल बैठे कि आप अब मर चुके हैं।

नशे और नींद की खुमारी में डूबते-उतरते वृद्ध सभापति हतवाक् हो उसे तकने लगे। पुंगव ने फिर से कहा—आपके देहावसान पर प्रजावर्ग शोक प्रकट करने बाहर आ पहुंचे हैं।

—तो क्या मैं सचमुच मर चुका हूं, क्या तुम पूर्णरूपेण निश्चित हो पुंगव? विमूढ़ सभापति ने शंका प्रकट की।

—मैं क्या महामहिम इस पर तो जंगल का तमाम पशुसमाज निश्चित है। पुंगव ने कहा।

वृद्ध सभापति शोक से अवरुद्ध हो अपने शरीर के एक-एक अंग को

घबराकर देखने लगे। फिर कहा—मगर, सच बताओ पुंगव, न जाने क्यों मैं खुद ही निश्चित नहीं हो पा रहा हूं कि मैं मर चुका हूं। बड़ी उधेड़-बुन में पड़ गया हूं। आखिर उपाय क्या है ?

—आप जैसे प्राज्ञ, प्रजा के हितैशी सभापति के लिए ऐसा द्वंद शोभा नहीं देता महामहिम। आप मृत हैं। यह बात आपको मान लेनी चाहिए। पुंगव ने अबकी बार अपेक्षतया दृढ़ होकर कहा।

कुछ पल तक दोनों ही नीरव रहे।

गुफा के बाहर पशुकुल 'दिवंगत' सभापति के मृत्युशोक में आह भरते हुए विपुल जयध्वनि कर रहे थे। अपार भीड़ के गगनभेदी जयनाद से गुफा इस तरह निनादित हो रही थी कि सभापति बार-बार भयभीत हो सिर के ऊपर दृष्टि निक्षेप कर रहे थे।

फिर सभापति ने थरथर कांपते कंठ से कहा—तो मैं अब क्या करूं पुंगव ?

पुंगव ने कहा—चिंता की कोई बात नहीं है महाराज। आपको क्या करना होगा, मैं बताए देता हूं, बस एक मिनट रुकिये।

इसके बाद पुंगव गुफा के बाहर जाकर एक ऊंचे पत्थर पर खड़े हो गए। उन्हें देखकर पशुसमूह स्तब्ध हो गया। पुंगव ने गंभीर कंठ से कहना प्रारंभ किया—भाइयो और बहनो, हमारे पितृप्रतिम, देवोमय, महामहिम सभापति अब हमारे बीच नहीं रहे। वह आज मृतक हैं, मगर हमारे लिए उनके अप्रतिम प्यार, ममत्वबोध, जो सदैव ही हमारे लिए उनके दिल में रहा, आखरी सांस तक रहा, इसीके तहत उनकी आत्मा स्वर्ग-गगन पथ में हमें दृश्यमान होगी और खासतौर से आप लोग यह बात भी याद रखियेगा कि वह महान आत्मा अपनी पार्थिव शरीर के साथ ही स्वर्ग सिधारेगी। तो भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूं कि…'।

विशाल पशुसमूह सांस रोके खड़ा रहा। पुंगव ने दुबारा गुफा में प्रवेश किया। फिर सभापति सिंहशेखर से कहा—तो आपने सुन लिया न महाराज। और वक्त जाया न करें। मैं बाहर जाकर जयध्वनि करता हूं। इसके साथ ही आप बिजली की तेजी से पहाड़ की शिखर की ओर चले जाएं फिर पहाड़ की उस तरफ उतर कर दौड़ते हुए जंगल पार कर निकल

जाएं। आप मृत हैं या जीवित हैं, अब सोच-विचार करने का समय नहीं रहा। आप इस विषय पर बाद में आराम से सोच-विचार कर लीजिएगा।

पुंगव ने बाहर जाकर विपुल जयनाद किया। हजारों कंठों से वह जयघोष फिर-फिर दुहराया गया। इसी के मध्य पशुकुल ने चमत्कृत होकर देखा कि चंद्रालोक में स्वर्ण की तीर-सा उनके अपने प्रियतम महामहिम सभापति श्री सिंहशेखर पहाड़ की चोटी से स्वर्ग की ओर अदृश्य हो गए।

संपादक महोदय, बाद में जो कुछ घटित हुआ वह आपको पता ही है। उस दिन, आधी रात के समय हमारे शहर में अचानक एक बूढ़े सिंह का आविर्भाव होना तथा फॉयर ब्रिगेड तथा पुलिस की सहायता से उसे मार डाले जाना—इस घटना की यही पृष्ठभूमि रही है।

अपेक्षतया अब लुवुर्भा जंगल में पुंगव ही शासनकर्ता रहे हैं। वह विनय तथा सम्मान से बहरहाल सभापति का पद व्यवहार करने के बदले "मिनिस्टर" कहला रहे हैं। मैंने जिस.समय जंगल से विदा ली। उस समय पुंगव अपनी प्रशासननीति के संबंध में भाषण दे रहे थे। एक सौ एंप्ली-फॉयरों के जरिए तमाम जंगल में वह भाषण गूंज रहा था।

कन्यायन

राजधानी के समीपवर्ती जंगल तथा लुवुर्भा पहाड़ी के ऊपर अचानक वर्षा उतर आई। रिमझिम के फुहार पड़ने लगे। अकेला घूमने को निकल आया राजकुमार बारिस से बचने के लिए एक बड़े-से वृक्ष की आड़ लिये खड़ा हो गया।

हवा सनसनाती हुई चल रही थी। मूसलाधार बारिश हो रही थी—कि तभी राजकुमार चौंक उठा। इस तेज मूसलाधार बारिसमें भी हवा तूफान की परवाह किये बिना सामने कुछ दूरी पर कोई चीज धीरे-धीरे डोल रही थी। जंगली फूलों की कोई डाली या झाड़ी तो हो ही नहीं सकती—क्योंकि वह डोलने के साथ-साथ दौड़ भी रही थी। हिरन भी नहीं है वह, क्योंकि इस सनसनाती तूफानी बारिश के बीच भी उसकी खनकती हंसी साफ गूंज रही थी।

कूदती-फलांगती हुई पिघले सोने-सी दमकती, लकदक करती हुई एक नौजवान लड़की जब उसके ऐन सामने आकर पहुंच गई तो राजकुमार ने चीखकर कहा—अरी ओ लड़की, ऐसी आंधी-तूफान में भी क्या कोई ऐसा भीगता-भागता फिरता है?

लड़की कुछ पल के लिए तो चुप रही फिर उसने कहा—जी, देख लो, मैं फिरती हूं। ओह, यह बारिश, तूफान कितना अच्छा लग रहा है। कितना मोहक? कहती हुई वह जैसे आई थी वैसी ही कूदती-फांदती एक ओर को आंखों से ओझल हो गई।

राजपुत्र को अचानक यों लगा जैसे अब तक उसके चारों ओर बहता-चीखता आंधी-तूफान उसके अंदर ही कहीं हहराकर चलने लगा है। बिल-कुल दिल के अंदर। कहीं कलेजे के समीप। और वह जैसे तूफान के अद-

रूनी झोंकों और झटकों से थरथराने-कांपने लगा है।

जब तक तूफान शांत हुआ, तब तक राजपुत्र को गहरी नींद आ गई थी। न जाने कब तक वह सोता पड़ा रहा। जब आंखें खुलीं तो चारों ओर चमचमाती हुई धूप बिखरी पड़ी थी।

राजपुत्र एक ठंडी आह भरकर अपने आपको समझाने का व्यर्थ प्रयास करने लगा कि इस घनघोर तूफानी बारिश के बीच उस कूदती-भागती लड़की, उसके साथ बातचीत महज एक सपना भर ही थी और कुछ नहीं। फिर एक ठंडी सांस लेकर जो कुछ घटित हो गया था, उसे भुलाने की कोशिश करने लगा।

मगर ठीक उसी समय एक हिरन के छौने के साथ होड़ लगाती हुई लड़की आकर उसके सामने पहुंच चुकी थी। अब की बार राजपुत्र ने अपने धड़कते दिल को थामकर किसी तरह गहरी सांस ली। फिर चिल्लाकर कहा—ऐ लड़की, इतनी तेज धूप में कोई ऐसे दौड़ता फिरता है। लड़की एक पल तो चुप रही, फिर कहा—जी हां, देखिये न, यह धूप, यह सूरज कितना कुछ चमत्कृत लग रहा है ?

राजपुत्र चुप हो रहा। कुछ कहने का मौका ही नहीं मिला उसे। जब तक वह कुछ बोले, उसके पहले पलक झपकते ही वह लड़की जैसे आई थी, वैसे ही झाड़ियों के बीच कहीं गुम हो गई। राजपुत्र ने अपनी आंखों को धिक्कारा—राजपुत्र की आंखें, फिर भी सामान्य झाड़ियों को भेदकर देख नहीं पातीं। धिक्कार है, लानत है ऐसी आंखों पर…!

राजपुत्र फिर अपने महल में लौट आया। महल में आकर पानाहार के लिए कम-से-कम जितनी जरूरत है सिर्फ उतना ही छोड़कर अपनी जबान बन्द रखी। उसके खास नौकर की रिपोर्ट से मालूम हुआ कि वह हर दो मिनट बाद ठंडी आहें भरा करता था और ये आहें क्रमान्वय से बढ़ने लगी थीं।

—यह पहली नजर में प्यार का आसार है हुजूर। विचक्षण महा-मन्त्री ने राजा साहब से अर्ज की।

—पहली नज़र में प्यार! हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई है महा-मंत्री। हम काफी प्रसन्न हैं। राजपुत्र से हम ऐसी ही तेजी की अपेक्षा

रखते थे। अब ढुंढ़वाओ कि वह सौभाग्यशालिनी लड़की कौन है। हमें विश्वास है कि हमारे इकलौते राजकुमार के ठंडी आहें भर-भरकर अपने आपको समाप्त कर डालने के पहले ही हमें तुम्हारी रपट प्राप्त हो जायेगी।

शाम होते न होते ही महामन्त्री ने राजा साहब के सामने अपनी रपट पेश कर दी—अफसोस की बात है महाराज, वह कोई राजकुमारी या मन्त्री-कुमारी नहीं, पहाड़ के ऊपर एक अकेली कुटिया में रहने वाले एक गरीब लकड़हारे की इकलौती लड़की है। उसकी मां का देहान्त हो चुका है। मगर देखने-दिखाने में परियों की तरह ही बेहद सुन्दर है, इसमें कतई शंका नहीं।

यह सुनकर राजा साहब ने कहा—हमें लकड़हारे को खान बहादुर बनाने में कितना समय लगेगा ? हम उसे खान बहादुर बना देंगे। मगर एक शर्त है सेहत, खूबसूरती तथा व्यावहारिक शिष्टाचार में लड़की बिलकुल परफैक्ट और मॉडर्न होनी चाहिए। दरअसल बात यह है महामन्त्री जी, अब तुमसे क्या छिपाना, हालांकि यह कॉफी गोपनीय बात है, फिर भी तुम्हें तो पता होगा, इधर दो-तीन पीढ़ियों से हमारे राजवंश में कोई अनुपम सौन्दर्य का अधिकारी हो नहीं पाया, इसका हमें काफी दुःख रहा है। हमारे पूर्वज सौभाग्यशाली रहे थे क्योंकि उनके समय में फोटोग्राफी नाम की कोई चीज थी ही नहीं। इसीसे वे लोग अपने इच्छानुकूल सुन्दर-सुन्दर चित्र बनवाकर महल की दीवारों पर जड़ देते थे, चाहे उनके रूप कैसे भी क्यों न रहे हों। मगर अब इस कमी को पूरा करने के लिये केवल एक ही उपाय शेष बचा है कि राजमहल में एक परफेक्ट सुन्दर बहू को लाया जाए, जो सभी प्रकार से सुन्दर हो। इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं। कम-से-कम हमारे बाद की पीढ़ियों में तो यह कमी महसूस न हो। तुम्हारा कहना है कि लकड़हारे की बेटी अनिंद्य सुन्दरी है। क्या परियां सब तरह से परफेक्ट सुन्दरी हुआ करती हैं ? रहने दो, रहने दो, इतनी जल्दबाजी की भी क्या बात है ? बाद में सोच-विचार कर बता देना। सौंदर्यशास्त्र के बारे में भी सूक्ष्मातिसूक्ष्म जानकारी रखना किसी महामन्त्री के लिये उतना जरूरी नहीं होता। जितना जल्द-से-जल्द हो सके

इस क्षेत्र में प्रवीण सौन्दर्यशास्त्रियों को भेजकर लड़की के बारे में पूरी तरह से छानबीन करो। हां, इस बीच राजकुमार के लिये काफी बड़ी मात्रा में ऑक्सीजन का भी बन्दोबस्त किया जाये, ऐसी हमारी आज्ञा है।

महीने-भर बाद ही विशेषज्ञ-मंडली के सदस्यों ने आकर राजा साहब के समक्ष अपनी-अपनी रपट प्रस्तुत कीं—

—और सब तो ठीक है महाराज। मगर लड़की जरा अधिक शोख और चंचल है। धूप, वर्षा की फिक्र किये बगैर इधर-उधर धमाचौकड़ी मचाये रहती है।

—वाजिब चाल-ढाल जब तक वह सीख न ले तब तक एक आदमी हर समय छतरी लिये बराबर उसके साथ दौड़धूप करता रहे, ताकि वह धूप और बारिस से बची रहे। इसका जल्द-से-जल्द बंदोवस्त किया जाए, ऐसी हमारी आज्ञा है। राजा साहब ने आदेश दिया।

—महाराज, और सब तो ठीक ही समझिए, लेकिन हर समय हंस-हंसकर बातें करना उसकी आदत-सी बन गई है।

—महामन्त्री, इस पर हमारी आज्ञा है कि राज्य के सबसे बदसूरत दो मनुष्यों को हर समय उसके साथ तैनात कर दिये जाएं। जब वह हंसने लगे तो वे दोनों उसको मुंह चिढ़ाएं। हमें विश्वास है, जल्द ही उसकी यह बीमारी भी दूर हो जायेगी।

—महाराज सब कुछ ठीक होने पर भी उसका एक दांत बस यूं ही थोड़ा-सा बड़ा लगता है।

—उसे निकलवाकर एक असली सोने का दांत जड़ दिया जाये।

—महाराज, मैं अब क्या विनती करूं, बस एक मामूली-सी बात है, उसकी बाईं आंख के पलकों के ऊपर अकारण ही एक छोटा-सा तिल है।

—प्लास्टिक सर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी। राजा साहब ने फौरन फरमाया।

हुजूर, लड़की को तो अपेंडिसाइटिस नहीं है, मगर हमको कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं कि यह रोग उसके परदादा को था।

—इस चांस पर विश्वास मत करो महामन्त्री। एक बार ऑपरेशन करवा के देख लो। अगर कोई ऐसा कारण हाथ लगे तो उसे भी तुरन्त

दूर करवाओ —

मगर धीरे-धीरे सौ सदस्यों की विशेषज्ञ मण्डली ने बारीकियों के साथ लड़की की कुछ ऐसी सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथा हर संभाव्य त्रुटियां गिनाने लगे कि उन्हें दूर करने के लिये किसी किस्म के खास निर्देश देने के बदले राजा साहब ने समझदारी का परिचय देते हुये सिर्फ सिर हिला देना भर को ही बेहतर समझ, सिर हिलाने लगे थे।

फिर काफी सोच-विचार करने के उपरांत राजा साहब ने अर्जेण्ट तार भिजवाकर सात समुद्र पार विदेश से एक अत्याधुनिक सौन्दर्य-विज्ञान की कम्पनी का विशेषज्ञ मण्डली को बुलवाया।

जब विशेषज्ञों की यह टोली आ गई तो लड़की के सर्वांगीन सौन्दर्य का कांट्रेक्ट उन्हें दे दिया गया। लड़की की शारीरिक तथा मानसिक सौन्दर्य विकास की तमाम उत्तरदायित्व उन्हें देकर आखिर लड़की उन्हें सौंप दी गई।

फिर जंगल कटवाकर पहाड़ के ऊपर तक सड़क बनवाई गई। तरह-तरह की विचित्र मशीनें ऊपर चढ़ाई गईं और पहाड़ के ऊपर एक वातानुकूलित खूबसूरत बंगलो पर, जो खासतौर पर विशेषज्ञ मण्डली के रहने के लिये बनवाया गया था, वहां कम्पनी की चर्म विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ, चक्षु, हार्ट, नर्व, एटिकेट, स्माइल, ब्रो स्पेशलिस्ट और न जाने कितने ही स्पेशलिष्ट डॉक्टरों ने अपने कंट्रेक्ट पूरा करने के लिये दिन रात दिलोजान से जुट गये।

पांच वर्ष के बाद ही कहीं उनका काम शेष होने में आया - राजा साहब की खुशी का ठिकाना न रहा - और लगे हाथ शादी की तारीख भी तय कर दी गई।

ठीक समय पर राजन्यवर्ग तथा अपने अमात्य-परिजन से परिवेष्ठित हो महाराज और राजपुत्र ने पर्वतारोहण किया।

लड़की हाथ में वरमाला लिये राजकुमार के स्वागत को शर्माती-सकुचाती तैयार खड़ी थी। उसके चेहरे से अटूट सौन्दर्य फूट रहा था। हकीकत तो यह है कि किसी ने भी कहीं, एक साथ इतना सौन्दर्य तथा इतनी मोहक जानलेवा मुस्कान देखी न होगी। इस कल्पना के परे खूब-

सूरती निहारकर सभी हक्के-बक्के हो चित्र-से जहां के तहां स्तब्ध हो खड़े रह गये।

कम्पनी डायरेक्टर की खास रखरखाव में संगीत की मधुर मोहक धुन, तालों पर थिरकती-सी लड़की आगे बढ़ने लगी, राजकुमार की ओर। राजपुत्र के गले पर ऐन जिस समय वह वरमाला डालने वाली थी, ठीक उसी समय न जाने ऐसा क्या हो गया कि एकाएक लड़की का तमाम शरीर, अंग प्रत्यंग शिथिल होने लगे। चेहरा कुम्हलाकर फक्क पड़ गया। वह चलते-चलते निश्चल बुत बनकर ठिठककर रुक गई।

कम्पनी डायरेक्टर घबराकर अपने असिस्टेंट लोगों को न जाने क्या-क्या निर्देश देने लगा।

—क्या हुआ ? राजा साहब ने भी चौंककर पूछा।

—कुछ नहीं हुजूर। बस दो मिनट में ही सब ठीक हो जाएगा। दर-असल बात यह है कि लड़की को सभी ओर से एकदम परफैक्ट बनाने के प्रयास में, हमने न सिर्फ उसकी कुदरती असली दांत, बाल ही बदले, बल्कि हृदय, यकृत वगैरह बहुत-सी सूक्ष्मातिसूक्ष्त शारीरिक संयन्त्र भी उनकी संभाव्य त्रुटियां तथा अस्थायित्व को नजर में रखकर बदल डाला। हमने पूरी ईमानदारी के साथ अपना प्रोग्राम पूरा किया और उनके स्थान पर मोस्ट रिलाएबल स्थेटिक लिंबस भी फिट कर दिये। इन सभी जटिल वैज्ञानिक कार्यक्रमों के बीच एक दिन लड़की की वही गतानुगतिक चीज, जो सभी जीवित प्राणियों में होती है, उसे आप चाहें तो जीवन या आत्मा या प्राण पखेरू, जो भी कह लें, वह निकल गया। मगर हम भी कहां चूकने वाले थे। हमने तत्काल ही विकल्प व्यवस्था ग्रहण कर ली, वह बातें करेगी, गीत गाएगी—सब कुछ कर पाएगी। चमत्कारिक इलैक्ट्रानिक्स व्यवस्था। मगर कभी कभार एकआध पल के लिए यह कलपुर्जे रुक भी सकते हैं। मगर वह देखिए—सब ठीक हो गया है।

लड़की के चेहरे पर फिर से खोई रौनक लौटने लगी थी। वह संगीत की मद्धिम ताल पर धीरे-धीरे वरमाला लिए राजपुत्र की ओर बढ़नेलगी।

मगर तब तक मूढ़ भावप्रवण राजपुत्र एक अयोक्तिक शोक से निढाल हो जमीन पर गिर चुका था। उसकी हृदयक्रिया भी बन्द हो चुकी थी।

कुतुरी आपा

ऐसे ही चिलचिलाती सुनसान दुपहर में कुतुरी आपा की बात अक्सर याद आती है।

हुहराती हुई बहती लू के थपेड़े, जो गालों को चुनचुनाती हुई निकल जाती हैं और उस ओर जो अकेला पीपल का पेड़ है, जिसकी डाल पर बैठे कौवों की कांव-काव में गरमी की दुपहरिया की अलसाई नींद जब पलकों से दूर हो जाती है तो आज भी एक तरह की प्यास में कुछ पल के लिए मन बेचैन होकर अकुलाने लगता है। जबकि यह कोई बहुत ही अनमोल प्यास नहीं, शायद इस समय ग्लास भर शर्बत ही इस प्यास को बुझा दे। मगर फिर भी—

मगर इस "मगर" में कोई रोमांच नहीं, क्योंकि कुतुरी आपा थी ही ऐसी बहुत ही बेढंगी मोहक और मैं भी आयु में बहुत ही नगण्य था, ठीक "वर्णबोध" किताब की प्रख्यात मेंढकी तक बमुश्किल पढ़ लेने वाला।

वंशधारा नदी के मीलों फैले बालुई रेत के मैदान का एक साधारण सा प्रांत, जहां से गुणुपुर गांव का आरंभ होता है, जहां बहुत से धतूरे तथा भेजरी के झुरमुट के झुरमुट फैले हैं और इन सबसे धीरे कुछ छोटे-छोटे डाकबंगले भी हैं। उसीमें से एक में हम ठहरे हुए थे। पीछे की ओर फैला रेतीला मैदान जब गर्म हो उठता, उस समय पास ही मिलजुलकर खड़े वाकहीन शाल के जंगल एक अनसुनी यातना में टूट पड़ते। उस समय घर के खाली-खाली निर्जन वातावरण से मैं क्रुद्ध हो उठता। मैं घर छोड़कर चुपचाप बाहर भाग आता था।

इसी तरह भागकर एक दिन वंशधारा की सूखी पठार पर दोपहर को क्या करूं-क्या न करूं की उधेड़बुन में जोरों से लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-

राइट करता था और शायद बहुत ही करुणा भाव से अपने पर खीझ रहा था, ठीक उसी समय मुझे गोद में भर लेने के लिए, पता नहीं कहां से कुतुरी आपा जिस तरह अपनी भारी भरकम वजनदार शरीर को डुलाती हुई दौड़ी आ रही थी, वह मेरा जीवन का एक अविस्मरणीय करुण दृश्य है। कुतुरी आपा के पसीने से सराबोर सीना और बाहों के बीच मैंने निस्तेज हो रोना बंद कर दिया था।

कुतुरी आपा सभी के घर में दूध पहुंचाया करती। धीरे-धीरे जब उसके साथ मेरा संपर्क बढ़ा, हमारी घनिष्टता हुई, उस समय पता चला कि उसका प्रचलित नाम परिवार का दिया नहीं है, बल्कि उसने अपने गुणों से ही वह नाम पाया है। इतनी ही स्पर्श प्रवणा थी कि, शरीर को बस छू लेना तो दूर, किसी किवाड़ बंद घर में वह बंद हो, और वह खिड़की की राह से देखे कि कोई उसे गुदगुदाने का इशारा भर कर रहा हो, तो बहुत ही कातर हो ओमां, ओबा, अरे दैयारे इत्यादि बहुत-सी 'ओ' तथा "अरे" लगाकर ऐसे चीखने लगती थी। उसके इस करुण आर्तनाद से पत्थर को भी पिघल जाना चाहिए। इसीसे उसका नाम "कुतुरी आपा" पड़ा है। वह आपा है, क्योंकि उसे और किसी रूप में ग्रहण करना निरापद नहीं।

हर दिन दुपहर में, जबकि मेरा मन किसी को अपना खेल साथी के रूप में पाने को मचलने लगता, हालांकि अपरिचित स्थान के बच्चों की भाषा, आचार, सब कुछ मुझे अलग-थलग रखता, उस समय बजार की फेरी से निपट कर कुतुरी नानी हमारे घर आती और मुझे बाहर न छोड़ने की बात कह सुलाने का वादा करती, मजुरी के रूप में हमारे घर खा-पी लेती। पहले पहल मेरे जिद्दीपन से उसे मुसीबत में पड़ना होता। एक दिन जब और कोई उपाय न बचा तो मेरी आंखों में निंदिया रानी को बुलाने की सोच बोली—गीत सुनाऊं ?

मैंने कहा—सुनाओ।

जब वह सुर पकड़, बहुत ही आहिस्ता आहिस्ता कोई गीत गाने लगी तो पहली पंक्ति सुनते ही उसके गाल पर एक तमाचा जड़कर हुक्म दिया —चुप करो।

बहुत जोरों से वह चौंकी थी। मगर अचानक उस एक दिन के झमेले के बाद मैं उसका काफी पालतू बन गया था। हमारे पड़ौसी डिप्टी पयोधर बाबू की छोटी लड़की कुमारी टेमी की एक सेल वाली टार्च थी। वह जब दिन दहाड़े ही उनके घर की ओर से मुझे आकर्षित कर उसे जला-बुझाया करती, तब मेरे पुरुषत्व को काफी चोट पहुंचती। एक दिन किसी मेले के अवसर पर बाजार जाकर मैंने ठीक उसी तरह की एक टार्च खरीदवायी। इसके लिए मुझे काफी जिद करनी पड़ी थी। मगर आधी रात को, जिस समय टार्च का सपना देख मेरी आंखें उचट गईं, उस समय पता चला की बाजार से लौटता हुआ मैं चपरासी के गोद में ऊंघ गया था और उसी अवसर में टार्च हाथ से फिसल कर कहीं गिर गई है। फिर जब मैं दुबारा टार्च के लिए मचलने लगा तो मेरी बातों को किसी ने नहीं सुना। जबकि इसके लिए मुझे पहले से भी ज्यादा रोना-धोना पड़ा था। मैंने भी गुस्से में आ खाना नहीं लिया, हांडीघड़ा फोड़ा और जब कुछ खाना पड़ा तो आखिर मार खानी पड़ी। दोपहर में जब बिस्तरे पर ओंधा पड़ा, मुंह छुपाकर मैं सिसकी भर रहा था, तभी कुतुरी आपा ने चुपके से मेरे कानों में कहा—रोओ मत। मैं तुझे एक बड़ा सा टार्च ला दूंगी।

मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा—कहां है, लाओ, दो !

वह बोली—आज नहीं, और किसी दिन। फिर मेरे प्रश्नों के उत्तर में वह जो कुछ बोली, मैं केवल चुपचाप प्रशंसा भरी आंखों में उसे निहारता रहा और कोई उपाय न था। वंशधारा नदी के दूसरे छोर पर जो विक्रमपुर गांव दिखाई देता है, वहीं कहीं उसकी सुंदर, अकेली, हाथी की दांतों से बनी आलीशान हवेली है। वहां चिमनी, दिया या उस प्रकारकी कोई चीज नहीं जलती, खाली जलने बुझने वाला टार्च सब ओर फिटहुए हैं, जो हर समय जलते रहते हैं। वहीं से लाकर वह मुझे एक टार्च देगी। वहां सोने-चांदी के पलंग भी हैं। वह काफी गंभीर हो मुझे यह सब बता रही थी।

मैंने बहुत ही उल्लसित हो पूछा था—तू वहां क्या करती है ?

मन के मुताबिक खाती हूं, पीती हूं, सोती हूं, गीत गाती हूं।

मैंने पूछा—तू गीत गाती है तो सुनता कौन है ?

वह बोली—वही ।

—वह कौन ?

कुतुरी आपा मुंह पर पल्लु देकर हंसने लगी ।

मैंने फिर पूछा—बता न, कौन, तेरा बेटा ?

—हत्…

—और फिर, तेरी मां ?

—धत्…

मैं उसके चेहरे को भकुआए-सा देखने लगा । उसने अपने माथे पर लगाए बहुत ही बड़ा सिंदूर के टीके को अंगुली से छूकर दिखाया । मैं बहुत ही मुश्किल से अंदाज लगाकर बोला—तूने जिससे ब्याह किया है, वही ? अब की बार कुतुरी आपा खुलकर हंसी । मैंने पूछा—तेरा गीत सुनकर वह तुझे नहीं पीटता ? कुतुरी आपा ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया फिर मेरा माथा चूमकर इशारे से बताया कि गीत सुनकर उसका पति उसे चूमता है । मैं बोला—अच्छा, तो तुझे लाड़ करता है । इसके बाद उसने जितनी बार भी गीत गाया है, मैंने मना नहीं किया वरन अपना कर्तव्य समझ गीत गाते ही मैं उसे चूम लिया करता हूं, वह बहुत ही खुश हो जोरों से मेरे सिर पर पंखा करने लगती है ।

दिनों-दिन मैं काफी आग्रह के साथ उसके साथ गपशप करता । गपशप के बीच एक बड़ी अजीब तथा रहस्यमय खबर सुनकर मुझे अचरज हुअ । अपने पति को वह मंत्रबल से दिन के समय एक भालू कर देती, सांझ ढलने के बाद मंत्रपानी छींटते ही वह एक निहायत खूबसूरत नौजवान बन जाता । मैं शायद इन बातों से डरजाऊं, इसलिए उसने मुझे समझा रखा था कि अपने पति के अलावा और किसी के ऊपर वह मंत्र काम नहीं आता । यह सब निहायत ही गुप्त बातें हैं । इसीसे किसी के आगे कहूंगा नहीं, उसने अपना शरीर छुआकर मुझसे कसम ले रखी थी ।

वह जलने-बुझने वाली टार्च की बात कहां गई ? कुतुरी आपा जब नहीं होती तो मैं अब की घर के पिछवाड़े की सुनसान जगह में बैठ कर सामने टकटकी बांधे देखता रहता । धू धू जलती परती पठार की शेष सीमा पर एक अस्पष्ट जल की धार—वंशधारा नदी, नदी के उस पार दूर

समय धुआं से सराबोर एक छोटा-सा गांव—विक्रमपुर उसीके मध्य कहीं पर कुतुरी आपा का इंद्रजाल का रहस्यमय घर। हाथी दांत की दीवार, सोने का पलंग—भालू। कुतुरी आपा से यह भी पता चला था कि वह काफी मेहनत करती है। हमारे यहां दूध बेचने आती है, पसीने से सराबोर माथे पर सिंदूर पानी बन जाता है—यह सब किसी दैवी अभिशाप का परिणाम है। मगर इस अभिशाप का समय काल शेष होना कोई ज्यादा दिन नहीं। उसकी यह सब बातें सुन मैं काफी आश्वस्त होता। क्योंकि अभिशाप का समय बीत जाने पर भालू के मेरी कुतुरी आपा को फिर से काटने, खरोंचने का और कोई डर नहीं।

बहुधा मैं कुतुरी आपा को परेशान करता—कम से कम एक बार के लिए ही भले क्यों न हो, उसका घर इन आंखों में देख आने के लिए। मगर कुतुरी आपा हर बार मेरी बातों को इधर-उधर घुमा देती।

आज नहीं कल। कल नहीं अभिशाप का समय बीत जाने पर। इसी तरह समय बीतता रहा, इस बीच अचानक एक दिन आपा नहीं आई, दो दिन, तीन दिन, दूध के बिना मुझे तथा मेरी बहन को काफी दिक्कत होने लगी। चौथे दिन। जब चपरासी नागेश्वर कुतुरी आपा की खैर खबर लेने निकला, तो मैं भी काफी जिद्द करके उसके साथ हो लिया। मैं उसका हाथ पकड़ विक्रमपुर की ओर चला। वंशधारा की रेत पर से ओस के दाग नहीं मिटे थे। उस दिन जिस उछाह और आविष्कार का आग्रह ले मैं कूदता फांदता रास्ता तै कर रहा था, उस अनुभव की पुनरावृत्ति फिर से कभी जिंदगी में नहीं हुई। वंशधारा तट के रेत को पठार तथा शाल के जंगल खत्म हो गए। वंशधारा के घुटने भर पानी में छपछप नाचता, नागेश्वर का हाथ पकड़ विक्रमपुर के उपांत में पहुंचते ही मैं अपने आपको रोक नहीं पाया—

—नागेश्वर, तुम आपा का घर जानते हो ?

उपहास करने जैसा हाथ हिलाकर उसने इशारा किया—वह देखो, वह रहा। वंशधारा की कछार की ओर एक बहुत ही छोटी टूटी-फूटी झोंपड़ी-झोंपड़ी के ऊपर एक वज्रहत खजूर का पेड़ टूट कर आधा सोया पड़ा जैसा झूल रहा था। विस्मय तथा हताशा का धक्का लगे कि इसके पहले ही

मैंने देखा बगल में पानी की गागर लिए कुतुरी आपा तालाब के मेड़ पर से नीचे उतरे चली आ रही है। कुछ पल के बाद देखा कि उसके हाथ-पांव सूजे हुए हैं, चेहरा भारी लग रहा है। आंखें अंदर को धंसी हुई हैं। मुझे देखते ही वह पलभर के लिए ठिठक गई। फिर गागर उतार जब मेरे ठुड्डी को हिलाने को हुई तो मैं घृणा से उसका हाथ झटक कर बोला—तू तो हमें जलने-बुझने वाली बत्ती नहीं दे पाएगी ना ?

जब हम लौट रहे थे तो रास्ते में नागेश्वर से सुना की कुतुरी आपा का आदमी एकदम जंगली है। सब दिन शराब पीता है और बात-बेबात आपा को पीट दिया करता है।

उसके साथ वही मेरी आखरी भेंट थी। फिर कभी भेंट नहीं हुई। इसके बाद मेरे लिए एक जलने-बुझने वाला टार्च खरीदा गया था। कुमारी टेमी के पिताजी का भी तबादला हो गया था, इसीसे टार्च में मेरी अब कोई दिलचस्पी भी रही नहीं।

आखिर हमारा भी तबादला का आर्डर आ गया। गुणुपुर के जो संबंधी-स्वजन हमें विदा करवाने के लिए स्टेशन पर आए, उनमें से कोई बिस्किट, कोई लजेन्स देकर मुझसे अपना प्यार जाहिर करने लगे। उसके बाद नागेश्वर मुझे चुपके से एक कोने में ले गया। उसने चादर के नीचे से चुपके से एक जलने-बुझने वाला टार्च निकाला। बहुत ही पुराना। इस तरह से जगह जगह से पिचका हुआ कि लगता था जैसे किसी लड़ाई में इससे हथियार का काम लिया गया हो।

—कुतुरी आपा ने दिया है।

उसी समय एक अजेय आकांक्षा ने मुझे अकुलाहट से भर दिया—मैं कुतुरी आपा को एक बार देखना चाहता था। उससे एक बार मिलना चाहता था। पूछा—नागेश्वर, कुतुरी आपा नहीं आएगी ? नागेश्वर ने सिर हिलाकर असहमति जतलायी—दो तीन दिन हुए यह टार्च गुम हो जाने से उसके पति ने उसे पीट-पीटकर बेदम कर दिया है। वह बोला।

—कुतुरी आपा ने इसे चुराकर दिया है ?

नागेश्वर मजाक उड़ाने जैसी भाव से बोला—हट, चोरी क्या। उसका आदमी बदमाश है। इसीसे आपा को बहुत पीटता है।

वह जलने-बुझने वाला टार्च बहुत दिनों तकमेरे खिलौने डिब्बामेंथा।

पतंग

—रुक मत, बढ़ते चलो ! स्टिम रोलर जैसी घड़घडाती कड़ाकेदार गरज के साथ हवलदार ने हांक लगाई। उसकी इस गर्जना में हुकूमत का कड़क रोब था। झुंझलाहट थी। खीझ भी सम्मिलित थी।

कुंज ने नारियल वृक्ष के ऊपर से घबराकर अपनी नज़र फेर ली। फिर आगे बढ़ने से पहले एक बार हवलदार की ओर देखकर मुस्करा दिया।

फिर कुंज दूसरे कैदियों के साथ कदम मिलाकर अनमना-सा चलने लगा। मगर जाते-जाते बार-बार पीछे मुड़कर वृक्ष के शिखर की ओर ललचाई नज़र से देख लेता।

शहर के बीचोंबीच वह बड़ा-सा नारियल का वृक्ष एकदम अकेला और अलग-थलग खड़ा था। वृक्ष की चोटी पर एक बड़ी-सी पतंग फंसी हुई थी। मगर वह पतंग शहरों के आम हीजड़े लाल नीला पतंगों में से नहीं था। शायद शहर की तलहटी में वसी किसी गंवई गांव की ओर से उड़कर आ फंसी थी वह बड़ी-सी, चौकोर लंबी-सी लहराती पूंछ वाली विशाल पतंग।

जेल का फाटक दिखाई देने लगा था। जेल की ओर मुड़ने से पहले ही कुंज ने हसरत भरी नजरों से आखरी बार के लिए पीछे मुड़कर वृक्ष की ओर देखने लगा था। उसके बढ़ते कदम फिर एक बार रुकने को हुए थे।

—सीधा चलो यार, स्ट्रेट क्यों नहीं चलते ? अचानक हवलदार का झन्नाटेदार करारा तमाचा मुंह पर पड़ा था और कुंज चेहरा सहलाता हुआ रह गया था। उस करारी चपत में कानून तोड़ने की सजा थी ; प्यार का छलावा भी। इसीसे किसी प्रकार प्रतिवाद करना बेकार तथा

अयौक्तिक था। और उसने कुछ किया भी नहीं। कैदियों को बगैर हथ-कड़ी-बेड़ी डाले काम पर लेना तथा वापस लाना उनके ऊपर जेल अधि-कारियों के इस विश्वास को वह झुठलाना नहीं चाहता था। उसका कोई भी गलत कदम बेईमानी और विश्वासघात के सिवा और क्या हो सकता था उस स्थिति में ? कुंज को यह बात अच्छी तरह पता थी। उसने वैसा कुछ किया भी नहीं। उसके दूसरे साथी भी इस बात को भलीभांति समझते थे।

रात भर सो नहीं पाया वह। कंबल में कशमशाता रहा। निंदियाई आंखें और पुरानी यादों की कसक में छटपटाता रहा। करवटें बदलता रहा। अतीत की पतंगबाजी की वह हरएक दोपहर और सांझ के झुटपुटे का हर एक पल उसके भीतर एक कसक के साथ जैसे सजीव हो उठा हो !

अपने छोटे-से गांव में पतंगबाजी में महारथ हासिल था कुंज को। कोई भी उसके मुकाबले में टिक नहीं पाता था। बाप के अकाल निधन हो जाने से उसे रोकटोक करने वाला भी कोई न था। फलतः स्कूल को टरकाकर कुंज सारी सांझ गांव के छोर पर स्थित चौड़ा सपाट मैदान में दौड़-दौड़कर पतंग उड़ाया करता था।

एक बार दिग्विजयी पतंग बनाने की धुन में वह उन्मत्त हो उठा था। वह एक ऐसी पतंग बनाना चाहता था जो रूप-गुण-आकार में अपूर्व हो। इसके लिए उसे बहुत-सी कठिनाइयां उठानी पड़ी थी। पहले उसे बोऊमां की छोटी संदूकची से पैसे चुराने पड़े थे। फिर गांव के एक चाहने वाला गंवार लड़के से कुछ पैसे उधार लेकर कुल आठ आने की पूंजी इकट्ठी की थी। फिर सात मील दूर के बड़े हाट से डोरी खरीदी थी। पके बांस को चीरकर फ्रेम तैयार किया था। दो घंटे तक गांव की एक सेठानी के पांव दबाकर मुश्किल से मुट्ठी भर मैदा मांग लाया था। फिर मैदे की लेई तैयार की गई थी। महाजन के सबसे छोटे ग्यारहवें नंबर बेटे को घने जंगल से संगृहीत पके बेतकोंली के फल रिसवत देकर वह चार-पांच पुराने साप्ताहिक समाचार पत्र भी जमा करा चुका था।

इसके बाद वह लगन के साथ काम पर जुट गया था। पन्द्रह दिन की अनथक कठिन मेहनत के बाद ही कहीं बन पायी थी वह अतिकाय, विशाल

सी अपूर्व पतंग, फिर सूखे ताड़ के पत्तों से बना एक आवाज करने वाला भौंरा भी उसमें जोड़ दिया था।

फिर उस खुले मैदान में विमोहित लड़के-लड़कियों की भीड़ के बीच खड़ा होकर उसने आकाश में उस विशालाकार पतंग को छोड़ा—जो उसका बहुत दिनों से संजोए सपनों का जीता-जागता प्रतीक था।

भों-भों आवाज के साथ पूंछ लहराती हुई वह बड़ी सी पतंग देखते ही देखते आसमान से बातें करने लगी थी। और वह बौराता शोर कुंज के उत्तेजित दिल की धड़कन की ही जैसे प्रतिध्वनि थी। अपनी कृति की सफलता, बढ़कर बोलती दूरंदाजी उड़ान के बीच कुंज एक नई धड़कन के साथ अपने निर्माता-व्यक्तित्व को महसूस करता हुआ खुशी में डूबा खड़ा था।

डोर पर बराबर ढील देता, नटई से बार-बार पतंग को टुनकाता, बादल के घेरों के बीच कूद पड़ने को आतुर उस सशक्त अहंकार को अपने नियंत्रण में कर रखने के बेइंतहा नशे से चूर चूर हो उठा था कुंज।

मैदान को रौंदते, बीचोंबीच कुछ भैंसे चले आ रहे थे। उन्हें राह देने के लिए कुंज गांव की ओर कुछ हटता हुआ चला आया था। और पतंग, पतंग तो यों ही नीमपागल और खयाली हुआ करती हैं। अचानक एक ही डाइव में फहलाता कुलांचें भरता नीचे उतरता चला आया था। और महाजन के बाग के बीचोंबीच जो बड़ा-सा छतनार बरगद का वृक्ष है न, उसके बिल्कुल ही ऊपर की एक शाख में फंस गयी थी वह अतिकाय पतंग। अचानक गरजना भी बन्द हो गया था।

कुंज बाग की ओर दौड़ पड़ा था। बच्चे लोग भी किलकारियां मारते हुए उसके पीछे हो लिए थे।

उन्हें बाग में घुसता देखकर महाजन भी झपटता आया था। अपेक्ष-तया गुप्तरूप से बाग में लगाए गए अफीम और गांजा के पौदों को अन-जान में बच्चों के पांवों ने रौंद डाला था।

सभी बच्चों को भगा दिया गया। डोर और नटई जब्त कर ली गई। शोरगुल थम गया था। मैदान के सिरे से सब लोग सर झुकाये चुपचाप तक रहे थे—बरगद की चोटी पर कैदी पतंग छटपटा रही थी। फड़फड़ा

रही थी। ऐसे ही। शाम होने तक।

अंधेरा घिर आने तक कुंज किसी तरह अपने उबलते गर्म आंसुओं को रोक पाया था। मगर फिर भी आंसू थे कि बहे चले जा रहे थे। मगर फौरन ही कुंज ने अपने पर अधिकार पा लिया। मानसिक दृढ़ता की आंच में अपने आंसुओं को सुखा चुका था।

आधी रात का समय। आकाश पर मद्धिम-मद्धिम चांदनी बिखेरता हुआ चांद। और उसी समय एक दृढ़ निश्चितता के साथ कुंज महाजन के छोटे से बाग में घुस पड़ा था। फिर वह बरगद के ऊपर करीब आधी ऊंचाई तक भी चढ़ गया था। मगर ठीक तभी अचानक सब कुछ गड़बड़ हो गया। महाजन का पाला हुआ कुत्ता जोर-जोर से भौंकने लगा। कुंज को यह बात मालूम न थी कि अनेक वर्षों से महाजन निद्राहीनता का शिकार है। उसे रात को नींद नहीं आती। और फिर वह करवट बदलते निद्राविहीन रात व्यतीत करता है। एक हाथ में जलता हुआ टार्च और दूसरे हाथ में एक तमंचा लिए महाजन भी कुत्ते के पीछे-पीछे बरगद के नीचे दौड़ा चला आया था।

महाजन का कुत्ता अपनी अधकटी दुम हिला-हिलाकर वृक्ष के नीचे हलकान मचाए हुए था। वह नाचे जा रहा था। महाजन भी हाथ में बंदूक लिए कुत्ते के पीछे-पीछे उछलकूद कर रहा था। देखते-देखते दो-चार नौकर-चाकर भी आकर मध्यरात्र के उस अनायोजित नृत्यानुष्ठान में भाग लेने आ पहुंचे थे। फिर उनके पीछे धीरे-धीरे कुछ और गांव वाले भी।

—अराजक, अराजक, घोर अराजक। हद हो गई महाराज। महाजन ने कंठ फाड़कर चीखा था। सब उपस्थित लोग उसकी बातों से सहमत थे। कुंज जैसे ही घबराकर नीचे उतरा, उसे महाजन के लोगों ने घेर कर वृक्ष में कसकर बांध दिया।

—गोली मार दूंगा। भून कर रख दूंगा। क्या समझा है? महाजन बंदूक नचा-नचाकर चीखे जा रहा था। किसी ने भी कुछ कहने की कोशिश न की। सब चुप्पी साधे खड़े थे। और देखे जा रहे थे।

कुंज की मां खबर पाते ही पगलाई सी दौड़ी आई थी। और महाजन

के पैरों पर लोट गई थी—बच्चा है। माफ कर दे महाजन। भगवान तेरा भला करेगा। कुंज किसी तरह तब बच गया था।

उसके बाद से कुंज ने कभी पतंग नहीं उड़ाई—फिर उसके अगले वर्ष ही शहर में आकर कुली बन गया। साल में एक आध बार ही गांव हो आता।

शहर में रहते हुए उसे अचानक एक दिन खबर मिली कि—महाजन ने उसकी मां को बेदम पीटा है। बेइज्जती की है। उसका कहना है कि उसकी मां ने कभी उससे कुछ पैसे कर्ज लिए थे। कर्ज लेते समय कहीं उसकी छोटी सी जमीन के प्लाट को महाजन के नाम करने से बात भी तय हुई थी। इसीके फलस्वरूप महाजन ने उसे दंडित किया है।

इस बीच देश आजाद हो गया था। गांव-गांव में पंचायतराज की स्थापना हुई थी। महाजन की भी काफी उम्र हो गई थी। मगर फिर भी उसके स्वाभाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। वह वैसे ही था।

खबर पाकर कुंज जिस समय गांव में पहुंचा—उस समय दोपहर हो चुकी थी। उसने घर में थैला पटका और तेल लगाते हुए नदी की ओर नहाने के लिए चल दिया। रास्ते में दो-एक गांव वालों से सुना कि महाजन के हाथ उसकी मां की कैसी दुर्गति हुई थी। उस का अंतरंग विवरण सुनकर कुंज का दिल दहला उठा था।

नदी के निकट ही शिवमंदिर था। उसी के चबूतरे पर पंचायत लगी थी। कुंज की मां पर महाजन के लगाए आरोप पर विचार-विमर्श चल रहा था।

नदी में आराम से स्नान करने के बाद कुंज भी मंदिर में पहुंचा था। जाते समय हाथ में एक टूटा हुआ लोहे का छड़ उठा लिया था। जिस समय वह अन्दर पहुंचा, उस समय महाजन पंचायत के बीचोंबीच खड़ा उत्तेजित हो कुछ कह रहा था कि तभी कुंज ने बिना कुछ कहे पूछे उसके सर पर छड़ का वार कर दिया था।

वज्राहत से सब बैठे बैठे रह गए थे।

फिर बाद में घटना की यथाविधि तहकीकात हुई। महाजन की शेष कृत्य सम्पन्न की गई तथा कुंज को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर उसे

जेल भी भेज दिया गया।

बाद में कहीं कुंज ने सुना कि महाजन को जिस समय उसने वार किया उस समय महाजन कह रहा था—स्वयं भगवान शिवाजी जानते हैं कि मैंने कुंज की अम्मा के शरीर पर उंगली तक नहीं लगाई है। अगर मैं असत्य बोलता होऊं तो अभी इसी समय शिवजी की कोप से मेरा सर फटकर दो टुकड़े हो जाए।"* और इसके पहले कि महाजन आगे कुछ और कहे, उसके सर पर कुंज का लोहे का छड़ का भरपूर वार पड़ा था।

लोगों ने कहा कि महाजन के इतने बड़े मिथ्याचार को स्वयं शिव शंकर जी ने भी सहन नहीं किया। मगर कानून ने इस व्याख्या को नहीं माना। कुंज को कैद की लम्बी सजा मिली। मगर छुट्टियां कटकर, उत्तम आचरण प्रदर्शन करने के कारण कुछ रियायत पाकर उसके मुक्त होने में और सिर्फ वर्ष भर ही बाकी रह गया था।

—क्या हुआ भाई ? रात में सोए नहीं क्या ? आज तुम्हें छुट्टी देने के लिए हम लोग जेलर बाबू से कहेंगे। साथी कैदियों ने सुबह कुंज से कहा था। मगर कुंज ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया था।

उस दिन जब तमाम कैदी काम से लौटकर आए तो आकाश घने मेघों से घिरा हुआ था। रह-रह कर सनसनाती ठंडी हवा भी चल रही थी।

शहर के उस अकेले, निःसंग नारियल के वृक्ष के ऊपर अभी तक वह पतंग फंसी डोल रही थी। कुंज अचानक उठ कर खड़ा हो गया। हवलदार बीड़ी सुलगाते-सुलगाते कुछ आगे निकल गया था। कुंज पीछे रह गया है। अचानक यह अहसास होते ही हवलदार सचेत हो पीछे लौटा। उसका दिल धक् से रह गया।

हवा के एक तेज झोंके से वह पतंग नारियल वृक्ष की चोटी से फिसल गई थी ? आकाश तब आधा लाल तथा आधा मेघाच्छन्न था। उस विचित्र पट्टभूमि में वह पतंग धीरे-धीरे डोलती हुई, पंख लहराती हुई चली जा रही थी।

---

* यह खास घटना एक कोर्ट विवरण से ली गई है—कथाकार।

अचानक कुंज भी पतंग के पीछे-पीछे बेतहासा दौड़ने लगा था। गाड़ी, घोड़ा, हवलदार की चुनौती, राहगीरों के शोरगुल किसी की भी परवाह किए बिना वह बेतहासा दौड़ा चला जा रहा था।

उसकी आंखें आसमान पर टिकी हुई थीं। पतंग भी धीरे-धीरे नीचे की ओर आ रही थी। वह एक निहायत मंथर और हृदयविदारक पतन था। और कुंज···कुंज ने जैसे कसम खा रखी थी कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह किसी हालत में भी उसे गिरने नहीं देगा। वह दौड़ा जा रहा था···दौड़ा जा रहा था···वह पतंग यदि कहीं दूर क्षितिज में भी विलीन हो जाए तो वह भी जैसे जाकर कहीं खो जाएगा। अगर दुनिया में कुछ सार्थक है, सत्य है तो सिर्फ वह और पतंग हैं, इसके अलावा जो कुछ भी है वह तुच्छ है, असत्य है। एक मात्र सत्य है वह और दूर में कलाबाजी खाती फिरकनी लेती हुई वह पतंग—इसके सिवा सब कुछ झूठ है··· अनित्य है···

पीछे तूफानी गति से हुई शोर सुनाई दे रहा था—पकड़ो, पकड़ो का शोर शराबा मच रहा था।

शहर के उपांत में रेलवे लाइन है। एक गाड़ी तूफानी गति से दौड़ी आ रही थी—कुंज बस बाल बाल ही बच गया था। पीछे से पीछा करने वाले लोग धक् से रह गए। वे सब रुक गए थे।

रक्तिम आकाश धीरे-धीरे धुम्राभ हो चला था। इसके बाद बस्ती आती है ··ऊबड़-खाबड़, बंजर, टीले से अंटी जमीन फैली है···फिर जंगल की झुरमुट, झाड़ियां हैं दो मील तक···और उसके बाद लहराता, लह-राता हुआ समुद्र है। वह पतंग निश्चय ही समुद्री क्षितिज के प्रशांत विस्तार के बीच कहीं खो गई थी।

कुंज को कुछ भी पता न था। वह दौड़ते हुए उसी तरह लहरों के बीच घुस पड़ा था। आंखें फिर भी आसमान पर टंगी थीं। पानी के स्पर्श को वह अनुभव नहीं कर पा रहा था। मानो उसके पंख उग आए हों। वह उड़ चला हो।

ज़ीप गाड़ी ऐन लहरों के समीप ही आकर रुक गई थी। विस्मय-विमूढ़ को मछुआरे पानी के अथाह विस्तार की ओर हाथ उठाकर संकेत

कर रहे हैं—वहां था सांध्यकालीन कुहासे का विशाल रहस्य···वहां था उदात्त और उदार सागर का कलछलाता संगीत···नहीं और कुछ नहीं···

पुलिस साहब ने राइफल तान ली—

—अगर आप राहतीयातन फायर ही करना चाहते हैं सर तो कृपया बेरैल को ऊपर को उठाकर ही फायर करें। हवलदार ने मिन्नत करते हुए फुसफुसाकर कहा।

क्षितिज के घने गहराये मेघों के बीच कहीं अचानक ही बिजली कौंध गई। गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी। उफनता समुद्र अचानक ही जैसे अधिक गंभीर, उत्ताल हो उठा हो।

अवैयक्तिक रूप से जेलर और पुलिस साहब अचानक ही अपने आपको निहायत न्यून और तुच्छ अनुभव करने लगे। लगता था सागर, क्षितिज, बिजली और बादलों की गड़गड़ाहट, सब जैसे एक साथ मिलकर फरार मुजरिम कुंज के अत्यन्त आत्मीय बन बैठे हों···जहां वह न जाने कब से चला गया है।

धुंधला क्षितिज

एक

तूफान के समय तितलियां क्या करती हैं ?—अक्सर इस सवाल को लेकर मैं उलझन में पड़ जाया करता हूं।

कभी-कभार सनसनाती तूफानी हवा में आकाश पर पंछियों को अकुलाता देख मन ग्लानिबोध से भर जाता है। उस समय उनकी गति में जो छंदहीनता नजर आती है, उसमें आधुनिक कविता पढ़ने जैसे एक असहायबोध से अक्सर घिर जाया करता हू। और अचानक चक्रवात में जिस समय कुछ पत्ते उर्द्धवगति हो अदृश्य हो जाते हैं, उस वक्त लगता है—जैसे मैं भी कहीं खो गया हूं।

मगर वैसे ही एक तूफान, पंछी अथवा सूखे पत्तों की बात बहुत दिनों के बाद एक परिकथा पढ़ते समय क्योंकर याद आएगी, वह भी अचानक—यह मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

"क्षितिज के पर्वत के ऊपर एक आत्मगोपनकारी दानव का वास था।" परिकथा कह रही थी।

दानवों के बारे में कभी मेरी काफी दिलचस्पी रही थी। हालांकि वह बचपन की बात है। मेरे बचपन के साथियों में से कुछेक दानव—देखे होने का दावा करते थे। दानव के अस्तित्व के बारे में मेरा कोई संदेह न था। इसी से उनके दावे को लेकर कोई तर्क करूं, इसका भी कोई सवाल न था। मैं दानवों के बारे में कुछ अंतरंग विवरण भर ही चा [illegible] था। उनके सामाजिक, पारिवारिक हालात, उनका हर समय क्रो [illegible] में होना, आंखों को जलता अंगारों जैसे रखना और खासतौर पर ट [illegible] को कड़कड़ाना,

हमारे आपदादों जैसा खेती बाड़ी न करना फिर ज्यादा पढ़ाई-लिखाई न करना इत्यादि के कारण जानने के बारे में मैं काफी उत्सुक रहा था।

'क्षितिज के पर्वत के ऊपर रहने वाला आत्मगोपन करने वाले दानव की कथा किताब में पढ़ते ही न जाने क्यों हमारे गांव के सीमांत में स्थित छोटे-से पहाड़ की याद मुझे हो आई।

विदेश की महानगरियों में जिंदगी बिताकर उजाले के प्रति अभ्यस्त हो गया हूं, यह सच है, मगर बचपन में गांव में जो अंधकार की अनुभूति हुई थी, वह भी भूला नहीं। शहरों में अन्धकार का माने होता है आलोक, उजाले की अनुपस्थिति मात्र। गांव का अन्धकार मगर भयानक तथा सजीव होता है। उसके साथ फिर बाढ़ की तरह एक गतिशील आवेग भी रहता है।

मेरे बचपन में हमारे गांव में ऐसा ही अन्धकार गांव की सीमा पर स्थित उस पहाड़ी पर सबसे भयानकतम रूप में गहराया करता था। एक पर्वत उप-श्रेणी का वह शेष उत्थान रहा था। ऐसा लगता है, जैसे शिला-श्रेणी वहां जमीन पर माथा टिकाए प्रणाम कर रही हों।

कभी कभार उस पहाड़ी पर चांद भी आराम करता था। जब कभी ऐसा होता तो पहाड़ी के ऊपरी भाग के जंगल की अपेक्षातया ऊंचे-ऊंचे वृक्ष उस समय एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सम्मिलनी में समाविष्ट कुछेक आधिभौतिक शक्तियों की तरह नजर आते।

उसी पहाड़ी के ऊपरी भाग में जो जंगल है, वहां एक दानव का निवास था, ऐसा मैं सुना करता। हालांकि मुझे कभी किसी ने उसका विशद परिचय नहीं दिया था। मैं सोच लेता था कि उसकी मातृभाषा— हाऊं माऊं खाऊं है। लकड़हारे तथा अन्यान्य किस्म के वनचारियों पकड़ कर आहार करना उसकी दैनिक कार्यसूची में शामिल है।

इसी से उस रहस्यमयी पहाड़ी की चोटी तमाम आकर्षण के बावजूद भी एक निषिद्ध अंचल ही रही थी।

जब मैं कुछ बड़ा हुआ तो उस समय उस किम्वदंती की उत्पति के बारे में कुछ कुछ तथ्य संग्रह कर सका था। मेरे जन्म से बहुत पहले की घटना है। उस समय लोग जंगल से निर्विवाद लड़कियां बटोर कर लाया

करते थे। कोई रोक टोक न थी। एक दिन जाड़े की एक शाम गांव के कुछ लोग उस दिन की कामधाम से निबटकर लौटते समय एक जगह से धुआं उठता देख उधर बढ़ गए थे। जाकर देखा कि एक अज्ञात आदमी धूनी रमाकर शायद अपने आपको गर्मी पहुंचा रहा है। आदमी ने शायद चौंककर इनकी ओर देखा था तथा कोई विरक्तिसूचक शब्द भी कहा था।

आगे चलकर भविष्य में जिन सब बातों ने मुझे मेरे अपने निकट एक बुद्धिमान तथा युक्तिवादी तरुण के रूप में प्रतिष्ठित किया था, उनमें से अन्यतम है हमारी पहाड़ी चोटी के दानव के बारे में प्रचलित किम्वदंती का सम्यक विश्लेषण—

—आग की प्रतिबिंब से आदमी की आंखें जलती हुई प्रतीत हुई होंगीं, इसी से उसकी आंखें दानव की तरह धधकती हुई हमारे गाँव वालों को नजर आई होंगीं।

—हवा की सीटी के साथ मिलकर या प्रतिध्वनित हो उसका चीत्कार अपेक्षतया भयानक सुनाई दिया होगा।

—सर्वोपरि पहाड़ी के ऊपर कोई सामान्य आदमी का वास करने का कोई कारण न होने के हेतु हमारे गांव वाले उस अज्ञात व्यक्ति को आदमी न समझ दानव समझे होंगे, अथवा उनका वर्णन सुन दूसरे लोगों को जैसे खयाल आया होगा, वे लोग उसका प्रतिवाद भी न करते होंगे।

चाहे कुछ भी कारण क्यों न रहा हो दानव में परिणत होने से पूर्व शाम को दिखलाई देने वाले उस आदमी को और भी कुछ या एक-दो पर्याय से गुजरना पड़ा होगा। आत्मगोपन करने वाला एक भयान्क आत-तायी के रूप में उसके बारे में कुछ दिन सुनने को मिले थे। किसी किसी के कथनानुसार कम से कम दस, बारह से लेकर बीस तक अभागे उसका शिकार बने थे। हकीकत, वास्तविकता के सम्पर्क में अधिकाधिक तूल देने वाली दादीजी तबके की उदारमना औरतें इस संख्या को शताधिक बत-लाने में भी कोई झिझक महसूस नहीं करती थीं।

मेरे पितृपुरुष के लोग अपनी जवानी में ग्राम ग्रामांतर से अपने मित्र बंधुओं को बुला हमारे गांव की उस असाधारण आकर्षण-पहाड़ी की चोटी

के अर्धगोलाकार जंगल को दिखाया करते थे।

एक उदीयमान इतिहास छात्र के असामान्य उत्साह के आघात से उस आततायी जनश्रुति का अवसान हुआ था। वह तरुण था पास ही के एक गांव का। वह तुलसी-धर्मी थे। याने यथासमय ही उन्होंने अपने होन-हार बिरवान का चिकना पात होने का प्रमाण दिया था। माइनर पढ़ते समय से ही वह मन्दिर का चौबोर अथवा श्मशान जैसे सर्वसाधारण दृष्टि आकर्षित होने वाले स्थानों पर बैठ नाक दबाकर प्राणायाम या सामने जलता दिया रखे त्राटक का अभ्यास किया करते थे। बड़े होने पर वह जरूर बहुत कुछ कर दिखाएंगे, उस पर बहुतों को कोई संदेह न था। वह धारणा वास्तविकता का रूप लेने लगी, जिस समय उच्च शिक्षा के लिए शहर जाने वाले वह हमारे इलाके के पहले व्यक्ति निकले। उनसे पहले हमारे इलाके का कोई भी शहर में पढ़ने के लिए नहीं गया था।

पिताजी से सुना था, वह दुबला पतला युवक, हर समय उत्तेजित दिखाई देता था। सिर्फ इतना नहीं उनका दिमाग तरह तरह की चौंकाने वाली कल्पना, खुराफात की भी जड़ था। हर समय वह चमत्कारी कल्पना की बातें करते। एक बार जब वह छुट्टी पर आए थे तो उन्होंने अचानक घोषणा कर डाली कि पहाड़ी पर रहने वाला और कोई नहीं, सिपाही विद्रोह का पलायक नायक नाना साहेब है। हो सकता है उन्होंने किसी पुस्तक में पढ़ा होगा कि अंग्रेजों के साथ लड़ते हुए वीर नाना साहेब किस तरह रहस्यमय ढंग से गायब हो गए थे। उनकी मृत्यु हो गई है, इस घोषणा के बावजूद भी ब्रिटिश सरकार ने नाना साहेब होने के संदेह में कैसे साधुओं से पागल तक दर्जन भर लोगों को हिन्दुस्तान के विभिन्न प्रांतों से गिरफ्तार किया था। नाना साहेब की पत्नी कैसे विधवा वेश धारण करने से मुकर गई थीं और एक निश्चित तिथि में नाना साहेब कैसे विभिन्न छद्मवेश में आकर निश्चित तौर पर पत्नी से मिला करते थे, ऐसा लोक विश्वास था।

पहाड़ी पर रहनेवाला अज्ञात व्यक्ति ही नाना साहेब हैं, युवक ने ऐसा क्यों सोचा, वह इसे उनके समसमायिक लोगों को एक मैप के जरिये समझाया करते थे। नाना साहेब ने आखिरी बार कहां पर लड़ाई लड़ी

थी, वहां से हटने के बाद स्वाभाविक तौर से वे किस तरह एक नदी पर पहुंचे होंगे—उसके बाद नाव में सवार हो उस समय के मौसम के लिहाज से उत्तरी हवा के सहारे एक खास शहर के किनारे पहुंचे होंगे—तथा उस समय उस विशेष शहर में ब्रिटिश घाटी होने से ऐतिहासिक प्रमाण के नजरिये से वहां से भी कन्नी काटकर किस तरह एक जंगल की राह पकड़ी होगी और अंत में कैसे हमारे गांव के सीमांत पर पहुंच कर स्वाभाविक तौर से छुपने की जगह पहाड़ी पर आश्रय ली होगी, यह सब बातें युवक विभोर हो बखान करते थे।

मगर युवक अपने निजी सिद्धांत पर खुद ही प्रबल उत्तेजना महसूस करते। इसके साथ ही वह एक तीव्र मानसिक द्वंद्व का शिकार भी हो गए। नाना साहेब के अपने साथ ढेरों दौलत के साथ लापता हो जाने की बात उन्होंने किताबों में पढ़ रखी थी। फिलहाल उनके आगे एक ही समस्या थी, वह अकेला जाकर नाना के साथ दोस्ती गांठ उस दौलत के उत्तराधिकारी न बन सकें तो भी कम-से-कम उसका कुछ भाग तो बतौर उपहार के पा सकेंगे, उन्हें यह करना चाहिए या अंग्रेज सरकार को उनका पता देकर उन्हें पकड़वाने के लिए घोषित सिर्फ दस हजार रुपयों का इनाम लेकर संतुष्ट हो रहें। वह असमंजस में थे।

आखिर बहुत सोच-विचार करने के उपरांत उन्होंने दूसरा रास्ता अपनाने को ही उचित ठहराया। क्योंकि उसमें सिर्फ पुरस्कार की सुनिश्चितता थी। ऐसा नहीं, बल्कि था सरकारी अफसरों के साथ दोस्ती तथा परिणाम में ऐसे ही एक छोटा-मोटा देशी छोटा लाट या नाईट होने की संभावना।

युवक हमारे जिले के साहब हाकिम से मिला था। साहब ने भी काफी धीरज के साथ तमाम बात सुनी थी। फिर कहा था—साहब, आप नाना साहेब को शांति से रहने दें। अच्छा तो अब बाई···बाई···

इसके परिणाम में वे दूसरा रास्ता अपनाने को मजबूर हुए। उन्होंने अगर एक बार भी अनुरोध किया होता, तो उनके साथ एक बार पहाड़ी पर जाने के लिए मेरे पिताजी या उनके और किसी हमउम्र जरूर राजी हो गए होते। मगर नाना साहेब के साथ और किसी का परिचय हो,

युवक ने कभी भी नहीं चाहा। इसी से उन्हें अकेला ही जाना पड़ा।

पहाड़ी पर कुछ घंटे बिताने के बाद जब वह वापस लौटे तो उन्होंने फिर कभी नाना साहेब का नाम ही नहीं लिया। मगर इतना था कि वह पहले से कहीं अधिक उत्तेजित मालूम दे रहे थे। उन्होंने अचानक एक नया तथ्य खोज निकाला था। पहाड़ी के अंदर बहुत ही कीमती धातु का अटूट भंडार छुपा है। यह धातु अगर वर्ल्ड मार्केट में जाएगा, तो उससे जो आमदनी होनी अनिवार्य है, उसकी एक निर्धारित परसेंटेज के एवज में वह उस अमाप दौलत का पता बताने की कहकर आखिरी में बार्ड कंपनी के एक विशेषज्ञ साहब को हमारे गांव तक लाने में सफल भी हो गए थे। साहेब ने पहाड़ी पर घुम फिर लेने के बाद अचानक, युवक के पिताजी से भेंट करनी चाही। जब भेंट हुई तो चुपके-चुपके कहा—तुम्हारे लड़का का दिमाग खराब मालूम पड़ता, बल्कि है। इलाज का बंदोबस्त कराइये। उसका ब्याह करा दो। वह पहाड़ों जंगलों में चक्कर काटना छोड़ देगा।

इसके बाद भी बहुत दिनों तक युवक पहाड़ी के कोने-कोने में छान मारते हुए नजर आए थे। फिर वह और दिखाई नहीं दिए।

उदियमान युवक के इस अप्रत्याशित अवसान के साथ ही पहाड़ी पर रहने वाले उस अजीब बाशिंदे से संबंधित अफवाह ने एक नया मोड़ लिया था। किसी-किसी का कहना था कि वह एक जादूगर था, जो पहाड़ी पर किसी विचित्र प्रकार का याग यज्ञ करने में व्यस्त था। मतांतर में वह एक यक्ष था। पहाड़ी की गार में छुपे बेशुमार दौलत का गार्जियन। उच्चाभिलाषी युवक ने जब उस दौलत को हथियाना चाहा तो यक्ष की क्रोधानल का शिकार हो पहले तो पागल हुआ तथा बाद में गायब हो गया।

मगर मेरे बचपन में समकालीन लोक कथा में वह यक्ष कब से एक दानव बन चुका था।

हमारे गांव के लोग शायद अधिक कल्पना प्रवण नहीं रहे थे। अगर रहते तो दानव, राक्षस के साथ, कम-से-कम एक अदद राक्षसी को जरूर जोड़े होते। मगर ऐसा हुआ नहीं था। धूप, बारिश, ठंड के मौसम निर्विशेष में जनश्रुति ने अकेले ही दानव को पहाड़ी के ऊपर डाल रखा था।

आज ऐसे ही एक कहानी पढ़ते समय हमारे गांव की सीमांत के उस अकेले निःसंग दानव की बात, मुझे बार-बार याद आ रही थी।

दो

मेरे जन्म के प्रायः आधी सदी पहले हमारे गांव के विशिष्ट युवक श्री जगतबंधु दास का पतन हो चुका था।

आधी सदी बीत जाने पर भी जगतबंधु के युगांतकारी नैतिक पतन के बाबत लोग बीच-बीच में आलोचना किया करते थे। वह चर्चा इतनी जीवंत होती, आलोचना के समय लोगों का कंठस्वर इतना प्रामाणिक सुनाई देता कि लगता कि ठीक किस दिन, कितने बजकर कितने मिनट पर जगतबंधु का पतन हुआ था। उसे भी वे जैसे आप बीती की तरह याद में संजोए हुए थे।

सुना था, जगतबंधु अत्यंत बुद्धिमान और आदर्श तरुण थे। ग्रामातर में उनके पिताजी की छोटी होने पर भीं एक जमींदारी थी। एकमात्र पुत्र होने के कारण, गौरवर्ण होने के कारण तथा डॉक्टरी पढ़कर हमारे अंधे इलाके में एक दीपशिखा की तरह दिखलाई देने के हेतु, कन्यादायी पितृ वर्गों के पतिंगों की तरह उनकी ओर दौड़ना स्वाभाविक था। वे दौड़ते भी थे। मगर प्रत्येक पतिंगा अपनी उछाह की परों का कुछ हिस्सा जलाकर लौट भी जाता था। किसी के सामने रसिक जगतबंधु नीम पागल का अभिनय करते तो किसी के आगे निरे मूर्ख का। किसी-किसी के सामने वह विकलांग होने का अभिनय करने से भी पीछे नहीं हटते। किसी-किसी को तो वह बाइज्जत यह भी समझा दिया करते कि ब्याह से संबंधित कुछ लाइनें उन्होंने अपनी जन्मपत्री से खुद ही मिटा दी हैं।

इस तरह के खयाल वाले जगतबंधु डॉक्टरी पास करने के ठीक बाद में ही अचानक एक क्रिश्चियन नर्स के प्रेम में पड़ गए। बल्कि कहना

चाहिए कि पागल हो गए। उस पतन के संवाद हमारे इलाके में पहुंचने के बाद हमारे गांववालों ने कितने दिनों तक सिर नीचे झुकाए जाना-आना किया था। कुछ गम तो उस दिन गलत हुआ, जिस दिन जगतबंधु ने पत्नी को साथ में लिए अपने गांव में पांव रखा था। उनके पिता ने उन्हें घर में घुसने न देकर गोहाल में आश्रय लेने को मजबूर किया सिर्फ इतना ही नहीं तमाम गांववालों ने भी अभूतपूर्व एकता का प्रदर्शन कर उनका सभी ओर से समझौता विहीन बहिष्कार कर दिया था।

गोहाल में रहते हुए पत्नी ज्वरग्रस्त हुईं। बूंद भर पानी देने को भी कोई न मिला। किसी की तालाब या पोखर से पानी लाने की भी मनाही थी। जगतबंधु स्वयं नदी में जाते और गागर भर पानी लेकर लौटते। कभी बहुत-सी रसिकता का दृष्टांत रखने वाले, दीपशिखा जगतबंधु को उस हालत में देखने के लिए एकाधिक भूतपूर्व पतिंगें पांच-छः कोस की दूरी से छाता-लालटेन लेकर आते, घूम-फिरकर चले जाते और जाते-जाते कष्ट स्वीकार करते खांस कर जगतबंधु की दृष्टि आकर्षण करते जाना लोगों ने बहुत बार लक्ष किया था।

आखिर जिस दिन आधी रात को जगतबंधु के पिता चुपचाप कुछ फल और दो कंबल ले आंखों में आंसू भरकर गोहाल के अंदर बेटे-बहू के आगे जा खड़े हुए, तो जगतबंधु ने कह दिया—-पिताजी, आपकी ज्यादतिओ का आदी हो चुका हूं, मगर आपकी इस भीरूता, ये हिपोक्रेसी बरदास्त के के बाहर है! और उस संगीन हालत में बीमार पत्नी को लिए बहुत कठिनता में पकड़कर रास्ता चलते हुए, जगतबंधु शहर को वापस लौट गए और अल्प समय में ही एक प्रसिद्ध डॉक्टर बन गए।

पीछे रह गए थे मर्माहत पिता, आधी रात को फल, कंबल और डब-डबायी आंखों से बढ़कर कुछ व्यवस्था, जो वह न कर सकते थे, जगतबंधु इतना समझ न पाया इसी मे वह जल्द ही मर गए।

ससुराल की वह अनुभूति, जो पहले कभी नहीं हुई थी। उसे एक बार पा लेने के बाद क्रिश्चियन बहू भी ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह पाईं। मगर फिर भी मृत्यु से पूर्व उन्होंने एक बालक को जना था। उसे छोड़ वह स्वर्ग सिधार गईं।

उक्त लड़का बड़ा होकर यथा समय शादी-ब्याह कर, जगतबंधु को एक नातिन देकर असमय ही सपत्निक धरती से बिदा ले गया था।

ढेरों मृत्यु के बीच जगतबंधु अकेला बच रहे थे। बाद में एक पूर्णांग ट्रेजेडी देखने से जैसे अनुभव होता था। बचपन की ओर जब मुड़कर देखते तो जगतबंधु को वैसा ही अनुभव होता। वे सिर से पांव तक गाउन में ही दिखलाई पड़ते थे। न जाने क्यों मुझे लगता था कि हर समय अपने आपको छुपाए रखना चाहते हैं। खूब मोटा ऐनक और चुरुट के लगातार घने धुए के बीच चेहरे को भी वह यथासंभव असस्पष्ट कर रखना चाहते थे। मगर फिर भी जो भी हो वह साल में दो साल में एक बार गांव को जरूर आया करते थे।

इस आधी सदी के बीच पृथ्वी पर बहुत-सी प्रगतिशील घटनाएं घटित हुई थीं। उन घटनाओं का प्रभाव हमारे गांव पर भी कम न था। मिसाल के तौर पर, शहर से लौटे एक-दो स्वच्छन्द ग्रामीण अपने-अपने सपारिवारिक फोटो उतरवाकर अपने घरों में देव-देवी, समुद्र मंथन, कालीय दमन वगैरह रंगीन फोटुओं के बीच-बीच में टांग रखे थे। एक व्यक्ति एक साप्ताहिक पत्र मंगाने लगे थे। सर्वोपरि हमारे गांव से मात्र डेढ़ कोस की दूरी पर, एक अपेक्षतया आधुनिकतम गांव में, डाकखाना समेत डेढ़ कमरा वाला एक सरकारी अस्पताल खुला था और केवल बुखार से पीड़ित लोग वहां जाकर बगल में थर्मामीटर डाल गरमी बाहर निकाल देने को डॉक्टर से विनती करते, इतना ही नहीं, पैर-हाथ तुड़वाये, आहत लोग भी कंपाउंडर की खुशामद कर थर्मामीटर सेवन करके उपकार पाते थे।

परिवर्तन की इस तरह की आबोहवा के बीच लोगों का बूढ़े जगतबंधु को फिर से बरदाश्त न करने का कोई सवाल ही न था। बल्कि उन्हें काफी सम्मान दिया जाता था।

मगर जगतबंधु अब की बार अकेला नहीं आए थे। साथ में थी उनकी पोती लिली। आम लोगों के लिए जगतबंधु को ग्रहण कर लेना हांलाकि सहज था, मगर हम बच्चों को लिली को स्वीकार कर लेना वास्तव में उतना सहज न था। पहली बात यह है कि लिली एक लड़की थी। दूसरे

ग्यारह साल की आयु में हमारे गांव की लड़कियां साड़ी पहन ठोकर खाने के स्तर के काफी ऊपर पहुंच जाने पर भी लिली फ्रॉक और ऐनक पहना करती थी। फिर हमारे पौरुष के प्रति थोड़ा-सा भी खातिर किए बिना, सम्मान दिए बगैर पैनी नजरों से हमें सिर से पैरों तक घूरा करती। सिर्फ इतना ही नहीं उसे अंग्रेजी तथा और भी बहुत-सी बातें मालूम थीं।

हम गांव के लड़के एक-दूसरे से प्रतिद्वंद्विता करते थे, एक-दूसरे से बहुत से मामलों में जलते थे, ईर्ष्या करते थे, यह ठीक है, मगर हमारी शिक्षा-दीक्षा तथा सांस्कृतिक स्तर एक ही था। अचानक हमारे सामने संपूर्ण एक भिन्न जगत की लड़की को ला हमारी जिंदगी में तूफान उठाना, विधाता के लिए कहां तक उचित था, वह सवाल अभी तक अनुत्तरित है।

फिर भी, आज इतने वर्षों के बाद इस परिकथा को पढ़ते समय लिली की याद न जाने क्यों मुझे बार-बार परेशान कर रही थी, वह भी मेरी समझ के बाहर था।

परिकथा में जिस लड़की की बात का वर्णन था, वह थी एकदम शांत और उदास। जंगल के बीच वैसी लड़की कहां से आकर रहने लगी थी। लेखक इस प्रसंग को टाल गया था। शुरू में, लड़की के खेलने के साथी थे कुछेक गिलहरी और चंद तितलियां। वह जब कुछ बड़ी हुई तो खरगोशों के साथ उसकी दोस्ती हो गई। और बड़ी होने पर लड़की ने मृग, हिरनों से सीखी थी चंचलता और कोमलता।

आरंभ में उसके संगीत शिक्षक थे कुछ भौंरे। तब भी उन्होंने गुनगुनाने तक सिखाने के उपरांत कोयलों ने वह काम अपने हाथों ले लिया था। कोयलें सिर्फ अपनी-अपनी कंठ परिवेशण करने तक ही अपने कर्तव्य को सीमित रखे हों ऐसा भी नहीं था, वे लड़की को जंगल के एक ऐसे घने इलाके में बुलाकर ले जाया करतीं, जहां एक गुफा के अंदर जाकर हवा अनन्यश्रुत ध्वनि उत्पन्न करती थी। वे उसे धीरे-धीरे वीणा बजाती एक झरने के किनारे पर भी उसे बुलाकर ले जातीं।

तारे, नक्षत्रों ने उसे अक्षर सिखाये थे! इन्द्रधनुष ने उसे प्यार करना सिखाया था। सूर्योदय ने सिखाया था हंसना-विहंसना तो सूर्यास्त ने उसे व षाद की शिक्षा दी थी।

हमारे गांव में खरगोश, हिरन न होने पर भी काफी तितलियां और बहुत सी गिलहरियां थी। वर्ष भर में एकाधिक बार इंद्रधनुष भी देख लेते, और कोयल का गीत भी सुनते। झरना न होने पर भी नदी थी। सूर्योदय, सूर्यास्त तथा नक्षत्रों की प्राचुर्य के बारे में कहने की कोई आवश्यकता नहीं। मगर लिली इन सभी से विशेष प्रभावित हुई हो, याद नहीं आता। उसके लिए समय भी न था।

लिली जिस दिन हमारे गांव में पहली बार आई, उस दिन मैं गांव में अनुपस्थित था। दो दिन के बाद जब मामा के घर से लौटा तो देखा, हमारे बच्चों की दुनिया की आवोहवा बिलकुल बदली हुई है। हम लोगों का स्वाभाविक नेता था हटकिशोर। हम उसे हट्टु कहकर पुकारते थे। उप-नेता था नवीनचंदर उर्फ हाड़ु। नदी के किनारे पर जो बरगद का पेड़ है, जहां आमतौर से सांझ के समय हमारी भेंट होती थी; हट्टु और हाड़ु उस दिन वहां इस तरह गंभीर हो बैठे थे, जैसे कि लंबी छुट्टियों के बाद पाठशाला खुलने के दो दिन पहले हम हुआ करते थे।

—कब आया ? मुझे देखते ही हट्टु ने उत्कंठित हो पूछा। मेरे जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर फिर कहा—तेरे साथ भेंट हुई ?

—किसकी ? मैं पूछा, शायद पाठशाला में कोई नया मास्टरजी आए हों जैसे उद्विग्नता के साथ। वैसे अनागत अशुभ घटना के लिए हमें बीच-बीच में दिनों तक आशंका ग्रस्त हो रहना पड़ता था।

—बुद्धु कहीं का ! हट्टु ने ताना दिया।

हट्टु, क्योंकि अविसंबादित नेता था इस लिहाज से उसका इस तरह के रिमार्क देने का अधिकार था, मगर मैंने अपने आपको बहुत ही बेचैन महसूस किया। मेरे पिताजी फिलहाल एक बैलगाड़ी के मालिक बन चुके थे। फिर वह पाठशाला के सेक्रेटरी भी मनोनीत हुए थे। इस लिहाज से मेरे सम्मान में एक स्वाभाविक उन्नति का होना हट्टु ने अनुभव नहीं था, यह मेरे लिए बहुत ही दुःख की बात थी।

मगर फिर भी मैं हट्टु के साथ झगड़ता नहीं था। एक तो जन्म से ही मलेरिया का शिकार हो मैं काफी दुबला-पतला तथा कमजोर था, दूसरे हट्टु आगे चलकर भविष्य में बड़ा आदमी बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास था।

जो भी हो, हट्टु और हाड़ु से लिली के बारे में तमाम बातें सुनते-सुनते मेरा दुःख एक ग्लानिबोध में बदल गया।

—बड़ी आन से ऊपर को मुंह उठाए अकड़कर चली जा रही थी तो हट्टू हमारा चुपचाप पास जाकर इस तरह से चीखा कि उसकी तो पतली हो गई होगी। हाड़ु बोला।

—और हाड़ु का करतब कुछ पता है? लड़की बड़ा ही भड़कीली चमचमाती फ्रॉक पहने थी। हाड़ु ने उसके ऊपर अंजुरी भर आक का रस डाल दिया है। आग में जलाने से भी दाग जाने से रहा। हट्टु बोला।

धीरे-धीरे मेरी समझ में आने लगा कि गांव के तमाम खास लड़के प्राय: सभी यथासाध्य कल्पना का प्रयोग करके, रोमांचक दुस्साहसिक कदम उठाकर घमंडी लिली को अच्छा खासा सबक सिखाने के लिए जिससे जो कुछ भी बन पड़ा वह सब अपना कर्तव्य समझ चुके हैं—सिर्फ मैं ही हूं—जो बच रहा हूं।

कुछ कर नहीं पाया था, इस ग्लानिबोध से बचने के लिए मैं अचानक ही बोला उठा—बस, इतने में तुम लोग चुपचाप बैठ गए हो, अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो…तो…मेरा मलेरिया से पीड़ित मगज वाक्य को पूरा करने के लिए मसाला नहीं दे सका।

—तुम हो जाना? तुझे होने के लिए मना किसने किया है? हाड़ु का रिमार्क था।

—तू तो ठहरा एक हिजड़ा—अरे तू क्या कर दिखाएगा? हाड़ु ने मुझे ताना दिया।

—उसकी वह रोनक, उसके भीतर से वह अगर एक बार तुझे देख-लेगी ना तो तुझे कंपकंपी हो आएगी। फिर से हाड़ु ने मुझे कचोटा था।

कंप के बारे में कोई कुछ कहे तो मैं काफी अपमानित महसूस करने लगता हूं। मलेरिया के समय जब मुझे कांपना पड़ता है, उस वक्त कोई अगर मुझे देखने के लिए आता है तो उस समय कंपकंपी को रोकने के लिए मुझे कितनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करना पड़ता है, मुझे खुद मालूम है। या भगवान जानता है।

—देखेगी? फिर वह मुझको? साला, उसके ऐनक को चूर-चूर न

कर दूं ? मैंने जवाब दिया।

—तो बेटा अपनी पेंट उतारकर जाना—वरना गीला होकर ठंड पकड़ लेगी। हाड़ु ने हंसते हुए ताना कसा था।

—कभी हो ही नही सकता। मेरा ऐनक तोड़ने के बाद तू पेंट में हाथ डालकर देख लेना। मैंने चीखकर कहा था। अपनी चीख से मुझमें कुछ आत्मविश्वास आ गया था।

तीन

भोर। कौवों ने अभी-अभी हमारे गांव के आकाश पर मंडराना शुरू किया था। मैं हाथ में गुलेल लिए धीरे-धीरे बढ़ता हुआ आगे से निर्धारित खजूर के पेड़ की ओट में जा खड़ा हुआ। हट्टु और हाड़ु पास ही एक झुरमुट में दुबके बैठे।

मैं रात भर इतना उत्कंठित था कि ठीक से सो भी न पाया था। कुछ पल के लिए बीच-बीच में झपकी आ जाती थी। शेष समय किस्म किस्म के दुःस्वप्न में बीते थे।

सूर्योदय के समय लिली ऊपरी मंजिल का झरोखा खोल क्षितिज की ओर देखा करती—मेरे नेता और उपनेता ने बहुत पहले से ही इस तथ्य से अवगत हो मुझे बता दिया था। कहने को तो हांक गया था, मगर खुद सशरीर लिली के निकट था, उससे उलझकर ऐनक तोड़ना मेरे लिए दुःसाध्य है, यह बात मुझे जितना पता था, मेरे सहृदय हट्टु और हाड़ु को भी उतना पता था। गुलेल मारकर अमियां झाड़ने में मेरी प्रतिभा बहुत पहले से ही स्वीकृत हो चुकी थी। इसी से वही उपाय अपना कर निरापद दूरी में रहकर लिली की ऐनक चूर-चूर करने के लिए मेरे बनाए योजना हाड़ु और हट्टु को भी पसंद आई थी। उन्होंने इसका समर्थन भी कया था।

हमारे अपने-अपने निर्धारित स्थान पर पहुंचने के पहले ही खिड़की खुल चुकी थी। सूर्योदय होते ही हट्टु और हाड़ु आधीर हो मुझे अपने हथियार तैयार रखने को इशारे से बता दिए थे। बल्कि उनके आदेश मिल चुके थे। उत्तेजना से कांपता हुआ मैंने वही किया। मन के एक कोने में ऐसा करते हुए दुःख भी हो रहा था, फिर भी मैंने समझ लिया था कि हमारे गांव के बालक समाज का सम्मान-असम्मान का प्रश्न मेरी सफलता या विफलता से जुड़ा है, सिर्फ इतना ही नहीं, शहर से आई हुई घमंडी लड़की को पराजित कर पौरुष के जन्मगत गरिमा की पुनप्रतिष्ठा करने का उत्तरदायित्व भी उस पल मेरे जिम्मे था।

अचानक हट्टु और हाड़ु जोर से हाथ पैर नचाकर मेरी दृष्टि आकर्षित करने की कोशिश करने लगे। मेरा शिकार शायद खिड़की के निकट आ जाने का सुराग पाकर वे ऐसे कर रहे हैं, यही सोचकर मैं सांस रोके खिड़की की ओर गौर से देखने लगा। मगर अचानक ही दूसरे पल मेरे हाथों से वह उद्यत अस्त्र गायब हो गया था। मैंने चौंक कर पीछे की ओर नजरें घुमाई। अचानक मेरा सर चकराने लगा। मानो वातावरण में चारों ओर से अंधकार छा गया हो। अमावस के घने अंधकार में सब कुछ खो गया हो।

करीब दो मिनट बाद जब वह धुंधलका कुछ छटने लगा तो मैं एक द्युतिमति बालिका के हाथों खिचे हुए चला जा रहा था। ऐनक न होने पर भी मैं जानता था—वह लिली है।

मेरे नेता उपनेताओं के आंखों के आगे ही मैं इस तरह अपहृत हो दूसरी मंजिल पर पहुंचा, तभी जाकर लिली ने कहीं मेरा हाथ छोड़ा। एक कुर्सी पर मैं धड़ाम से बैठ गया।

—तुम किसे मारना चाहते थे ? मुझे या मेरे दादाजी को ? क्यों—किसलिए ? हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? लिली ऐनक खोल, शीशा साफ करती हुई पूछ रही थी।

मुझसे एक बहुत ही लज्जाजनक काम हो गया। मैं रोने लगा था, लिली के लिए यह इतना अप्रत्याशित था कि वह सिर्फ "अरे, अरे" कहती ऐनक पोंछने के सिवा बहुत समय तक न कुछ कह पाई न कर पाई। उसके

बाद अचानक न जाने कहां से एक डिब्बा निकाल कर वह मेरे सामने कर दिया। लॉजेंस का डिब्बा।

इसके पूर्व एक दो बार मैंने लॉजेंस खाई थी—दूर वाली हाट पर कभी-कभार लाल-पीला लॉजेन्स मिलता था। बिलकुल खुला हुआ उसमें किसी प्रकार की खोल नहीं हुआ करते थे। लॉजेन्स हरेक किस्म के रंग-बिरंगे कागज की फ्रेक भी पहने हुए होते हैं— मैंने कल्पना तक नहीं की थी।

मैंने झिझकते हुए एक के बाद एक तीन लॉजेन्स उठा लिए। मेरा रोना—सुबकना एक अपूर्व पुलक में बदल गया। वह सिर्फ अनास्वादित लॉजेन्स के लिए हों ऐसा नहीं, लिली मुझे पुलिस के हाथों नहीं देगी, उसी आश्वासन ने मुझे पुलकित कर दिया। न जाने मुझे क्यों लगता था कि शहर के लोग नाक कानों से मक्खी व मच्छर को भगाने के लिए भी पुलिस को बुलवाते हैं।

—अच्छा, झुरमुट में छुपे तुम्हारे वे दोनों चेले कौन हैं? लिली ने हंसते हुए पूछा। वह चमत्कृत लग रही थी।

मेरे लज्जाभाव धीरे-धीरे दूर होने लगा, उसकी जगह गर्व से मैं खिलने लगा था। मैं उत्तेजित हो उठा। जिंदगी भर हट्टु और हाड़ु का सताया हुआ मैं, आज उनका उस्ताद समझा जा रहा हूं, इससे बढ़कर सार्थकता और क्या हो सकती है?

अचानक हठ्टु और हाड़ु के लिए मेरे अन्दर एक किस्म का विद्रोह और नफरत उफनने लगा। भविष्य में वे मुझे चिढ़ाएंगे की लिली के हाथों मैं कैद हुआ था। और यहां अदृष्टपूर्व लॉजेंन्स से मेरी खातिर हो रही है, मुझे "तुम" कहकर पुकारा जा रहा है। तीनों में से नेता समझा जा रहा है, यह सब, हाय उन्हें पता भी तो नहीं चल पाएगा! गांव की देवी मां की कसम खाकर कहने से भी वे विश्वास करने से रहे।

लिली ने फिर से जब अपने सवाल को दुबारा पूछा तो मैंने कहा—वे दोनों हट्टु और हाड़ु हैं, यानी श्री हटकिशोर दास और श्री नवीन चंद्र मिश्र।

—हट्टु और हाड़ु को यहां बुलवाओ! लिली ने प्रस्ताव रखा।

मैं भी उत्साह के साथ राजी हो गया। मगर बाद में रुआंसा हो गया।

—फिर क्या हो गया ? लिली ने घबराहट से पूछा—मैंने मारे शर्म के गड़ते हुए उसे समझाया कि मैं रोया था, यह बात कहीं वह उन लोगों से बता न दें, उसी से मैं फिर से रोने को हो आया था। लिली ने जब किसी हाल में भी यह बात उन्हें न बताने की पेशकश की और वादा भी कर लिया तो मैं उन्हें बुलाने की तरकीब के बारे में बातचीत करने लगा।

काफी सोच-विचार कर लेने के बाद उन्हें इस मर्म में एक पत्र लिखा—"मैं यहां कैद हूं। तुम लोग अगर एक बार यहां आ जाओ तो मेरा कैद से छुटकारा हो सकता है। वरना लिली के दादा टेलीफोन करके पुलिस बुलवाएंगे, हम तीनों तथा हमारे पिताओं को गिरफ्तार कर लिया जाएगा, यहां मुझे लॉजेन्स दिए गए हैं और तुम्हें भी दी जाएगी। मैं कुशल से हूं।

शहर के विशिष्ट लोग टेलीफोन नामक व्यवस्था का फायदा लेते हैं, यह बात हाल ही हमारे साधारण ज्ञान में आई थी, मगर उसके लिए मीलों लंबी तार वगैरह का होना जरूरी है, उस बारे में कोई जानकारी न होने से मैंने इसी ढंग को अपनाया था। चेतावनी देने के लिए।

लिली की सलाह के मुताबिक चिट्ठी को दो लॉजेन्स के ऊपर लिपटाकर झरोखे के पास आया। देखा दूर में दोनों मुंह खोले भौंचक्के हो इधर ही देख रहे हैं, मैंने हाथ के इशारे से उन्हें खिड़की के निकट बुलाया। इससे उनके मुंह आश्चर्य से और भी खुल गए, मगर वे जहां के तहां खड़े थे। जरा भी टस से मस नहीं हुए। यह देखकर मुझे हंसी आ गई। कुछ गर्व के साथ मैं हंस दिया। इससे वे दोनों मेरी नजर में काफी असहाय और छोटा नजर आने लगे। यह मेरे लिए काफी उपभोग्य था।

और कुछ देर यूं ही इशारे-विशारे करने के उपरान्त मैंने लॉजेन्स से लिपटे उस पत्र को तागा से लपेट कर गुलेल के सहारे उनके पास मार दिया। बहुत ही उतावले के साथ उन्होंने उसे खोला और बहुत ही संदिग्ध हो बार-बार मुझे देखते हुए मेरी ओर बढ़ने लगे। मैं भी नीचे आकर दरवाजे के निकट उनसे मिला।

—तू तो छूट गया न—चल भाग जाएं। हट्टु बोला।

—यह कायरता होगी। फिर भाग जाने पर हो सकता है कि वे पुलिस को खबर कर दें, कौन कह सकता है। मैंने नीची जुबान से कहा बहुत से लाजेन्स हैं! इसी तरह उनमें हिम्मत तथा लोभ जगाकर अपने नेतृत्व में उन्हें ऊपर ले आया।

लिली ने मुस्कराकर उनकी पीठ थपथपाई। फिर हट्टु के चेहरे के करीब एक रुमाल पकड़े बोली—लो, नेटा पोंछ लो।

नाक साफ करने के लिए एक सुवासित रंगीन रुमाल व्यवहार करने के प्रस्ताव ने हट्टु को स्वाभाविकतया किंकर्तव्यविमूढ़ कर दिया।

—दद्दाजी के क्लीनिक पर मरीजों की सेवा करने में मुझे काफी खुशी होती है—कहती हुई लिली ने अपने हाथ से हट्टु का नाक साफ किया और रुमाल को कमरे के एक कोने में फेंक दिया।

इसके उपरांत हाड़ु की ओर उसकी नजर गई—खोलो, तुम पेंट के बटन खोलो। लिली ने कहा।

इससे न केवल बेचारा हाड़ु मुश्किल में पड़ गया इतना ही नहीं, मैं भी शरमा गया। हट्टु के अन्दर उसका स्वभाव सिद्ध नेताईपन एक सामयिक संकट के बाद फिर से तेजी के साथ लौट रहा था, इसमें संदेह नहीं। उसने हाड़ु को धमकाया—अबे खोल।

—छि: ऐसे क्यों चिल्ला रहे हो! कहते हुए हट्टु की ओर प्यार भरा उलाहना के साथ देखते हुए, लिली खुद हाड़ु की पेंट के बटन खोलने लगी। लिली का उद्देश्य क्या है, यह सोच पाने के पहले ही लिली हाड़ु की मैली-कुचैली पेंट का किनारा जो उसका पेंट के नीचे लटक रहा था। उसे पेंट के अन्दर ठेल फिर से बटन बंद कर दिए। फिर बोली—पेंट शर्ट इस तरह से पहने जाते हैं।

—मैं ठीक तरह से पहनता हूं, हि: हि:, हट्टु बोला, हालांकि वह कभी कभार ही शर्ट रहना करता था। हालांकि हट्टु और मेरा उपरांग दिगंवर था। हमने सिर्फ पेंट पहने थे। उस पर कोई शर्ट वगैरह नहीं।

—तुमने तो सुबह नाश्ता वगैरह लिया नहीं होगी? लिली अब की बार फिर से हट्टु की ओर देखते हुए बोली, फिर हट्टु के जवाब की प्रतीक्षा किए वगैर कहा—निश्चय ही तुमने नाश्ता नहीं किया, वरना

नाखून क्यों कुतरते ! अच्छा तो, मैं कुछ नाश्ता वगैरह लिए आती हूं। लिली कमरे के अन्दर चली गई।

नाखून कुतरना हट्टु की आदत थी मगर इस समय वह निर्लज्जता के साथ हमारेसामने बहादुरी दिखाने लगा—देखा, कैसे नाश्ता मंगवा लिया।

मगर हट्टु की इस चतुराई से मुझे और कोई चमत्कारिता दिखाई न पड़ रही थी। लिली का व्यक्तित्व, बातें और व्यवहार ने मेरे आगे एक नया दिगंत खोल दिया था। जो दिगंत था ध्यान और धारणा का।

लिली एक प्लेट में ढेर-सा बिस्किट और चार-पांच संतरे लेकर आ गई थी, नाश्ता न लिए होने के बारे में लिली ने जो कहा था, हट्टु तब तक उसका जवाब भी सोच रखा था। प्लेट देखते ही वह बोल उठा--देखो, मैं तो ज्यादा खा न सकूंगा। सुबह से ही ढेर-सा हलवा और चार रसगुल्ले निगल चुका हूं।

हट्टु सुबह से भरपेट खाता है, इसमें कोई संदेह नहीं। मगर वह भी परवाल या पानी भात, रसगुल्ले कहां से आए, यह अगर उससे पूछा गया होता तो वह सहज ही एक खूबसूरत बहाना बना देता। इसमें उसे महारथ हासिल है।

—कम-से-कम इन संतरों को तो खत्म करो। हम लोग एक टोकरी उठा लाए थे। और एक दो दिन में नष्ट हो जाएंगे। लिली ने अनुयोग भरे स्वर में कहा।

हम लोग भी काफी आग्रह के साथ उसकी बात मान लिए। बाद के साठ साल की जिंदगी में बिस्किट और संतरों का उस जैसे स्वाद का कभी अनुभव नहीं हुआ।

—तुम लोग चाय पीते हो ? लिली ने पूछा।

—नहीं, मैंने कहा।

—नहीं, हाड़ु ने भी कहा।

—हां, पीता हूं, हट्टु बोला—वैसे न होने पर भी चलेगा। कुछ समय बाद मुझे और हाड़ु को हतवाक् करके लिली और हट्टु ने चाय पी। हड़ु की जुबान और होंठ जल गए, यह मैं जानता हूं फिर भी उसने अपने आपको

संभाले रखा।

हमारे इस अचरज होने का भी कारण था—क्योंकि हम जानते थे कि चाय सिर्फ खाने-पीने वाले अभिजात वर्गों की बड़े-बूढ़ों की विलास सूची की चीज थी। वह भी शराब की तरह। ऐसा हमारा ख्याल था। उस जमाने में हमारे गांव में कोई चाय नहीं पीता था। गांव के निकटतम चाय पीने वाला हमारे गांव से डेढ़ कोस दूर पूर्वकथित डाकखाना-डॉक्टर-खाना वाला उस आधुनिकतर गांव में रहता था। वह बचपन से ही शहर में नौकरी करते थे। वह गांव में लौटे तो चाय की आदत लेकर ही लौटे। उस इलाके के नटवर नामधारी दूसरे लोगों से उनकी अलग पहचान बनाने लिए लोग उनको चाय पीने वाला नटवर कहा करते थे।

उस चायवाला नटवरजी की एक मात्र बेटी की शादी हमारे गांव में हुई थी। उन करुणदर्शना महिला के कोई बालबच्चा नहीं हुआ। इसके बारे में हमारी माताऐं कहा करती थीं—नटवर बचपन से ही ज्यादा चाय पीने की वजह से उनकी बेटी भी बच्चे धारण करने से रही। मैंने बहुत बार ऐसी बातें सुना है।

मगर बाद में महिला के स्वामी ने दो बार ब्याह किया। मगर फिर भी कोई बच्चा नहीं हुआ। इसी से चायवाला नटवर और उनकी बेटी का अपयश धीरे-धीरे कम होने लगा। लोगों ने उनके लिए यह कहना भी छोड़ दिया।

शाम के समय फिर से आने को कहकर हम लोगों ने विदा ली। रास्ते पर कुछ समय चुपचाप चलते रहने के बाद नदी के किनारे अचानक हट्टु छंदहीन, तालहीन-सा डगमगाता नजर आया। हमारे गांव में किसी ने कभी शराब नहीं पी थी, मगर डेढ़ कोस की दूरी के उस आधुनिकतर गांव में एक बार किसी नौटंकी में हमने एक आदमी को शराबी का अभिनय करते देखा था। हट्टु की चाल, फिर उसके परस्पर असंबंधित बातें उस अभिनय के साथ मिल जाने से हमें समझते देर नहीं लगा कि चाय अपना काम दिखाना शुरू कर चुकी है।

हाट्टु और मैं चिंतित हो बरगद के नीचे बैठे रहे। हट्टु शराबी जैसा अनाप-शनाप बकवास करने लगा। जो भी मन में आया गाने लगा।

नाचने-कूदने लगा। हमारे बाल पकड़ कर झिंझोड़ने लगा। हमको सब कुछ सहना पड़ा। हमारे बीच अकेले शराबी होने का अभिज्ञता हासिल की थी। इसी से हमको झिझक के साथ गर्व का भी अनुभव हो रहा था, इसमें कोई शक नहीं।

देर तक मतवाले बनने के बाद हट्टु बालू पर सो गया। बहुत समय सोच-विचार करने के नाद हम लोगों ने नदी से अंजुली भर पानी लाकर उसके मुंह पर छींटे लगाए। उसने आंखें खोल दी और नशा उतर जाने का भाव दिखाकर मुस्काता हुआ घर लौटा।

चार

पूर्वकथित आधुनिकतर गांव की मिडिल स्कूल हॉस्टल की शिक्षित अन्तेवासियों के इतवार के दिनों में लूडो नामक खेल में डूबने की खबर हम सुन चुके थे। उस दिन सांझ ढले तक हम लिली के निकट बैठे लूडो खेल सीखते रहे थे। सब के सब कमीज पहन, उसे इनसाईड करके गए थे। हमें लिली के घर जाता जानकर हमारी माताओं ने गीले कपड़े से हमारे मुंह पोंछ सिर में कंघा कर दिया था।

लिली उस दिन सलवार कमीज पहने, ओढ़नी ओढ़े हुए थी। हमने पहले कभी ऐसे लिबास में नहीं देखा था।

बीच में जगतबंधु एक बार अंदर आकर चुपचाप हमें देखकर मुस्कराते हुए चले गए थे। हममें सिर्फ हट्टु ने उन्हें प्रणाम किया था। वह काफी उपस्थित बुद्धि है।

दुमंजिले के झरोखे से हमारी नदी तथा उसकी दूसरी ओर के खेत की कतारें सूर्यास्त के समय काफी सुंदर दिखाई दे रही थीं। हाड़ु की यह बात सुन ली ने कहा—तुम बड़े होकर जरूर कोई कवि या लेखक बनोगे। तुम्हारे दोनों कान बड़े-बड़े हैं, यह भावुक होने का लक्षण है।

हाड़ू के कान बड़े हैं, इससे उसे हमारे स्कूल में काफी शर्मिंदा होना पड़ता था। उससे अगर मामूली सी भी गलती हो जाती तो स्वतः ही हर एक मास्टरों के हाथ उसके कान ऐंठने को बढ़ जाते। आज दूसरी वजह से उसके चेहरे में लाली छा गई।

शाम के बाद हमने चूड़ा का मुजिया और संदेश खाये। लिली के साथ हट्टु ने फिर चाय पी।

—चलो, नदी के किनारे घूमते हैं—लिली ने प्रस्ताव रखा।

—चलो, चलो! हाड़ु और मैंने समर्थन किया। हमें लिली के साथ घूमते हुए गांव के दूसरे लड़के-लड़कियां देखें, हम तहेदिल से यही चाहते थे।

मगर हट्टु ने इस प्रस्ताव को तोड़ने के लिए बार-बार पहल की। रास्तों पर काटने वाले कुत्तों का घूमना से लेकर शाम को हवा खोरी के लिए निकले सायों का रास्ते पर जमघट होने तक की बहुत सी संभाव्य खतरे की बात बता डाली। मगर लिली किसी न किसी तरकीब से उसके हर एक खतरे को तुच्छ बना डालती। आखिर में हट्टु हमारे गांव में रहने वाले कुछेक बहुत ही जाने पहचाने भूतप्रेतों के प्रसंग ले बैठा। वह जो बालविधवा ने जो अवैध बच्चे को जन्म दिया था—जिसे बच्चे के साथ-साथ अज्ञात असामाजिक तत्वों ने मार डाला था—चांदनी रातों में वह अपने बच्चे को गोद में उठाकर हलदीपानी में नहलाया करती है। उसका वह धुंधला-सा दृश्य—जिसे किसी सद्यसंतानवती मां को नहीं देखना चाहिए—अगर देख ले तो बच्चे की मृत्यु सुनिश्चित है; फिर कुछ साल पहले गांव का सबसे बड़ा कंजूस बूढ़ा, जिसका अपने गाड़े हुए रुपयों का गागर न खोज पाने से दिमाग फिर गया था, वह तमाम बाड़ी में लकड़ी ठक्-ठक् करते उसे ढूंढ़ता, ऐसे ही ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक दिन उसकी मृत्यु हो गई, फिर मृत्यु के उपरांत भी कभी-कभार लड़की ठुकठुकाते रात में गड़ी दौलत खोदता रहता है, वगैरह-वगैरह बहुत-सी बातें वह बताने लगा।

—शहर में भूत रहते हैं? मैंने पूछा।

लिली कुछ चिंतित-सी हो कहने लगी—हां, रहते तो हैं जरूर, मगर तुम्हारे यहां जितने हैं उतने नहीं। बहुत ही कम। मुझे केवल एक घटना

याद है। एक बार हमारे शहर के बाहर एक मेला लगा था। एक फोटोग्राफर लोगों की तस्वीर उतार कर कुछ ही समय में दे देता था। एक सज्जन भी अपनी छोटी-सी, नातिनी को लेकर तस्वीर खिंचवाने आए। वह नातिनी को गोद में लेकर कुर्सी पर बैठे। फोटो लेने के बाद फोटोग्राफर ने कहा — आपकी तथा इस बच्ची की तस्वीर बहुत ही सुंदर खिची है। मगर आपके साथ में जो महिला आई थीं, उनकी तस्वीर कैसे धुंधला हो गई समझ में ही नहीं आता। सज्जन चौंककर बोले—महिला, कैसी महिला, क्या बात करते हैं आप, मेरे साथ तो कोई महिला बिलकुल ही नहीं आई थी। तो आपके पीछे कुर्सी पकड़े कौन खड़ी थी? विस्मित हो फोटोग्राफर ने सज्जन को वह फोटो दिखाने लगा। उनके पीछे एक नारी-मूर्ति को खड़े देख सज्जन के पैरों तले जमीन खिसक गई। उन्होंने पहचाना, वह उनकी मृत बहू थी, यानी कि मेरी मां। और वह सज्जन हैं मेरे दादाजी।

लिली की आंखें डबडबा गईं। हम सब स्तंभित हो बैठे थे। एक लंबी सांस लेकर लिली फिर कहने लगी—काश, मैंने भी मां की वह तस्वीर देखी होती। मगर जिस समय मैंने होश संभाला, उस वक्त वह धुंधली-सी तस्वीर मिट चुकी थी।

कुछ समय मौन रहने के बाद लिली ने पूछा—अच्छा तो यहां इतने सारे भूतप्रेत रहते हैं। किसी एक को मुझे दिखाते नहीं? वह शायद बोझिल वातावरण को सहज कर डालने के लिए यह बात कह रही थी।

बातों ही बातों में हम उस पहाड़ी चोटी की बहुत-सी रहस्यमय बातें उसे बताने लगे। उस समय सांझ का झुटपुटा बीत चुका था। चारों ओर अंधकार गहराने लगा था। झरोखे से पहाड़ी की चोटी क्षितिज में डोलता एक धुंधला दीपक जैसी दिखाई पड़ रही थी, उसके बाद घने जंगल। उसमें भूत, प्रेत, यक्ष, दानव इत्यादि बहुत से अशरीरियों की स्थिति सुनिश्चित थी, इसमें तब किसी को भी संदेह की कोई गुंजाइश न थी।

हम उस ओर देखते हुए देर तक बैठे रहे, क्रमशः आकाश पर कुछ एक हल्के तारे चमकने लगे। हवा में लिली का दुपट्टा उड़ रहा था। अचानक वह खड़ी हो गई, बोली चलो, हम उस पहाड़ी पर चलते हैं।

उसकी इस दुःसाहसिक अभिलाषा ने हमें स्तब्ध कर दिया। पहाड़ी की

चोटी के लिए लिली एक आकर्षण का अनुभव कर रही थी, वह मैं समझ रहा था। हम लोगों ने समझाया—इस समय वहां जाना सिर्फ असंगत ही नहीं असंभव भी है। अगला दिन दोपहर के बाद निकल जाने से शाम से पहले वापस आ सकते हैं।

—ठीक है, तुम अब घर जाओ। आज मैं गांव में नहीं चलूंगी। लिली ने हमारी ओर बगैर देखे कह दिया। वह शायद हमसे नाराज हो गई थी।

हम लोग भी बगैर कुछ कहे नीचे को उतर आए। न जाने मुझे क्यों लग रहा था कि लिली हमें बिदा करने के बाद अकेली सिसक-सिसक कर रोना चाहती थी।

हम लोग जब सड़क पर आए तो हट्टु डगमगाने लगा। उस समय हमारा मन काफी उदास और भारी था। उस पर हट्टु की यह छलना हमें और भी असह्य लगने लगी—यह सब झूठ है। मैं चीखकर बोला। हट्टु ने चौंककर डगमगाना बंद कर दिया।

—चाय पीने से नशा होने की बात झूठ है। सुबह तो देखते-देखते हुई थी और अभी दो घंटे तक क्यों नहीं हो रही थी ? तू इस तरह ढोंग करना चाहता था, इससे लिली को साथ लाना नहीं चाहता था। तू एक-दम झूठा है। नशा होता तो लिली बिल्कुल चाय न पीती। मैंने सुना दिया।

मेरी चीख सुनकर पलभर के लिए हट्टु जो डगमगाया, वह घबराहट से। घबराहट का कारण है, इतने दिनों से उसका जो निरंकुश नेतृत्व, झूठ की प्रवीणता अचानक मिट्टी में मिला जा रहा है, उसका अनुभव।

—चुप करो। वह किसी तरह अपने आपको रोकते हुए बोला—नशा होने पर भी क्या लिली चाय न पीती ! तुमने लिली को अपनी तरह बौड़म समझ रखा है ? वह शहर की लड़की है। पता है, वह शराब पीती है। हट्टु ने अपने आपको जाहिर किया।

—असंभव, यह हो ही नहीं सकता। हाड़ु और मैं चीखे—ठीक है, कल हम उससे पूछते हैं।

—पूछोगे तो, तुम्हारी हत्या कर दी जाएगी। मौत के घाट उतार

दूंगा। हट्टु नाटकीय भाव से बोला।

—अरे, तेरा नशा कहां गया ? मैंने पूछा।

—जाएगा कहां, ये लो, कहता हुआ उसने फिर से डगमगाना शुरू कर दिया।

हम लोगों ने उसे उसी तरह डगमगाता छोड़ अपने-अपने घर की राह ली।

पांच

सुबह से ही मैं एक अजीब सिहरन महसूस कर रहा था। परिणत वयः में अचानक कभी-कभार हवा के एक झोंके के स्पर्श में या कि किसी फूल गुच्छे की महक में अकारण ही बीते बहारों की याद के चेतना को झकझोर देने से—पलभर के लिए कैसा लगता है, उस दिन वैसे ही मैं अनुभव करता रहा था। सुबह से ही उस जैसे प्रफुल्ल आलोड़न में मैं मग्न था।

इससे पूर्व पहाड़ी पर जाने को एक दो बार मौका मिला था। वह भी बड़े लोगों के साथ, उनकी देखरेख में या उनकी मेहरबानी से, बिना किसी मुरबियों के, अपनी हिम्मत, अपना कौतूहल तथा खुशी की प्रेरणा से उस निषिद्ध अंचल में जाने की तैयारी हमारे अपने-अपने जीवन के क्रम में एक बहुत बड़ा हादसा था। लिली की साहचर्य अगर न मिला होता तो हम कभी भी ऐसा कदम उठा न पाए होते।

हट्टु के व्यवहार में कल शाम के विवाद-वितर्क की कुछ भी झलक न रही थी। एक खासतौर की विस्मरण शक्ति ही शायद नेताई प्रतिभा का सहजात गुण है।

हमारे अभियान के बारे में किसी को बगैर कुछ बताए ही हम लोग चल पड़े। यहां तक की लिली ने भी जगतबंधु को सिर्फ इतना ही बताया —दादाजा, मैं इन लोगों के साथ जरा घूमने जा रही हूं। लौटते हुए कुछ

देर होगी । तुम मगर घबराना मत ।

—घबराहट तो होगी ही—फिर भी तुम लोग जा सकते हो। दादाजी ने हंसते हुए कहा था ।

एक थैले में बिस्कुट और बाकी बचे कुछ संतरे लेकर हम लोग निकल पड़े । उस समय दोपहर हो चुकी थी । गांव की सड़क पर लोगों की कोई आवाज ही न थी । हम लोग जल्द ही गांव से बाहर निकलकर खेतों से एक सीधी राह में चल पड़े ।

शहर के अच्छे रास्तों में चलने की आदी लिली को हमारे साथ कदम मिलाकर चलने में जरूर दिक्कत हुई होगी—फिर भी वह अविचलित भाव से उसे सह लेती थी । एक बार के लिए भी नानूकर नहीं किया । यहां तक कि पहाड़ी पर चढ़ते समय भी ।

बीच में लिली ने एक पत्थर पर बैठकर संतरे छीलकर हमें दिए तथा खुद खाए थे । हमें राबिनसन क्रुशो की कहानी भी सुनाई । वैसी कहानी हम लोगों ने कभी नहीं सुनी थी । इसीसे हट्टु ने भी अपनी वाचालता भूल कर काफी दिलचस्पी के साथ कहानी सुनी । उसके उपरांत लिली ने और भी बहुत-सी कहानियां सुनाईं । वे कहानियां थीं दुःसाहसिक अभियान, आविष्कार तथा रहस्य की कहानियां ।

पहाड़ी हवा धीरे-धीरे चल रही थी, हमें पता न था की कभी-कभार मौका पाकर समय कैसे जल्दबाजी से निकल जाता है । जब हम चोटी पर पहुंचे वो शाम होने ही वाली थी ।

मगर लगता था, सूर्य जैसे कुछ आतंकित सा दिखाई दे रहा है । चारों ओर से मेघ घिरे आ रहे थे । अपना सीमित और धीरे-धीरे बुझता हुआ आलोक ले सूरज अन्धकार के उस बढ़ते तगड़े हमले को रोक पाने में असमर्थ हो शायद वैसा लग रहा था ।

हम लोग जब गांव से निकले थे तो उस समय आकाश पर छुटपुट मेघ घिरे थे । मगर उसे देख हम अपने अभियान के उछाह को कैसे रोक सकते थे ।

—चलो, लौट चलें—मैंने कहा । हाट्टु भी मुझसे सहमत था । मगर हट्टु गरज उठा—डरपोक, हिजड़े कहीं के । लौट चलोगे तो लिली

देखेगी क्या खाक ? संतरे खाए की नहीं चलो लौट चलें। तो फिर आए क्यों थे ?

हमें समझते देर नहीं लगी कि वह कल शाम वाली बात का बदला ले रहा है।

लिली मुश्किल में पड़ गई। हमारी बातों की यौक्तिकता को वह जरूर समझ रही थी, मगर हट्टु उसके नाम का सहारा बना हमारे प्रस्ताव का विरोध कर रहा था। फिर उसका कौतूहल भी अभी बाकी था। इसी से वह बीच का मार्ग चुनती हुई बोली—ठीक है, लौट चलेंगे जरूर। मगर कुछ दूर जंगल में जाने के बाद ही।

मुश्किल से हमें पन्द्रह मिनट हुए होंगे कि सनसाती हुई ठंडी हवा चलने लगी। इस अचानक हवा से हम ठिठुरने लगे। झाड़-पत्ते हजारों स्वरों से हमें लौट जाने की ताकीद कर रहे थे। हम सब एक बड़े-से पेड़ के नीचे खड़े हो गए।

—तुम लोग डर तो नहीं रहे हो ? यह जल्द ही चला जाएगा। हट्टु बोला। मानो हवा-तूफान-वर्षा के ऊपर उसका असाधारण आबदार रहा हो।

बिजली चमकने लगी। बादल गड़गड़ाने लगे। फिर कुछ पल बाद मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। वर्षा में हमारी आंखों के सामने से कुछ दूरी पर दिखाई देने वाले खेत, गांव अदृश्य हो गए। गांव के ओझल होते ही हमें लगा कि हमारा जो सबसे बड़ा सहारा था, वह भी टूट गया। तूफानी हवा हमें इस बुरी तरह धकेल रही थी जैसे हम तमाम दुनियां से फिसलकर गुब्बारे की तरह आकाश पर उड़ रहे हों।

अचानक लिली की आवाज सुनाई दी—उसकी आवाज में इस तरह का असहायताबोध इससे पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था—ऐनक मेरी। ऐनक खो गई।

लिली पेड़ का सहारा छोड़ कुछ दूर पर ऐनक को टटोलती हुई दिखाई दी। फिर तेज बारिस में कुछ भी देख पाना असंभव हो गया।

—अब नीचे भाग चलो, सीधी ढलान की ओर से। हट्टु चिल्लाया था। पास में ही ढलान का रास्ता था। उस राह ऊपर चढ़ना बहुत ही

कठिन था, मगर उतरना सहज। हट्टु उस मार्ग से अपेक्षतया ज्यादह परिचित था। हम उसके पीछे पीछे तेजी से उतरने लगे।

—लिली, तुम्हारी ऐनक रहने दो, चलो भाग चलें। मैंने कहा था।

—मगर बगैर ऐनक की मैं अंधी जैसी हूं। लिली की यह चीख मैंने सुनी थी। मैंने चिल्लाकर कहा था—मेरा हाथ पकड़ो। लिली ने हाथ थाम लिया था।

हम लोग हट्टु अनुसरण करते हुए ढलान के कगार पर आए। वहां से एक हाथ से उतरना असंभव था। दोनों हाथों से मार्ग पौधे पकड़ते हुए उतरना था।

—हमारे पीछे-पीछे सावधानी से आओ। हम बोले, ढलान में उतरने लगे। ढेरों ठंडे मेघ हमारे शरीर से टकरा टकरा कर हमें जैसे काबू करने लगे। एक दूसरे से बिछुड़, भयानक तूफान से झिझड़ाते पौधों के चाबुक खा, हाथ, घुटने तुड़वाते हम उतर रहे थे।

जब नीचे पहुंचे तो बारिस में ही हाड़ु ने एक बार टटोलते हुए मुझे पाकर पूछा—लिली कहां है?

मैं कोई जवाब दे नहीं सका। याद भी जैसे ठंड में ठिठुर कर जड़ हो गयी थी। फिर से एक बार बिजली और गड़गड़ाहट जोरों से होने लगी थी। बिजली की चमक से लगता था जैसे भयानक काले भूत हमें तीनों ओर से घेरे बढ़े आ रहे हैं, बड़ेबड़े दांत निपोर खिलखिलाकर रोंगटे खड़े कर देने वाली हंसी हंस रहे हैं, उनकी साजिश से देखते ही देखते तमाम जंगल पहाड़ी हमारे ऊपर टूट पड़ेंगे।

हम घर की ओर बेतहाशा दौड़ने लगे।

छह

पिता-माता के सवालों के झड़ी से घिरा मैं चुपचाप बिस्तरे पर ओढ़

आढ़कर बैठा था। मुझे पीने के लिए गर्म दूध दिया गया था…

हमारे बरामदे पर टार्च की रौशनी दिखाई दी। बर्साती पहने जगत-बंधु जी आए थे। वारिश थम चुकी थी।

—लिली कहां है? उन्होंने पूछा। उनके पीछे हट्टु हाड़ु और उनके पिता भी थे। जगतबंधु जी उन्हें लेकर आए थे। उन्होंने क्या बताया था मुझे पता नहीं। हाड़ु की नजरों में मेरी नजरें पड़ते ही हम चिल्लाकर रोने लगे। हट्टु की आंखें भी छलछला आईं। वह सिसकते हुए नाक पोंछने लगा।

जगतबंधुजी ने हमसे कोई विशेष पूछताछ नहीं की। बारिस थम चुकी थी। गांव से करीब दस आदमी छः-सात लालटेन तथा हमें साथ लेकर पहाड़ी की ओर चले दो युवक उनके घर में पहरेदारी के लिए रुके रहे। अगर लिली आ जाए तो उनमें से एक आदमी को दौड़कर हमें खबर देनी थी।

मैं, हट्टु और हाड़ु, जो कुछ समय पूर्व दुर्गम बीहड़ मार्गों के यात्री थे। हम तीन मध्यवयस्क आदमियों के कन्धे पर बैठकर जा रहे थे। हममें और चलने की ताकत बची नहीं थी।

पहाड़ी पर हम जहां घूमे थे। वहां खोजबीन हुई। जगतबंधु जी ने जोर से लिली का नाम तीन-चार बार पुकारा। उनकी आवाज ज्यादह से ज्यादह व्याकुल होकर आखिर में टूट गयी।

उसकी बाद की चुप्पी बहुत ही भयानक थी। सिर्फ पेड़-बेलों में जमी पानी टपटप टपकने की आवाज सुनाई दे रही थी। पास ही कहीं सियार जैसा कोई बनैला जानवर विकट आर्तनाद कर रहा था।

ढलान की मार्ग से धीरे-धीरे सब नीचे उतर आए। हम तीनों भी अबकी बार कंधों से उतर कर चल रहे थे। हर एक झाड़ी और अंधेरा स्थान ढूंढ़ा जा रहा था।

उतार के रास्ते पर ढलान से न जाने कब शायद पहाड़ का एक हिस्सा टूटकर नीचे गिरा था। नीचे खेतों तक खाई थी। जगतबंधु ने नीचे खाई पर टार्च की रोशनी फेंकी। उनके कांपते हाथों से अचानक टार्च छूटकर नीचे गहरी खाई में जा गिरा था।

नीचे गिरने पर भी टार्च बुझी न थी। उस छोटी सी रोशनी के दायरे में लिली का छोटा सा चेहरा नजर आ रहा था—एकदम निस्पंद, निश्चल।

जगतबंधुजी वहीं पर ही चकराकर बैठ गए थे। दूसरे लोग जब नीचे पहुंचे तो और कुछ लोग उन्हें पकड़कर नीचे ले गए। वह जाकर अपनी बिटिया रानी को परखने लगे—यह शायद उनकी डाक्टरी जीवन की आखिरी परख थी।

उसके बाद भी मामूली वर्षा हुई थी। तमाम बत्तियां गुल हो गई थीं। जंगल से आने वाला सियार का आर्तनाद जैसे विकट ही पास आता गया था। मगर जगतबंधुज़ी लिली को गोद में लिए वैसे ही निश्चल बैठे हुए थे। फिर किसी ने भी कोई बात कहने की हिम्मत नहीं की थी।

अगला दिन वहीं पर ही लीली को समाधि दी गई थी। उसके बाद जगतबंधु ने उस स्थान को छोड़ दिया था, गांव को भी।

पचास वर्ष पहले भी उन्होंने हमारे गांव को एक बार छोड़ा था। मगर उस दिन उनके दिल में विद्रोह की प्रेरणा थी, एक बेपरवाह, संस्कार विध्वंशक जिंदगी का सपना लिए वह गांव छोड़ गए।

दूर पर खड़े हम जगतबंधु जी को बैलगाड़ी पर सवार होते देखते रहे थे। बाद की उम्र में मैंने जब कभी भी भगवान से प्रार्थना की है, हर बार प्रायः यही कहा है—हे भगवान! आदमी का उस जैसा अकेलापन जैसे और कभी जीवन में देखने को न मिले।

सात

परिकथाओं का संकलन न जाने कब से मेरे गोद में खुला हुआ पड़ा था। समयज्ञान भी लुप्त हो चुका था। मैं लिली के खयालो में खोया था। फिर से पढ़ने का मनोनिवेश करने लगा।

अरण्य सीमांत की पहाड़ी पर एक घायल दानव रहता था। साल में एक बार राज्य के लोग उसे यातना पहुंचाने को आया करते थे। दानव गुफा के अन्दर पड़ा रहता था। लोग आग के गोले फेंक फेंक कर उसे बाहर निकालने की कोशिश करते। पर वह बाहर निकलता न था।

क्रोध में बिफर कर गरजता रहता। तमाम दिन इस तरह के उत्सव में मस्त रहने के बाद थक कर शाम को लोग वापस चले जाते थे।

एक दिन उस समावेश से आकर्षित हो पूर्वकथित कन्या पहाड़ी के ऊपर चली गई थी। विषर्णचित्त से दूर खड़ी बेचारे दानव के प्रति हो रहे अत्याचार को देख रही थी।

फिर जब तमाम लोग चले गए तो भी वह अकेली वैसे ही खड़ी रही थी।

घायल दानव आधी रात को गुफा से बाहर निकला। पूनम की रात थी। लड़की की सहानुभूति भरी नजरों से उसे नया जीवन मिला था। उसके संस्पर्श में आकर अभिशापमुक्त हो क्रमशः वह एक सुन्दर कुमार में रूपांतरित हुआ था। उसके बाद ही दोनों दिगंत के रहस्य के भीतर खो गए थे।

अस्वाभविक परिकथा का यही मर्म था। मगर न जाने क्यों कहानी पढ़ते समय लिली ही उस कन्या के रूप में मेरी कल्पना में बार बार उभर रही थी, यह मैं आज तक भी जान नहीं पाया।

उस दिन देर तक अस्थिर हो चहलकदमी करने के उपरान्त दोपहर के बाद गाड़ी लेकर निकल पड़ा। चौड़े सपाट सड़क पर "सुप्रभात प्रकाशन" के दफ्तर के सामने मैंने गाड़ी रोकी। उस समय दफ्तर बंद होने को था। सफेद बाज जैसा दिखाई देने वाले मेरी उम्र की एक वृद्ध बाहर निकल रहा था। उनके हैंड बैग में मैनेजर का बिल्ला लगा था।

—आपकी प्रकाशित इस पुस्तक के लेखक से एक बार मिलना चाहता हूं। मैंने कहा।

—कौन है वह लेखक? धमकी देने जैसे तेवर में मैनेजर ने दहाड़ा।

—नाम तो लिखा है "प्रजापति"—गुप्तनाम अवश्य मैं बोला।

—समझ में आई तो? अगर आप जैसे हर कोई, जिसके मन में

आया वह अगर उनसे मिलपाने की बात रही होती तो वह आखिर अपना गुप्तनाम क्यों रखते ? मैनेजर ने जिरह की।

—ओह, यह बात तो मैंने सोची ही नहीं थी। मैंने सफाई पेश की।

—नहीं सोचा था न ? हुंह्...मैनेजर मुझे खड़े खड़े छोड़ चल दिए।

कार में बैठने जा रहा था कि एक लड़की आगे से आ विनीत स्वर में पूछा—आप किस ओर जा रहे हैं ?

—लेक की तरफ। मैंने उत्तर दिया।

—क्या मेहरबानी करके आप मुझे वहां तक लिफ्ट दे सकते हैं ? बहुत ही जरूरी काम है, इस समय टैक्सी का मिलना भी आसान नहीं है। लड़की ने मिन्नत की।

—खुशी से ! मैंने स्वागत किया। बाद में पता चला कि वह उसी संस्थान में काम करती है।

तरुणी थी काफी आधुनिक विचार रखने वाली। पीछे बैठने के बदले वह अगली सीट पर बैठी। हालांकि मेरा उम्र ढल चुका था। मैं बूढ़ा हो चुका था।

—मैं आपको 'प्रजापति जी' का घर दिखा दूंगी। हमारे मैनेजर एक अजीब आदमी हैं। देखिए न किसी एक गुण मुग्ध पाठक को पाकर कौन लेखक भला खुश नहीं होगा ?— तरुणी ने कहा।

लेक के पास ही प्रजापति जी का छोटा सा मकान। तरुणी उतर गई थी। उसके बाद मकान ढूंढ़ कर प्रजापति जी को पा जाने में मुझे कतई मेहनत करनी नहीं पड़ी थी।

हाथ मिलाते मिलाते मैंने पूछा—कैसे हो, हाड़ु, नवीन ?

प्रजापति जी अचरज से मुझे पूरा एक मिनट घूरते रहे, फिर मुझसे लिपट गए।

—न जाने क्यों, कह नहीं सकता, मगर मुझे लगता था इस किताब के लेखक को ढूंढ़ पाने के बीच बहुत ही कुछ आन्तरिक चीज अविष्कार करने जा रहा हूं।—मैं कहते कहते खो गया था कहीं।

पचास साल पहले, घटनाक्रम में एक प्राइवेट जहाजरानी कंपनी में नौकरी करके मैं देश से बाहर चला गया था। इस बीच देश से कोई ज्यादा

सम्पर्क न था। गांव के साथ तो सम्पर्क बिलकुल ही टूट गया था। अवसर लेने के बाद जब यह सुयोग आया, तब गांव के लिए दिल में कोई आग्रह न रहा था। हट्टू, हाड़ु किसी की भी कोई खबर रख नहीं पाया था। अब समझा, हाड़ु एक संपादक तथा साहित्यिक बना था। मगर हट्टू के बारे में वह सिर्फ इतना ही बता पाया था कि कालेज में पढ़ते समय हट्टू स्वातन्त्रता सेनानी बन किसी संत्रासवादी दल में योग देकर कुछ वर्ष जेल से भी हो आया था। जब से खलास हुआ तब से लापता रहा है।

आधी रात तक मैं और हाड़ु बातचीत करते रहे थे। अगला दिन रविवार था।हाड़ु से सुना था, हमारे गांव की ओर आजकल शायद गाड़ी भी जाती थी। इससे बोला—चलो न, अबकी बार उस पहाड़ी की ओर से घूम-घामकर आएं।

हम दोनों जब पहाड़ी की तलहटी में पहुंचे, उस समय झुटपुटा हो चुका था। पहाड़ी के नीचे एक सुन्दर कुटिया थी। उसके सामने बहुत ही बड़ा जन समावेश। सुना, कुछ दिनहुए वहां एक संन्यासी आकर पधारे हैं। उन्हें ध्यानबल से यह ज्ञान हो गया था कि कभी उस पहाड़ी पर एक देवी का आविर्भाव हुआ था। उनकी स्मृति की आराधना के लिए उन्होंने गांववालों से सहयोग चाही थीं। लोगों ने भी उन्हें भरपूर सहायता पहूंचाने में कोताही नहीं की थी।

जिस स्थान पर मन्दिर बनवाने के लिए संन्यासी ने चाहा था, हमने अचरज के साथ गौर किया, यह वही खाई थी जहां पर साठ वर्ष पहले लिली ने शरीर त्याग किया था।

हम लोगों ने कुछ दूरी पर से संन्यासी जी को बार बार ताकते हुए उस स्थान का परित्याग किया। मैं काफी धीरे धीरे गाड़ी चला रहा था। खुले मैदान की, ताजी हवा बहुत दिनों के बाद जी भरकर फेफड़ों के अन्दर भरे जा रहा था।

—गाड़ी रोको—अचानक हाड़ु बोल पड़ा था।

—क्यों—क्या हुआ ? मैं गाड़ी की स्पीड कम करते हुए बोला।

—अरे, वही संन्यासी की बात। हमें उसे जहां तक गौर करना चाहिए वह तो किया नहीं, नवीन ने उत्तेजित कंठ से कहा।

मैं हंसता हुआ बोला, हाड़ु मान लो की तुम्हारा अनुमान सत्य है—संन्यासी हट्टु के सिवा और कोई नहीं है। तो फिर—उसके बाद। हालांकि मुझे कोई भी इतना सहज ढंग से पहचान नहीं पाएगा। मगर तुझे तो लोग जानते हैं हम अगर हवु के साथ बातचीत शुरू कर दें और उसका असली परिचय मालूम हो जाए, तब उसे खुद अटपटा नहीं लगेगा ? बेचारा नेता बनते बनते संन्यासी बन गया— सोचो।

हाड़ु चुपचाप बैठा रहा।

मैंने गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी। पहाड़ी की चोटी धीरे-धीरे पीछे छूटती जा रही थी। ज्यादा से ज्यादा धुंधला नजर आ रहा था।

—हट्टु शायद अपना ढंग से प्रायश्चित कर रहा है। तूने भी खुद अपनी रीति से लिली को अपनी श्रद्धांजली दी है परिकथा की कन्या के रूप में उसे चित्रण कर के। मगर मैं ? इतना कहकर मैं रो पड़ा।

तू ? काश, तेरी तरह मैं कभी भी रो पाया होता। सत्तर साल की उम्र में आंसू बहाना आसान नहीं होती, पता है ?

□□□